SWAMI RAMTIRTH
KE
UPDESH

R.T. Lib

स्वामी रामतीर्थ

के

लेख व उपदेश

●

चौदहवाँ भाग

(संशोधित संस्करण)

●

रामवर्षा भाग-२ (भजनावली)

●

प्रकाशक

रामतीर्थ प्रतिष्ठान

१४, मारवाड़ी गली

लखनऊ

मूल्य ६.२५

ॐ

रामवर्षा

भाग २

प्रकाशक

श्रीरामतीर्थ प्रतिष्ठान, लखनऊ

(रजिस्टर्ड व स्थापित १९१९)

१९७७

छठवां संस्करण]

मूल्य रु० ६.२५

छठे संस्करण पर दो शब्द

संतवाणी तथा सत्संग की जो महिमा हमारे धर्म ग्रन्थों में वर्णित की गई है उसे हम सब जानते हैं और समझते हैं। यह हमारी परम्परा रही है कि अपनी दिनचर्या में संतो की पवित्र वाणी का पठन-पाठन अवश्य किया करें। और सप्ताह में दो एक दिन सामूहिक सत्संग में सम्मिलित होकर अपने जीवन को सार्थक बनायें।

स्वामी राम अपने प्रारम्भिक जीवन में भगवान कृष्ण के अनन्य भक्त थे। उन्होंने अनेक संतों की वाणी का चयन अपनी नोट-बुक में किया था। राम वर्षा में उनमें से अनेकों पद तथा स्वामी जी द्वारा रचित भजन तथा कवितायें सम्मिलित हैं। इनके पठन-पाठन से जो आनन्द की अनुभूति होती है उसे शब्दों द्वारा व्यक्त करना असम्भव है। इसे वही लोग समझ सकते हैं जो इसके नित्य अभ्यासी है।

राम वर्षा भाग–२ का नया संस्करण पाठकों की सेवा में प्रस्तुत है। पिछले संस्करण में जो त्रुटियाँ मिलीं उन्हें इस संस्करण में यथा सम्भव सुधारने का प्रयत्न किया गया है। काग़ज़ छपाई तथा श्रम इत्यादि के व्यय में वृद्धि के कारण मूल्य बढ़ाना पड़ा है जिसके लिये करबद्ध क्षमा याचना वांछित है। आशा है, रामभक्त इस कठिनाई को ध्यान में रखते हुये स्वीकृति प्रदान करेंगे।

राम वर्षा घर-घर में होनी चाहिये तथा इसका पठन-पाठन मन-चित्त से नित्य होने पर ही संतप्त हृदयों को शान्ति मिलेगी और निजानंद की समपद के अधिकारी हो सकेगें।

२६ जून १९७७
रामतीर्थ प्रतिष्ठान
लखनऊ

राम कृष्ण लाल
स० सचिव

पञ्चम संस्करण की भूमिका

रामवर्षा का दूसरा भाग भी राम प्रेमियों की सेवा में अर्पित है। प्रस्तुत पुस्तक में जो स्वामी राम के भजन पहले भाग में नहीं छपे थे वे प्रायः सभी प्रकाशित किये गये हैं। कुछेक भजन भले ही अनावश्यक समझ कर नहीं छापे गये हैं।

हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, सिक्ख, जैन सभी धर्मों में प्रार्थना, प्रेयर, नमाज़ पर बहुत जोर दिया गया हैं। हिन्दू जगने के पश्चात और सोने से पूर्व दिन में कई बार प्रार्थना, संध्या करते हैं। मुसलमान ४-५ बार नमाज़ पढ़ते हैं। सिक्ख अमृतबेला जपजी साहब, सुखमनीजी और सायं आसादीवार का नित्य पाठ करते हैं। हज़रत ईसा मसीह का मत है कि प्रार्थना (प्रेयर) से सभी असम्भव काम सम्भव हो जाते हैं। जब हम विपत्ति में फंस जाते हैं तो "राम, राम, हा राम" कह कर भगवान को पुकारते हैं। सभी प्रकार के ताप (आदिभौतिक, आदिदैविक और अध्यात्मिक) प्रार्थना, भजन और आराधना से दूर हो जाते हैं। चित्त से मल, विक्षेप और आवरण दूर हो जाते हैं। चित्त से मल, विक्षेप और आवरण दूर करने की सबसे उत्तम औषधि प्रार्थना है। सच्चे दिल से जो प्रार्थना की जावे, अवश्य पूरी होती है। स्वामी राम ने भक्ति की लाली और वेदान्त की मस्ती पर सैकड़ों भजन, ग़ज़ल लिख डाले हैं। वे ही इस पुस्तक में अंकित किये गये हैं। एक स्थान पर स्वामी राम ने लिखा है कि जिस प्रकार डंडे से पहले गुल्ली को ऊँचा उछालते हैं और फिर उछली हुई गुल्ली को डंडे से जितनी दूर चाहें फेंकते हैं उसी प्रकार चित्त को प्रार्थना से ऊपर उछालते हैं और जितना ऊँचा ले जाना चाहें ले जा सकते हैं। सारांश यह है कि कम से कम प्रातः और सायं के लिये दिल को चुभने वाले भजन चुन लीजिये और दोनों बेला उन्हें दोहराइये जब तक आप तल्लीन न हो जावें। शक्कर का मज़ा चखने में

है और भजन का स्वाद चित्त को प्रभु के चरणों में लगाने में है। प्रार्थना जीव और आत्मा के भेद को मिटा देती है।

इस संस्करण के प्रकाशन में विलम्ब हुआ, इसका मुझे खेद है। प्रिय पाठक-गण उदारता पूर्वक क्षमा करने की कृपा करें।

शङ्कर जयन्ती—
वैशाख शुक्ल ५, सं० २०००

विनम्र
रामेश्वर

भजन क्रम

१. तमाम दुनियाँ है खेल मेरा, मैं खेल सबको खिला रहा हूँ । १
२. शहंशाहे जहान है सायल हुआ है तू । २
३. बादशाह दुनियाँ के हैं मोहरे मेरी शतरंज के । ३
४. फेंके फ़लक को तारे सब बख्श दूंगा मैं । ५
५. अपने मज़े के ख़ातिर गुल छोड़ ही दिये जब । ६
६. यह सैर क्या है अजब अनोखा कि राम मुझ में मैं राम में हूँ । ७
७. उड़ा रहा हूँ मैं रंग भर भर, तरह तरह की यह सारी दुनियाँ । ८
८. पीता हूँ नूर हरदम जामे सुरूर पैहम । ९
९. यह डर से मेहर आ चमका, अहाहाहा अहाहाहा । ११
१०. बिठा कर आप पहलू में हमें आंखें दिखाता है । १२
११. नज़र आया है हरसू मह-जमाल अपना मुबारक हो । १४
१२. मुझ बहरे ख़ुशी की लहरों पर दुनियाँ की किश्ती रहती है । १५
१३. हुबाबे जिस्म लाखों मर मिटे पैदा हुए मुझ में । १८
१४. मैं पड़ा था पहलू में राम के, दोनों एक नींद में लेटे थे । २०
१५. जब उमड़ा दरिया उल्फ़त का हर चार तरफ आबादी है । ३१
१६. दरिया से हुबाब की है यह सदा । ३५
१७. ठंडक भरी है दिल में आनन्द बह रहा है । ३६
१८. इश्क का तूफाँ बपा है, हाजते मयख़ाना नेस्त । ३७
१९. गुल को शमीम आब गुहर और ज़र को मैं । ४०
२०. बदले है कोई आन में अब रंगे जमाना । ४०
२१. हर हर ओ३म् हर हर ओ३म् । ४२
२२. हिप हिप हुर्रे हिप हिप हुर्रे । ४३
२३. आ देख ले बहार कि कैसी बहार है । ४५
२४. नाचूं मैं नटराज रे, नाचूं मैं महाराज । ४८

छठे संस्करण पर दो शब्द

संतवाणी तथा सत्संग की जो महिमा हमारे धर्म ग्रन्थों में वर्णित की गई है उसे हम सब जानते हैं और समझते है। यह हमारी परम्परा रही है कि अपनी दिनचर्या में संतो की पवित्र वाणी का पठन-पाठन अवश्य किया करें। और सप्ताह में दो एक दिन सामूहिक सत्संग में सम्मिलित होकर अपने जीवन को सार्थक बनायें।

स्वामी राम अपने प्रारम्भिक जीवन में भगवान कृष्ण के अनन्य भक्त थे। उन्होंने अनेक संतों की वाणी का चयन अपनी नोट-बुक में किया था। राम वर्षा में उनमें से अनेकों पद तथा स्वामी जी द्वारा रचित भजन तथा कवितायें सम्मिलित हैं। इनके पठन-पाठन से जो आनन्द की अनुभूति होती है उसे शब्दों द्वारा व्यक्त करना असम्भव है। इसे वही लोग समझ सकते हैं जो इसके नित्य अभ्यासी है।

राम वर्षा भाग–२ का नया संस्करण पाठकों की सेवा में प्रस्तुत है। पिछले संस्करण में जो त्रुटियाँ मिलीं उन्हें इस संस्करण में यथा सम्भव सुधारने का प्रयत्न किया गया है। काग़ज़ छपाई तथा श्रम इत्यादि के व्यय में वृद्धि के कारण मूल्य बढ़ाना पड़ा है जिसके लिये करबद्ध क्षमा याचना वांछित है। आशा है, रामभक्त इस कठिनाई को ध्यान में रखते हुये स्वीकृति प्रदान करेंगे।

राम वर्षा घर-घर में होनी चाहिये तथा इसका पठन-पाठन मन-चित्त से नित्य होने पर ही संतप्त हृदयों को शान्ति मिलेगी और निजानंद की समपद के अधिकारी हो सकेगें।

२६ जून १९७७
रामतीर्थ प्रतिष्ठान
लखनऊ

राम कृष्ण लाल
स० सचिव

पञ्चम संस्करण की भूमिका

रामवर्षा का दूसरा भाग भी राम प्रेमियों की सेवा में अर्पित है। प्रस्तुत पुस्तक में जो स्वामी राम के भजन पहले भाग में नहीं छपे थे वे प्राय: सभी प्रकाशित किये गये हैं। कुछेक भजन भले ही अनावश्यक समझ कर नहीं छापे गये हैं।

हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, सिक्ख, जैन सभी धर्मों में प्रार्थना, प्रेयर, नमाज़ पर बहुत जोर दिया गया हैं। हिन्दू जगने के पश्चात और सोने से पूर्व दिन में कई बार प्रार्थना, संध्या करते हैं। मुसलमान ४-५ बार नमाज़ पढ़ते हैं। सिक्ख अमृतबेला जपजी साहब, सुखमनीजी और सायं आसादीवार का नित्य पाठ करते हैं। हज़रत ईसा मसीह का मत है कि प्रार्थना (प्रेयर) से सभी असम्भव काम सम्भव हो जाते हैं। जब हम विपत्ति में फंस जाते हैं तो "राम, राम, हा राम" कह कर भगवान को पुकारते हैं। सभी प्रकार के ताप (आदिभौतिक, आदिदैविक और अध्यात्मिक) प्रार्थना, भजन और आराधना से दूर हो जाते हैं। चित्त से मल, विक्षेप और आवरण दूर हो जाते हैं। चित्त से मल, विक्षेप और आवरण दूर करने की सबसे उत्तम औषधि प्रार्थना है। सच्चे दिल से जो प्रार्थना की जावे, अवश्य पूरी होती है। स्वामी राम ने भक्ति की लाली और वेदान्त की मस्ती पर सैकड़ों भजन, ग़ज़ल लिख डाले हैं। वे ही इस पुस्तक में अंकित किये गये हैं। एक स्थान पर स्वामी राम ने लिखा है कि जिस प्रकार डंडे से पहले गुल्ली को ऊँचा उछालते हैं और फिर उछली हुई गुल्ली को डंडे से जितनी दूर चाहें फेंकते हैं उसी प्रकार चित्त को प्रार्थना से ऊपर उछालते हैं और जितना ऊँचा ले जाना चाहें ले जा सकते हैं। सारांश यह है कि कम से कम प्रात: और सायं के लिये दिल को चुभने वाले भजन चुन लीजिये और दोनों बेला उन्हें दोहराइये जब तक आप तल्लीन न हो जावें। शक्कर का मज़ा चखने में

है और भजन का स्वाद चित्त को प्रभु के चरणों में लगाने में है। प्रार्थना जीव और आत्मा के भेद को मिटा देती है।

इस संस्करण के प्रकाशन में विलम्ब हुआ, इसका मुझे खेद है। प्रिय पाठक-गण उदारता पूर्वक क्षमा करने की कृपा करें।

शङ्कर जयन्ती—
वैशाख शुक्ल ५, सं० २०००

विनम्र
रामेश्वर

भजन क्रम

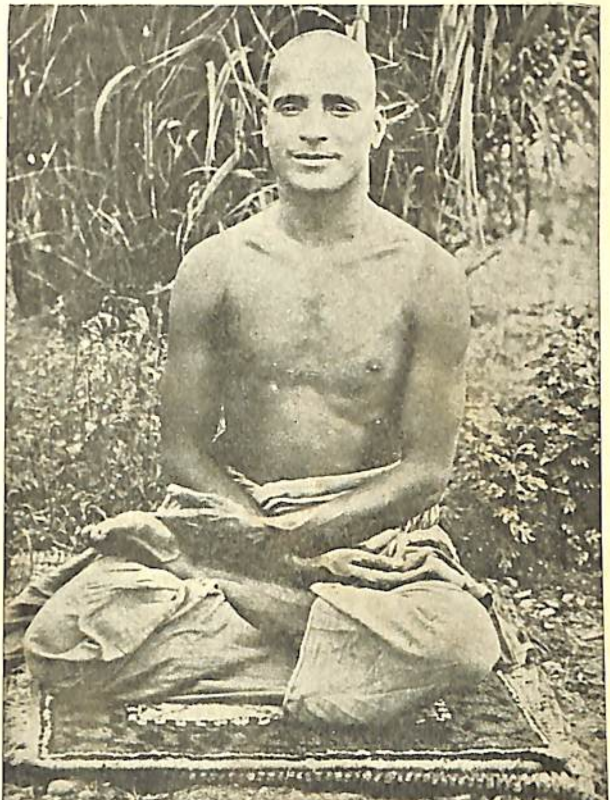
१. तमाम दुनियाँ है खेल मेरा, मैं खेल सबको खिला रहा हूँ । १
२. शहंशाहे जहान है सायल हुआ है तू । २
३. बादशाह दुनियाँ के हैं मोहरे मेरी शतरंज के । ३
४. फैंके फ़लक को तारे सब वख्श दूंगा मैं । ५
५. अपने मज़े के ख़ातिर गुल छोड़ ही दिये जब । ६
६. यह सैर क्या है अजब अनोखा कि राम मुझ में मैं राम में हूँ । ७
७. उड़ा रहा हूँ मैं रंग भर भर, तरह तरह की यह सारी दुनियाँ । ६
८. पीता हूँ नूर हरदम जामे सुरूर पैहम । ६
९. यह डर से मेहर आ चमका, अहाहाहा अहाहाहा । ११
१०. बिठा कर आप पहलू में हमें आंखें दिखाता है । १२
११. नज़र आया है हरसू मह-जमाल अपना मुबारक हो । १४
१२. मुझ बहरे ख़ुशी की लहरों पर दुनियाँ की किश्ती रहती है । १५
१३. हुबाबे जिस्म लाखों मर मिटे पैदा हुए मुझ में । १८
१४. मैं पड़ा था पहलू में राम के, दोनों एक नींद में लेटे थे । २०
१५. जब उमड़ा दरिया उल्फ़त का हर चार तरफ आबादी है । ३१
१६. दरिया से हुबाब की है यह सदा । ३५
१७. ठंडक भरी है दिल में आनन्द बह रहा है । ३६
१८. इश्क का तूफाँ बपा है, हाजते मयख़ाना नेस्त । ३७
१९. गुल को शमीम आब गुहर और ज़र को मैं । ४०
२०. बदले है कोई आन में अब रंगे ज़माना । ४०
२१. हर हर ओ३म् हर हर ओ३म् । ४२
२२. हिप हिप हुर्रे हिप हिप हुर्रे । ४३
२३. आ देख ले बहार कि कैसी बहार है । ४५
२४. नाचूं मैं नटराज रे, नाचूं मैं महाराज । ४८

२५. क्या पेशावाई बाजा है अनहद सदा है आज । ४६
२६. चार तरफ़ से अब्र की वाह उठी थी क्या घटा । ५२
२७. चलना सबा का ठुम ठुमक लाता पयामे यार हो । ५२
२८. मैं सैर करने निकला ओढ़े अबर की चादर । ५६
२६. गंजे निहां के क़ुफ़्ल पर सिर ही तो मोहरे शाह है । ६१
३०. देखा न शब जो यार को नूरे-ज़्या से कार क्या । ६३
३१. कहाँ जाऊं ? किसे छोड़ूँ ? किसे लेलूं ? करूं क्या मैं ? ६५
३२. बिछुड़ती दुलहिन वतन से है जब खड़े हैं रोम और गला रुके हैं । ६५
३३. आप में यार देखकर आइना पुर सफ़ा कि यूं । ७१
३४. हस्ती ओ इल्म हूं, मस्ती हूं, नहीं नाम मेरा । ७३
३५. वाह वा ऐ तप ओ रेंजिश वाह वा । ७४
३६. बन के गेसू रूख़े हस्ती में निखर जाता हूँ । ७५
३७. शुद्ध सच्चिदानन्द ब्रह्म हूँ, अजर, अमर, अज अविनाशी । ७८
३८. रे कृष्ण कैसी होली तैंने मचाई, अचरज लख्यो न जाई । ७६
३६. भला हुआ हरि बीसरो सिर से टली बलाय । ८०
४०. सब शाहों का शाह मैं मेरा शाह न कोय । ८०
४१. मरज़ी चेतन की जब झक मारन की होय । ८१
४२. कैसे रंग लागे, खूब भाग जागे, हरी गई, सब भूख और नंग मेरी । ८१
४३. हमें इक पागलपन दरकार। ८१
४४. जिधर देखता हूँ ख़ुदा ही ख़ुदा है । ८२
४५. पा लिया जो था कि पाना काम क्या बाक़ी रहा । ८३
४६. मुझी से हुई इब्तिदाये दो आलम । ८६
४७. बेहोश हैं तो हम हैं हुशियार हैं तो हम हैं । ८७
४८. बनें ध्यान में जिसके ध्यानी हैं मजनूं । ८६
४६. कहूँ क्या रंग उस गुल का अहाहाहा अहाहाहा । ६१
५०. कोई हाल मस्त, कोई माल मस्त, कोई तूती मैना सूये में । ६२
५१. मुझे बेख़ुदी ! यह तू ने भली चाशनी चखाई । ६३

५२. इस क़दर महवे तजल्ली हो गया । ६४
५३. बल बे आज़ादी ! खुशी की रूह उम्मीदों की जां । ६५
५४. गर कमिश्नर हो, लाट साहब हो । ६७
५५. पिदरे मजनूं ने पिदरे लैला से । १०४
५६. पाप क्या है ? गुनाह कितने है ? १०८
५७. सच्चे दिल से विचार कर देखो । १०६
५८. दान होता है तीन क़िस्मों का । ११०
५९. ख़ाली बिल्कुल है बांस की यह नै । ११२
६०. शीश मन्दिर में इक दफ़ा बुल-डाग । ११३
६१. गाड मालिक मकान का आया । ११४
६२. ज़ेरे नादिर हुआ मुहम्मद शाह । ११७
६३. वाह रे नेपोलियन निडर शहे मर्द । ११६
६४. ऐ शहनशाहे जूलियस सीज़र । १२०
६५. क़ैसरे हिन्द ! बादशाह दावर । १२३
६६. सग ने हड्डी कहीं से इक पाई । १२५
६७. क्या सिकन्दर ने भी कमाल किया । १२७
६८. क्या ही मीठी ज़ुबान से बोला । १२८
६९. बादशाह इक कहीं को जाता था । १३५
७०. क़दम बोसी को शाह झुका ही था । १३८
७१. जनक राजा की हुक्मरानी में । १३६
७२. राम भी एक बात जड़ता है । १४२
७३. अजब घूमते-घूमते राम को । १४५
७४. दुलहन को जां से बढ़कर भाती है आरसी । १४६
७५. हाय चेचक ने, वाय चेचक ने । १५७
७६. गंगा की ठंडी छाती से आती है खुश हवा । १५७
७७. है क्या सुहाना बाग़ में मैदाने दिलकुशा । १५८
७८. हम सब को देखते है पर देखते कहां ? १६५

७६. इसरार इसमें क्या है करो ग़ौर तो सही। १५६
८०. वह नौजवां के रूबरू नूरीं लिवास में। १६०
८१. ऐनक लगाये लड़के को वह इस ही परदे पर। १६०
८२. वह देखना किसी के लिये इस ही परदे पर, पूरी हुई है आर्ज़ू पैदा हुआ पिसर। १६१
८३. वह देखना किसी के लिये इस ही परदे पर मण्डप है कांग्रेस का। १६२
८४. वाह क्या ही प्यारा नक्शा है आंखों का फल मिला। १६३
८५. माया का परदा फैला है क्या रंग रंग में। १६४
८६. यह दो नहीं है एक है परदा कहो कि नक़्श। १६४
८७. परदा खड़ा है माया का यह किस मुक़ाम पर। १६५
८८. है इस तरफ़ तो शोर सरोदो समाअ का। १६५
८९. महसूस करने वाली इधर से आई लहर। १६६
९०. यह तो सब रास्त हैं वले अज़ रूये ज़ात भी। १६७
९१. ग़लतां है मुहीते वेपायां यहां वार कहां औ पार कहां। १६८
९२. क्या है यह? किस तरह मौजूद। १६९
९३. लैक माया है आ गयी क्योंकर। १७४
९४. जवाब नं० ९३ का। १७५

ॐ



स्वामी रामतीर्थ

1873–1906

ख़ुद्मस्ती

(१)

राग एमन कल्याण, ताल चलन्त

तमाम दुनियां है खेल मेरा, मैं खेल सब को खिला रहा हूँ ।
किसी को बेख़ुद[१] बना रहा हूँ, किसी को ग़म में रुला रहा हूँ ।।
अबस[२] है सदमा[३] भले बुरे का, हो कौन तुम और कहाँ से आये ।
ख़ुशी है मेरी, मैं खेल अपना, बना बना के मिटा रहा हूँ ।।
फिरो हो रूये-ज़मीं[४] पे यारो ! तलाश मेरी में मारे मारे ।
अमल करो, तुम दिलों में देखो, मैं नहने-अकरब[५] सुना रहा हूँ ।।
कभी मैं दिन को निकालूं सूरज, कभी मै शब[६] को दिखाऊँ तारे ।
यह ज़ोर मेरा है दोनों पाँवों को मिस्ले-फिरकी फिरा रहा हूँ ।।
किसी की गर्दन में तौक़े लानत,[७] किसी के सिर पर है ताजे-रहमत[८] ।
किसी को ऊपर बुला रहा हूँ, किसी को नीचे गिरा रहा हूँ ।।

---

१ आत्मा में लीन, मस्त, २ व्यर्थ, ३ चोट, ४ पृथ्वी के ऊपर, ५ क़ुरान शरीफ़ की एक आयत है जिसका अर्थ है कि शाहरग (कण्ठ) से भी अधिक समीप ईश्वर है, ६ रात्रि, ७ लानत की हँसली, ८ कृपादृष्टि का मुकुट ।

(२)

ग़ज़ल भैरवी

शाहंशाहे-जहान[१] है, सायल[२] हुआ है तू ।
पैदाकुने-ज़मान[३] है डायल[४] हुआ है तू ॥
सौ बार ग़रज़ होवे तो धो धो पियें क़दम[५] ।
क्यों चरख़ो[६]-मिहरो[७]-माह[८] पै मायल[९] हुआ है तू ॥
ख़ञ्जर की क्या मजाल[१०] कि इक ज़ख़्म कर सके ।
तेरा ही है ख़याल कि घायल हुआ है तू ॥
क्या गदा-ओ-शाह[११] का राज़िक़[१२] है कोई और ।
इफ़लासो-तंगदस्ती[१३] का क़ायल[१४] हुआ है तू ॥
टाइम[१५] है तेरे मुजरे के मौक़े[१६] की ताक[१७] में ।
क्यों डर से उसके मुफ्त में ज़ायल हुआ है तू ॥
हमबगल[१८] तुझसे रहता है हर आन[१९] 'राम' तो ।
बन परदा अपनी वस्ल[२०] में हायल[२१] हुआ है तू ॥

---

१ चक्रवर्ती राजा, २ भिखारी, मँगता, ३ समय का उत्पन्न कर्ता, ४ घड़ी का dial अर्थात् समय नापने का यन्त्र, ५ चरण, ६ आकाश, ७ सूर्य, ८ चन्द्रमा, ९ मोहित, १० सामर्थ शक्ति, ११ फ़क़ीर (भिखारी) और राजा, १२ अन्नदाता, १३ निर्धनता और तंगी, १४ सहनेवाला, अधीन, १५ (time) काल, १६ अवसर की प्रतीक्षा में, १७ प्रतीक्षा में १८ बगल में अर्थात् अपने साथ, १९ हर समय, २० मिलाप, साक्षात्कार २१ दो के बीच आच्छादित रहनेवाला या रुकावट डालने वाला ।

(३)

ज्ञानी की ललकार

राग आनन्द भैरवी, ताल धमाली

बादशाह दुनियाँ के हैं मोहरे मेरी शतरंज के।
दिल्लगी की चाल हैं सब रंग सुलहो जंग के॥
रक्से-शादी[1] से मेरे जब काँप उठती है ज़मीं।
देख कर मैं खिलखिलाता क़हक़हाता[2] हूँ वहीं॥
खुश खड़ा दुनियाँ की छत पर हूँ तमाशा देखता।
गह[3] बगह देता लगा हूँ वहशियों[4] की सी सदा[5]॥
ऐ मुकाली[6] रेल गाड़ी! उड़ गई। ऐ सिर[7] जली।
ऐ ख़रे-दज्जाल[8]! नख़रे बाज़ियों में जूं[9] परी॥
भोले भाले आदमी भर भर के लम्बे पेट में।
ले डकारें[10] लोटती है रेत में या खेत में॥
छोड़ धोकेबाज़ियाँ और साफ़ कह सचमुच बता।
मंज़िले-मक़सूद[11] तक कोई हुआ तुझ से रसां[12]॥

---

१ प्रसन्नता के नृत्य से, २ खिलकर हँसना, ३ कभी कभी, ४ वनचरों, ५ आवाज़, घोषणा, ६ काले मुख वाली, ७ जले हुए सिरवाली, अर्थात् सिर से धुआँ निकालने वाली, ८ दज्जाल उस महा झूठे का नाम है जो महात्मा मसीह का शत्रु था उसको अज्ञानता के कारण गदहा कहा है रेल और गदहा इत्यादि से यहाँ तात्पर्य माया से है जो अज्ञान है और सबको धोखा देती और किसी को उसके उद्देश पर नहीं पहुँचाती है, ९ परी के समान। १० सीटी अथवा चीख से अभिप्राय है, ११ अन्तिम लक्ष्य स्थान, असली घर, उद्देश, १२ पहुँचा।

पेट में तेरे पड़ा जो वह गया ! लो वह गया ! ।
लेक[१३] हाय ! मंज़िले-मक़सूद पीछे रह गया ।।
ऐ जवां बाबू ! यह गरमी क्यों ? ज़रा थमकर चलो ।
बेग लेकर हाथ में सरपट न यों जल्दी करो ।।
दौड़ते क्या हो बराते-नूर[१४] के मिलने को तुम ? ।
वह न बाहर है, ज़रा पीछे हटो, बातिन[१५] को तुम ।।
क्यों हो मुजरिम[१६] अहलकारों की खुशामद में पड़े ?
यह कचहरी वह नहीं, तुमको रिहाई[१७] दे सके ।।
पहनकर पोशाक गहने बुर्क़ा ओढ़े नाज़[१८] से ।
चोरी चोरी गुलबदन[१९] मिलने चली यार से ।।
ऐ मुहब्बत से भरी ! ऐ प्यारी बीबी खूबरू[२०] ! ।
चौंक मत, घबरा नहीं, सुनकर मेरी ललकार[२१] को ।।
निकल भागा दिल तेरा, पैरों से बढ़कर दौड़ में ।
दिल हरम[२२] है यार[२३] का, साकिन हो, गिर नै[२४] दौड़ में ।।
हो खड़ी जा ! बुर्क़ा जामा[२५] और बदन तक दे उतार ।
बेहया हो एक दम में, लो अभी मिलता है यार ।।
दौड़ क़ासिद[२६] ! पर लगाकर, उड़ मेरी जाँ ! पेच खाकर ।
हर दिलो[२७] हर जाँ में जाकर, बैठ जमकर घर बनाकर ।।

---

१३ किन्तु, १४ तेज के पुंज या प्रकाश के विवाह में, १५ भीतर, १६ अपराधी, १७ छुटकारा, मुक्ति, १८ नखरे से, १९ पुष्प के से गातवाली अति कोमल, यहाँ वृत्ति से अभिप्राय है, २० सुन्दर मुखवाली २१ आवाज़, २२ मंदिर २३ प्रभु, २४ नहीं, २५ वस्त्र, २६ संदेशा ले जाने वाला, २७ प्रत्येक चित्त और स्थान में।

"मैं खुदा हूँ", "मैं खुदा हूँ" राज़ जाँ[28] में फूंक दे ।
हर रगो-रेशे[29] में घुसकर मस्ती-ओ-मुल[30] झोंक दे ।।
ग़ैरबीनी[31] ग़ैरदानी[32] और ग़ुलामी बंदगी (को) ।
मार गोले दे धड़ाधड़, एक ही एक कूक दे ।।
रोशनी पर कर सवारी, आँख से कर नूर-बारी[33] ।
हर दिलो-दीदा[34] में जा झंडा अलिफ़[35] का ठोंक दे ।।

(४)

राग झिला, ताल दादरा

फेंके फ़लक को तारे, सब बख्श दूंगा मैं ।
भर भर के मुट्ठी हीरे, अब बख्श दूंगा मैं ।।
सूरज को गर्मी, चाँद को ठण्डक, गुहर[1] को आब[2] ।
यूं मौज[3] अपनी आई, सब बख्श दूंगा मैं ।।
गाली, गलौज, झिड़की, तानें करूँ मुआफ़ ।
बोली, ठठोली, धमकी, सब बख्श दूंगा मैं ।।
तारीफ़ से परे हूँ, ऐबों से मैं बरी हूँ ।
हम्दो-सना-दुआ[4] भी, सब बख्श दूंगा मैं ।।

---

२८ गुह्य भेद, रहस्य, २६ प्रत्येक नस और पठ्ठे में, ३० मस्ती (निजानन्द) और शराब (ज्ञानामृत), ३१ द्वैत दृष्टि, ३२ द्वैत भावना; ३३ नेत्र से आनन्द रूपी प्रकाश की वर्षा, ३४ प्रत्येक दिल और नेत्र, ३५ यों तो मुराद अद्वैत के झण्डे से है, पर रिसाला अलिफ़ (मासिक पत्र) जो ब्रह्मलीन स्वामी राम ने गृहस्थाश्रम के समय केवल अद्वैत प्रतिपादन करने के निमित्त निकाला था, उससे भी अभिप्राय हो सकता है ।

१ मोती, २ चमक, ३ तरंग, ४ स्तुति, प्रशंसा और प्रार्थना,

वाहिद[५] हूँ जाते-मुत्लक,[६] यां इम्तियाज़[७] कैसी ।
औसाफ़[८] को लुटा दूं, सब बख्श दूंगा मैं ।।
सहराये-बेकरां[९] हूँ दरिया हूँ बे किनार ।
बू[१०] ग़ैर की न छोड़ूं, सब बख्श दूंगा मैं ।।
दिल नज़र मेरी कर दो, हूँ शाहे-बेनियाज़[११] ।
कौनो-मकां-ज़मां-ज़र[१२], सब बख्श दूंगा मैं ।।
झगड़े, क़ुसूर क़ज़िये, अच्छे बुरे ख्याल ।
जूं[१३] ओस झट उड़ा दूं, सब बख्श दूंगा मैं ।।
मौजूद कुछ नहीं है, मेरे सिवा यहाँ ।
वहमे-दुई[१४], गुमानो-शक[१५], सब बख्श दूंगा मैं ।।
अक्लो-क़यास[१६], जिस्मो-जां, मालो-दोस्तां ।
कर राम पर निसार, यह सब बख्श दूंगा मैं ।।

(५)

राग जंगला, ताल धमाली,

अपने मज़े की खातिर गुल[१] छोड़ ही दिये जब ।
रूये-ज़मीं[२] के गुल्शन मेरे ही बन गये सब ।।
जितने ज़ुबाँ[३] के रस थे कुल तर्क कर दिये जब ।
बस जायक़े जहाँ[४] के मेरे ही बन गये सब ।।

---

५ एक ६ वास्तविक तत्व, ७ विवेचना, अन्तर, भेद, फ़रक, ८ गुणों, ९ घना जंगल, १० द्वैत की गन्ध, ११ उदारचित बादशाह, १२ दुनिया, काल और सम्पत्ति, १३ सदृश, १४ द्वैत भ्रम, १५ संशय और अनुमान, १६ बुद्धि और ख़्याल ।

१ पुष्प, फूल, २ पृथ्वी भर के बाग़, ३ जिह्वा, ४ संसार भर के,

ख़ुद के लिए जो मुझसे दीदों[५] की दीद[६] छूटी।
ख़ुद हुस्न[७] के तमाशे मेरे ही बन गये सब ।।
अपने लिए जो छोड़ी ख्वाहिश[८] हवाख़ुरी की।
बादे-सबा[९] के झोंके मेरे ही बन गये सब ।।
निज की ग़रज़ से[१०] छोड़ा सुनने की आरज़ू[११] को।
अब राग और बाजे मेरे ही बन गये सब ।।
जब बेहतरी के अपनी फ़िक्रो-ख़याल[१२] छूटे।
फ़िक्रो-ख्याले-रंगीं[१३] मेरे ही बन गये सब ।।
आहा ! अजब तमाशा, मेरा नहीं है कुछ भी।
दावा नहीं ज़रा भी इस जिस्मो-इस्म[१४] पर ही ।।
यह दस्तो-पा[१५] हैं सबके, आँखें यह हैं तो सबकी।
दुनियाँ के जिस्म[१६] लेकिन, मेरे ही बन गये सब ।।

(६)

ज्ञानी की सैर

राग कल्याण, ताल तीन

यह सैर क्या है अजब अनोखा, कि राम मुझ में मैं राम में हूँ।
बग़ैर सूरत अजब है जलवा[१] कि राम मुझमे, मैं राम में हूँ ।।
मुरक्क़ये-हुस्नो-इश्क़[२] हूँ मैं, मुझी मे नाज़ो-नियाज़[३] सब हैं।
हूँ अपनी सूरत पै आप शैदा[४], कि राम मुझमें, मैं राम में हूँ ।।

---

५ नेत्रों की, ६ दृष्टि, ७ सौन्दर्य, ८ इच्छा, ९ पूर्वी वायु, १० अपने स्वार्थ की दृष्टि से, ११ इच्छा, १२ शोक, चिन्ता, १३ आनन्ददायक या भाँति-भाँति के विचार, १४ नाम व रूप, १५ हाथ-पैर १६ शरीर।

१ दर्शन, प्रकट, २ सुन्दरता और प्रेम के चित्रों की पुस्तक (album) ३ बेपरवाही प्रिया की और प्रेम जताना प्रीतम का, ४ आशिक़ आसक्त,

ज़माना आईना[५] राम का है, हर एक सूरत से है वह पैदा ।
जो चश्मे-हक़-बीं[६] खुली तो देखा, कि राम मुझमें मैं राम में हूँ ॥

वह मुझमें हर रंग में मिला है, कि गुल से बू भी कभी जुदा है ?
हुबाबो-दरिया[७] का है तमाशा, कि राम मुझमें, मैं राम में हूँ ॥

सबब बताऊँ मैं वज्द[८] का क्या ? है क्या जो दर पर्दा[९] देखता हूँ ।
सदा[१०] यह हर साज़ से है पैदा, कि राम मुझमें, मैं राम में हूँ ॥

बसा है दिल में मेरे वह दिलवर, है आईने में ख़ुद आईना-गर[११] ।
अजब तहय्युर[१२] हुआ यह कैसा? कि राम मुझमें, मैं राम में हूँ ॥

मुक़ाम पूछो तो लामकाँ[१३] था, न राम ही था न मैं वहाँ था ।
लिया जो करवट तो होश आया, कि राम मुझमें, मैं राम में हूँ ॥

अलल तवातर[१४] है पाक[१५] जलवा, कि दिल बना तूरे-बर्क़-सीना[१६] ।
तड़प के दिल यूं पुकार उट्ठा, कि राम मुझमें, मैं राम में हूँ ॥

जहाज़ दरिया में और दरिया, जहाज़ में भी तो देखिये आ ।
यह जिस्म[१७] किश्ती[१८] है राम दरिया, है राम मुझमे, मैं राम में हूँ ॥

---

५ शीशा, दर्पण, ६ तत्वदृष्टि का नेत्र, ७ बुलबुला और दरिया, ८ अत्यन्तानन्द, विस्मय, ९ पर्दे के पीछे, १० ध्वनि, आवाज़, ११ दर्पण बनाने वाला, सिकन्दर, यहाँ सिकन्दर रूपी परमात्मा से अभिप्राय है जिसने दर्पण रूपी दिल बनाया है, १२ आश्चर्य, १३ देशरहित, १४ लगातार, निरन्तर, १५ शुद्ध दर्शन, १६ भीतर की बिजली का अग्नि पर्वत, १७ शरीर, १८ नौका, नाव ।

(७)

ज्ञानी की होली

रागनी जैजैवन्ती, ताल चाचर

उड़ा रहा हूँ मैं रंग भर भर, तरह तरह की यह सारी दुनिया ।
चे[1] खूब होली मचा रखी थी, पै अब तो हो ली[2] यह सारी दुनिया ।।
मैं साँस लेता हूँ रंग खुलते हैं, चाहूँ दम में अभी उड़ा दूं ।
अजब तमाशा है रंग रलियाँ, है खेल जादू यह सारी दुनिया ।।
पड़ा हूँ मस्ती में ग़र्क़ो-बेखुद, न ग़ैर[3] आया चला न ठहरा ।।
नशे में ख़र्राटा सा लिया था, जो शोर बर्पा है सारी दुनिया ।।
भरी है खूबी हर इक खराबी में, ज़र्रा-ज़र्रा है मेहर[4] आसा ।
लड़ाई शिकवे में भी मज़े हैं यह ख्वाब चोखा[5] है सारी दुनिया ।।
लिफ़ाफ़ा देखा जो लम्बा चौड़ा, हुआ तहय्युर[6], कि क्या ही होगा ।
जो फाड़ देखा ओहो कहूँ क्या ? हुई ही कब थी यह सारी दुनिया ।।
यह राम सुनियेगा क्या कहानी, शुरू न इसका, ख़त्म न हो यह ।
जो सत्य पूछो ! है राम ही राम[7], यह महज़[8] धोखा है सारी दुनिया ।

(८)

गज़ल ताल पशतो

पीता हूँ नूर[1] हरदम जामे-सुरूर[2] पैहम ।
है आस्माँ प्याला वह शराबे-नूर[3] वाला ।।

---

१ क्या खूब, २ हो गई, ख़तम हो गई, ३ दूसरा, अन्य, ४ सूर्य जैसा, ५ अजीब आश्चर्य, ६ हैरान, विस्मित, ७ अद्वैत से अभिप्राय है, ८ केवल,

१ प्रकाश, २ आनन्द का प्याला, ३ प्रकाश रूपी मदिरा या ज्ञानामृत,

है जी[४] में अपने आता दूं जो है जिसको भाता ।
हाथी गुलाम घोड़े, ज़ेवर, ज़मीन, जोड़े ।।
ले जो है जिसको भाता, मांगे बग़ैर दाता ।। पीता हूँ०
हर क़ौम की दुआयें[५], हर मत की इल्तिजायें[६] ।
आती हैं पास मेरे, क्या देर क्या सबेरे ।।
जैसे अड़ाती गायें जंगल से घर को जायें ।। पीता हूँ०
सब ख्वाहिशें नमाज़ें, गुण, कर्म और मुरादें ।
हाथों में हूँ फिराता, दुनिया हूँ यूं बनाता ।।
मेमार[७] जैसे ईंटें, हाथों में है घुमाता ।। पीता हूँ०
दुनियां के सब बखेड़े, झगड़े फ़साद झेड़े ।
दिल में नहीं अड़कते, न निगह को वदल सकते ।।
गोया गुलाल हैं यह, सुर्मा मिसाल[८] हैं यह ।। पीता हूँ०
नेचर[९] के लाज़[१०] सारे, अहकाम[११] हैं हमारे ।
क्या मेहर[१२] क्या सितारे, हैं मानते इशारे ।
ज्यों दस्तो-पा[१३] हर इक के, मर्ज़ी पै मेरी चलते ।। पीता हूं०
कशिशे-सिक़ल[१४] की क़ुदरत, मेरी है मेहरो उल्फ़त[१५] ।
है निगाह[१६] तेज़ मेरी, इक नूर की अंधेरी ।
बिजली शफ़क[१७] अङ्गारे, सीने[१८] के हैं शरारे ।। पीता हूँ०

---

४ दिल, ५ प्रार्थनायें, ६ निवेदन वा दरख़्वास्तें, ७ मकान बनाने वाला, ८ आँखों में सुरमे की तरह, ९ प्रकृति (कुदरत), १० नियम, क़ानून, ११ हुक्म, उपदेश, १२ सूर्य, १३ हाथ और पाँव, १४ आकर्षण-शक्ति, (Law of gravitation), १५ कृपा (मिहरबानी) और प्यास, १६ दृष्टि, १७ दोनों कालों के मिलते समय आकाश में जो लाली होती है, १८ दिल,

मैं खेलता हूँ होली, दुनिया से गेंद गोली।
ख्वाह इस तरफ़ को फेंकूं, ख्वाह उस तरफ़ चला दूं ॥
पीता हूँ जाम[19] हर दम नाचूं मुदाम[20] धम धम ॥
दिन रात है तरन्नुम[21], हूँ शाहे-राम बेग़म[22] ॥ पीता हूँ ॥

(९)

राग भैरवी ताल चलन्त

यह डर से मेहर[1] आ चमका, अहाहाहा अहाहाहा।
उधर मह[2] बीम[3] से लपका, अहाहाहा अहाहाहा ॥
हवा अठखेलियाँ करती है मेरे इक इशारे से।
है कोड़ा[4] मौत पर मेरा, अहाहाहा, अहाहाहा ॥
इकाई[5] ज़ात[6] में मेरी असंखों रंग हैं पैदा।
मज़े करता हूँ मैं क्या-क्या, अहाहाहा, अहाहाहा ॥
कहूँ क्या हाल इस दिल का कि शादी[7] मौज[8] मारे है ॥
है इक उमड़ा हुआ दरिया, अहाहाहा, अहाहाहा ॥
यह जिस्मे-राम[9] ऐ बदगो[10] ! तसव्वुर[11] महज़[12] है तेरा।
हमारा बिगड़ता है क्या, अहाहाहा, अहाहाहा ॥

---

१९ प्रेम-प्याला, २० नित्य हमेशा, २१ आनन्द से गीत गाना, २२ बेग़म राम बादशाह हूँ।

१ सूर्य, २ चाँद, ३ भय, ४ चाबुक, ५ एक, अद्वैत, ६ वास्तविक स्वरूप, ७ खुशी, आनन्द, ८ लहरें मारना, ९ राम का शरीर, १० बुरा बोलने वाले या ताना मारनेवाले, अभिप्राय भेदवादियों से है, ११ भ्रम, कल्पना, १२ केवल,

(१०)

ग़ज़ल क़वाली

बिठा कर आप पहलू[1] में, हमें आँखें दिखाता है।
सुना बैठेंगे हम सच्ची, फ़क़ीरों को सताता है॥
अरे दुनिया के बाशिन्दो[2]! डरो मत बीम[3] को छोड़ो।
यह शीरीं-रू[4] तो मिसरी है, भवें नाहक़[5] चढ़ाता है॥
यह सलवट[6] डालना चेहरे पे गंगा जी से सीखा है।
है अन्दर से महा शीतल, यह ऊपर से डराता है॥

---

(१) राम का शरीर जब रोगी हुआ था तो राम अपने (निजात्मा) स्वरूप से यूं कहते हैं:—ऐ प्यारे (प्रेमात्मा) अपने समीप बिठला कर हमें आँखें दिखलाता है, यह याद रख, हम सच्ची कह बैठेंगे, फ़क़ीरों को सताता है?

(२) ऐ संसारी लोगों! मत डरो, भय को छोड़ दो, क्योंकि यह मधुर मुख वास्तव में मिसरी रूप है, परन्तु भवें व्यर्थ चढ़ा लेता है (अर्थात् ऊपर ऊपर से कोप में आ जाता है और वह भी व्यर्थ।)

(३) चेहरे पर बल डालना (त्योरी चढ़ाना) यह हमारे प्यारे स्वरूप ने गंगा जी से सीखा है क्योंकि बहते समय गंगा के जल पर लहरें और भँवर पड़ते हैं मगर अन्दर से जल बिलकुल शांत होता है, ऐसे ही यह प्यारा अन्दर से महा शीतल और शांत है और ऊपर से डराता है।

---

१ अपने पास, २ संसार में बसने वालो, जगत्-निवासी, ३ डर, भय, ४ मधर मुख, मीठे बोल वाला, ५ व्यर्थ, ६ माथे पर बल, त्योरी,

बनावट की जबीं पुरचीं[7] है उलफ़त[8] से मुलब्बब[9] दिल ।
बनावट चालबाज़ी से यह क्यों भर्रे में लाता है ॥
अगर है ज़र्रे-ज़र्रे[10] में वह, बल्कि लाखवें जुज़ में ।
तो जुज़्वो[11]-कुल भी सब वह है, दीगर[12] झट उड़ ही जाता है ॥
निगाहे-ग़ौर रख क़ायम ज़रा बुरक़े[13] को ताके जा ।
यह बुरक़ा साफ़ उड़ता है, वह प्यारा नज़र आता है ॥
तलातुम-ख़ेज़[14] बहरे हुस्नो-ख़ूबी[15] है अहाहाहा ।
हवासो-होश की किश्ती को दम भर में बहाता है ॥

---

(४) प्यारे की बलों से भरी ललाट केवल बनावटी हैं क्योंकि दिल उसका प्रेम से लबालब भरा हुआ है, मगर मालूम नहीं कि वह बनावटी चालबाजी से लोगों को भर्रे में क्यों ले आता है ।

(५) अगर परमाणु मात्र में वह है और उसके लाखवें भाग में भी वह है, तब व्यष्टि और समष्टि भी वह ही सब है, उसके अतिरिक्त अन्य कुछ रह ही नहीं सकता ।

(६) निरन्तर विचार-दृष्टि से इस माया के पर्दे को देखते जा, इस विवेक से यह पर्दा साफ़ उड़ जाता है और वह प्यारा आत्मा दृष्टिगोचर होता है ।

(७) अहाहाहा अपने सौंदर्य और अच्छाइयों का समुद्र क्या ही लहरें मार रहा है, जो होश और हवास की नौका को दम भर में बहा ले जाता है, अर्थात् मन और बुद्धि जिसे देखकर चकित हो जाते हैं ।

---

७ बल वा त्योरी से भरी पेशानी वा माथा, ८ प्रेम, ९ लबालब भरा हुआ, १० परमाणु मात्र, ११ व्यष्टि और समष्टि, १२ दूसरा, १३ पर्दा, १४ लहरें मारने वाला, १५ सौन्दर्य और अच्छाइयों का समुद्र ।

हसीनो[१६] ! हुस्न-ओ-ख़ूबी से मेरी ज़ुल्फ़े-सियाह[१७] का ज़िल[१८] ।
अबस[१९] साया-परस्तों[२०] का पड़ा दिल तलमलाता है ।
अरी शोहरत ! अरी रुसवाई ! अरी तोहमत[२१] ! अरी अज़मत[२२] ।
मरो लड़ लड़ के तुम अब राम तो पल्ला[२३] छुड़ाता है ।।

(११)

राग भैरवी, ताल चलन्त

नज़र आया है हरसू[१] मह[२]-जमाल अपना मुबारक[३] हो ।
"वह मैं हूँ" इस ख़ुशी में दिल का भर आना मुबारक हो ।।
यह उरयानी[४] रुख़े-ख़ुरशीद[५] की बन पर्दा हायल[६] थी ।
हुआ अब फ़ाश[७] पर्दा, सितर[८] उड़ जाना मुबारक हो ।।

---

(८) ऐ सुन्दर रूपवालो ! यह याद रखो तुम्हारी ख़ूबसूरती (सुन्दरता) जो है वह मेरी काली ज़ुल्फ (मेरे कृष्ण रूप) ही की केवल छाया (माया) है, परछायीं (साया) को पूजनेवालों का (रूप से मोहित वा माया में आसक्त पुरुषों का) चित्त व्यर्थ तलमलाता (टमटमाता है) ।

(९) ऐ यश ! और अपयश ! ऐ कलंक ! ऐ बड़प्पन ! तुम सब अब लड़ लड़ के मरो, राम तो तुम सब से साफ़ पल्ला छुड़ाता है (तुम से पृथक होता है) ।

---

१६ सुन्दर पुरुषों, १७ काली ज़ुल्फ़ अर्थात् कृष्णरूप, १८ छाया, अर्थात् माया, १९ व्यर्थ है, २० छाया पर मोहित होने वाले, यहाँ अभिप्राय मायासक्त से है, २१ कलंक, २२ बड़ाई, २३ अलग होता है ।

१ हर तरफ़, २ चन्द्रमुख या चन्द्र जैसा सौंदर्य, ३ बधाई, ख़ुशी, ४ नंगापन, स्पष्ट प्रकट होना, ५ सूर्यमुख अर्थात् अपने प्रकाश स्वरूप आत्मा ६ बीच में आ जाना, ढके रहना, ७ खुला, प्रकट, ८ पर्दा ।

यह जिस्मो[9]-इस्म का कांटा जो बेढब सा खटकता था।
खलिश[10] सब मिट गई, काँटा निकल जाना मुबारक हो॥
तमसख़ुर[11] से हुए थे क़ैद साढ़े तीन हाथों में।
वले[12] अब वुसअते फ़िकरो-तख़ैयुल[13] से भी बढ़ जाना मुबारक हो॥
अजब तसख़ीरे-आलमगीर[14] लाई सल्तनते-आली[15]।
महो-माही[16] का फ़रमाँ[17] को बजा[18] लाना मुबारक हो॥
न ख़दशा[19] हर्ज का मुतलक़[20], न अंदेशा-खलल[21] बाक़ी।
फुरेरे[22] का बुलन्दी पर यह लहराना मुबारक हो॥
तअल्लुक़[23] से बरी[24] होना हुरूफ़े[25] राम की मानिन्द[26]।
हर इक पहलू[27] से नुक्तये-दाग़[28] मिट जाना मुबारक हो॥

(१२)

ग़ज़ल

मुझ बहरे-ख़ुशी[1] की लहरों पर दुनिया की किश्ती रहती है।
अज़ सैलेसरूर[2] धड़कती है छाती और किश्ती बहती है॥
मुझमें ! मुझमें ! ! मुझमें ! ! !

---

९ नाम और रूप, १० खटका, झगड़ा, चोट, ११ ठट्ठे से, हँसी से, १२ किन्तु १३ फ़िकर और ख्याल अर्थात् सोच विचार की सीमा वा अवधि, १४ समस्त संसार को जीतने वाली विजय, १५ भारी राज्य, १६ पाताल से आकाश तक, १७ आज्ञा, १८ अज्ञा मानना, १९ डर, २० बिलकुल, नितान्त, २१ फ़साद, वा गिगाड़ की फ़िक्र, २२ झंडा, २३ सम्बन्ध वा आसक्ति, २४ मुक्त, निरासक्त, २५ राम के वर्ण, अक्षर (र, आ, म), २६ सदृश २७ तरफ़, २८ माया का चिन्ह।

१ ख़ुशी का समुद्र, २ आनन्द के तेज तूफान (वहाव) से

गुल[3] खिलते हैं, गाते हैं रो रो बुलबुल,
क्या हंसते हैं नाले[4] नदियाँ।
रंग-शफ़क़[5] घुलता है, बादे-सबा[6] चलती है,
गिरता है छमछम बारां[7]। मुझमें! मुझमें!! मुझमें!!!
करते हैं अंजम[8] जगमग, जलता सूरज धक-धक,
सजते हैं बाग़ो-बियावाँ[9]।
बसते हैं लन्दन पेरिस, पुजते हैं काशी मक्का,
बनते हैं जिन्नतोरिज़वाँ[10] मुझमें! मुझमें!! मुझमें!!!
उड़ती हैं रेलें फर-फर, बहती हैं बोटें[11] झर झर,
आती है आँधी सर सर॥
लड़ती हैं फ़ौजें मर-मर, फिरते हैं जोगी दर-दर,
होती है पूजा हर-हर, मुझमें! मुझमें!! मुझमें!!!
चर्ख़[12] का रंग रसीला, नीला-नीला, हर तरफ़ दमकता है,
कैलास झलकता है, बहर[13] डलकता है, चाँद चमकता है!
मुझमें! मुझमें!! मुझमें!!!
आज़ादी है, आज़ादी है, आज़ादी है, मेरे हां।
गुंजाइशो-जा[14] सब के लिए बहदो-पायाँ[15]॥
सब वेद और दर्शन, सब मज़हब, क़ुरआन, इञ्जील और त्रिपटका।[16]
बुद्ध, शंकर, ईसा और अहमद, था रहना सहना इन सबका॥
मुझमें! मुझमें!! मुझमें!!!

---

३ पुष्प, ४ धारा, चश्मे, ५ प्रातःकाल और सायंकाल को आकाश में जो लाली बादलों में होती है, ६ पूर्व की वायु, ७ वर्षा, ८ तारे, ९ बाग और जंगल, १० स्वर्ग और स्वर्ग का अध्यक्ष, ११ बेड़ा, किश्ती, १२ आकाश, १३ समुद्र, १४ स्थान की गुंजायश (विशालता), १५ अनन्त अथाह, १६ बौद्ध मत की पुस्तक,

थे कपिल, कणाद और अफ़लातूं, स्पैंसर, कैंट, और हैमिलटन[१७] ।
श्रीराम, युधिष्ठिर, सिकन्दर, विक्रम, क़ैसर, एलीज़बेथ, अकबर ॥
मुझमें ! मुझमें ! ! मुझमें ! ! !
मैदाने-अबद[१८] और रोज़े-अज़ल[१९], कुल माज़ी, हाल और मुस्तक़्बल[२०] ।
चीज़ों का बेहद रद्दो बदल[२१], और तख़्त-ए-देहर[२२] का है हलचल ॥
मुझमें ! मुझमें ! ! मुझमें ! ! !
हूँ रिश्त[२३]-ए-वहदत दर कसरत[२४], हूँ इल्लतो-सेहत[२५] और राहत[२६] ।
हर विद्या, इल्मो, हुनर, हिकमत ; हर ख़ूबी, दौलत बरकत ।
हर नियामत, इज्जत और लज्जत ; हर कशिश का मर्कज़[२७] हर ताक़त ।
हर मतलब, कारण कारज सब ; क्यों, किस जा[२८], कैसे क्योंकर कब ।
मुझमें ! मुझमें ! ! मुझमें ! ! !
हूँ आगे पीछे, ऊपर, नीचे, ज़ाहिर, बातिन[२९] मैं ही मैं ।
माशूक़[३०] और आशिक़[३१] शायर[३२], मज़मूं, बुलबुल, गुलशन[३३] ! मैं ही मैं ॥

---

*यह कविता हिन्दी या उर्दू कविता के ढंग पर नहीं है, यह अमरीका देश के ह्वाल्ट ह्विटमैन के ढंग पर कही हुई है, और उन दिनों लिखी गई थी जब कि राम ने अन्त में अपना नाम देना बन्द कर दिया था । जिन पाठकों को ह्वाल्ट ह्विटमैन के ढंग से परिचय न हो वे "Leaves of Grass by Whalt Whitman" (घास की पत्तियाँ) नाम की पुस्तक देखें । (सम्पादक)

---

१७ यूरप के विज्ञान शास्त्रियों के ये नाम हैं, १८ अमर स्थान, १९ अनादि काल, २० भूत, वर्तमान और भविष्य, २१ बदलते रहना, विकार, २२ समय का पलड़ा, २३ एकता का सम्बन्ध या धागा, २४ अनेकता, नानत्व, २५ कारण, सुख वा नीरोगिता, २६ आराम, २७ केन्द्र, २८ किस स्थान, २९ अन्दर, ३० प्रिया, इष्ट, ३१ प्रेमी आसक्त वा भक्त, ३२ कवि, ३३ बाग़ ।

(१३)

ग़जल ताल क़वाली

हुबाबे-जिस्म[१] लाखों मर मिटे, पैदा हुए मुझमें ।
सदा हूँ बहरे-वाहिद,[२] लहर धोखा है फ़िरावाँ[३] का ।।
मेरा सीना[४] है मशरिक़[५] आफ़ताबे-ज़ाते-ताबाँ[६] का ।
तुलूए-सुबहे-शादी[७], वा शुदन[८] है मेरे मिज़गाँ[९] का ।।
ज़ुबा अपनी बहारे-ईद[१०] का मुज़दा[११] सुनाती है ।
दुरों के[१२] जगमगाने से हुआ आलम[१३] चिराग़ाँ का ।

---

(१) मुझ में बुदबुदा रूपी शरीर लाखों मर मिटे और उत्पन्न भी हुए, पर मैं नित्य अद्वैत रूपी समुद्र ही हूँ, और मुझमें नानत्व-रूपी लहरें केवल धोखा है ।
(२) मेरा जो हृदय है वह पूर्व है जहाँ से प्रकाशस्वरूप आत्मा का सूर्य प्रकट होता है, और मेरे हृदय-नेत्र की पलकों का खुलना ही आनन्द के प्रातःकाल का चढ़ना है । अर्थात् आत्मा के साक्षात्कार का स्थान हृदय है, और हृदयनेत्र के खुलते ही प्रसन्नता उदय होती है ।
(३) मेरी वाणी आनन्द की बहार की ख़ुशख़बरी सुनाती है और उक्त वाणी से शब्द रूपी मोतियों के झरने से दीपमाला का समां बंध जाता, अर्थात् ज्ञान का प्रकाश चारों ओर फैल जाता है ।

---

१ देह का बदबुदा, २ अद्वैत का समुद्र अथवा अद्वैत रूप समुद्र, ३ नानत्व, अगणित, अनेकता अर्थात् द्वैत केवल धोखा है, ४ हृदय, ५ पूर्व, ६ प्रकाशस्वरूप आत्मा (सूर्य) का पूर्व स्थान हृदय है, ७ आनन्द की प्रातः का उदय स्थान, ८ खुलना, ९ आँख अर्थात् ज्ञान नेत्र की पलकें, १० ईद अर्थात् निजानन्द की बहार, ११ खुशख़बरी, आनन्द की सूचना, १२ मोती, यहाँ अभिप्राय शब्दों से है, १३ ज्ञानरूपी दीपकों का आलोक अर्थात् चारों ओर ज्ञान का प्रकाश ही प्रकाश हो गया ।

सरापानूर[1] पेशानी[2] पै मेरी मह[3] दरख्शां[4] है।
कि झूमर[5] है जबीं[6] सीमीं पै गिर्जाये-ज़िमिस्तां[7] का ।।
खुशी से जान जामे[8] में नहीं फूली समाती अब।
गुलों[9] के बार[10] से टूटा, यह लो दामाँ[11] बियाबाँ का ।।
चमन में दौर[12] है जारी, तरब[13] का, चहचहाने का।
चहकने में हुआ तबदील, शेवन[14] मुर्गे-नालाँ[15] का ।।

---

(४) मेरे चमकीले ललाट (पेशानी) पर अर्थात् पर्वतों की शिखर पर चाँद ऐसे चमक रहा है कि मानो पार्वती के चांदी रूप चमकीले माथे पर झूमर लटक रहा है।

(५) आनंद इतना बढ़ गया कि प्राण भी अब तन के भीतर फूले नहीं समाते, अथवा राम को पर्वतों में एक स्थान पर अब स्थिर होने देते। बल्कि जैसे पुष्पों के बोझ से वन का पल्ला टूट गया कहलाता है, या पुष्प अपनी अधिकता के कारण वन से बाहर उड़ आते हैं, वैसे ही राम भी इस निजानन्द के बढ़ने से पर्वतों से नीचे उतरा कि उतरा।

(६) इस संसार रूपी उपवन में आनन्द के चहचहाने का समय जारी है और इस चहचहाहट से पक्षियों का रोना भी चहकने में बदल गया है।

---

१ प्रकाशमान् व प्रकाश से पूर्ण, २ माथा, बरफ़ से अभिप्राय है, ३ चाँद, ४ प्रकाशमान् ५ माथे पर लटकने वाला ज़ेवर (गहना), ६ चाँदी जैसी चमकीली पेशानी (बर्फ) पर, ७ शीत स्वरूप पार्वती (उमा), ८ भीतर के खाने रूपी पल्ले में, ९ पुष्प, फूल, १० बोझ, ११ पल्ला, मुराद जंगल का तट या किनारा, १२ समय का चक्कर, १३ खुशी, १४ रुदन, शोक, खेद, विलाप, १५ रोते हुए पक्षियों का,

निगाहे-मस्त[१६] ने जब राम की आमद[१७] की सुन पाई ।
है मजमा[१८] सैद[१९] होने को यहाँ वहशी ग़ज़ालाँ[२०] का ।।

(१४)

आत्मप्रकाश

राग देश, ताल धमार

मैं पड़ा था पहलू[१] में राम के, दोनों एक नींद में लेटे थे ।
मेरा सीना[२] सीने पै उसके था, मेरा सांस उसका तो सांस था ।।
आई चुपके-चुपके से रौशनी, दिये बोसे[३] दीदों[४] पै नाज़ से ।
लम्बी पतली लाल सी उँगलियों से खुशी से गुदगुदा दिया ।।

कुछ तुमको आज दिखाऊँगी ऐसा कहके हाय सुला दिया ।
यह जगा दिया कि सुला दिया, जाने किस बला में फँसा दिया ।
ऐ लो ! क्या ही नक्शा जमा दिया, कैसा रंग जादू रचा दिया ।।

चली निरख कर हमें साथ ले, करी सैर हाथों में हाथ दे ।
मचे खेल आँखों में आँख दे, गुल[५] वलवला[६] सा बपा किया ।।

---

(७) मस्त पुरुष की दृष्टि ने जब राम के आने की खबर सुनी तो दर्शन की प्रतीक्षा (इन्तज़ार) लोग ऐसे करने लगे कि मानो जंगली मृगों का समूह देखने को उत्सुक है (अर्थात् जैसे मृग जल के इन्तज़ार में टकटकी बाँधे रहते हैं, वैसे सब लोग राम के इन्तज़ार में लगे हैं ।)

---

१६ मस्त पुरुष की दृष्टि, १७ आगमन, १८ समूह १९ शिकार होने, लट्टू होने अर्थात् वारे जाने को, २० जंगली मृग ।

१ पास, एक ओर, समीप, २ छाती, ३ चुंबन, ४ नेत्र, ५ शोर ६ हलचल ।

इक शोर ग़ौग़ा[1] उठा दिया, निज धाम को तो भुला दिया।
मुँह राम से तो मुड़ा दिया, आरामे-जाँ[2] को मिटा दिया ॥
थक हार कर झख मारकर, हर मू[3] से बोला पुकार कर।
अरी नाबकारह[4] रौशनी ! अरी चकमा[5] तू ने भला दिया ॥
ख़न्दी[6] बाल[7] तेरी सफ़ेद हैं, बालों में रंग भरे है तू।
गुलगूना[8] मुंह पै मले है तू, नटनी सा रूप बना लिया ॥
रुख़[9] देखिये तो है फ़क़[10] तेरा, दिल गर्दिशों[11] से है शक़[12] तेरा।
तू उड़ती पहिये से धूल है, रथ राम ने जो चला दिया ॥
कहो किस जवानी के ज़ोर पर, तूने हमको आके उठा दिया।
यूँ[13] कहके किस्सा समेट कर, दिल जाँ से यार लपेट कर ॥
फिर लम्बी तानों में पड़ गया, गोया[14] ग़ैरे-राम[15] जला दिया।
अभी रात भर भी न बीती थी कि लो रौशनी को हवा लगी ॥
नये नख़रे टख़रे से प्यार से, मेरे चश्म-ख़ाने[16] को वा[17] किया।
कुछ आज तुमको दिखाऊँगी, ऐसा कहके हाय ! नचा[18] दिया।
कहूँ क्या ? जी ! भर्रे[19] में आ गये, कैसा सब्ज़ बाग़ दिखा दिया ॥
लड़ भिड़ के आख़िर शाम को, कह अल्विदा सब काम को।
आग़ोश[20] में ले राम को, तन उसके मन में छिपा दिया ॥

---

१ शोर, हुल्लड़, धूम, २ जीवन के चैन को, ३ बाल, रोम, ४ नाकारी, बेहूदा, नटखटी, ५ धोखा, ६ ऐ निर्लज्ज, ७ बाल से अभिप्राय रौशनी की किरणें हैं, ८ पाऊडर, ६ मुख, १० मुरझाया हुआ, ११ काल के चक्कर से, १२ फटा हुआ, टूटा हुआ, १३ ऐसे, १४ मानो, १५ राम से भिन्न को, १६ मेरे भीतर के नेत्र वा मेरी भीतरी दृष्टि, १७ खोल दिया, १८ नीचा दिखा दिया, १६ चकमे, धोखे, २० बग़ल।

लेकिन फिर आई रौशनी, लो ! दम दिलासा चल गया ।
और फिर वही शैतानियाँ, फिर वैसी ही कारस्तानियाँ[1] ।
हँसने में और खँसने में फिर दिन भर को योंही बिता दिया ।।
बेहूदा टाल मटोल, जी[2] यारों का फिर उकता गया ।
हम सो गये जाग उट्ठे फिर, यों ही अलाहाज़ुल[3] क़यास ।।
वादा[4] न अपना रौशनी ने एक दिन ईफ़ा[5] किया ।
थकने न पाई रौशनी, मामूल पर हाजिर थी यह ।
उमरों पै उमरें हो गई, इसका तवातर[6] दौर था ।।
किस धुन में सब इक़रार थे, क्यों दिन ब दिन यह मदार[7] थे ।
किस बात के दर पै थी यह ? मस्तो-खराब-मै[8] थी यह ?
यह तो मुअम्मा[9] ना खुला, सदियों का अर्सा[10] हो गया ।।
हर बात जो समझी अजब, पास जा देखा तो तब ।
खाली सुहानां ढोल था, धोका था, फ़ितनये[11] ग़ौल था ।।
सब गुङ्गो-कर[12] अशजार[13] थे, चपो रास्त[14] सब अग़यार[15] थे ।
सब यार दिल पर वार थे, और बे ठिकाना कार था ।।
अपना तो हर शब[16] रूठ जाना, रौशनी का फिर मनाना ।
आज और कल और रोज़ो-शब की क़ैद ही में तलमलाना ।।
सब मेहनतें तो थीं फ़िज़ूल, और कार नाहमवार[17] था ।।

---

१ चालाकियां, २ चित्त, ३ उपरोकत की समान, ४ इक़रार, ५ पूरा किया, ६ निरन्तर, ७ टिकाव, ठहराव, ८ मस्त करने और बेहोश करने वाली मदिरा ९ रहस्य, १० काल, समय, ११ चालाक भूत वा शैतान, १२ गूंगे बहरे १३ वृक्ष, १४ दायें वायें, १५ अन्य लोग, अनात्म पदार्थ, १६ रात्रि, १७ बेढंगा ।

वह रौशनी का साथ चलना, अपना न हरगिज़ उसको तकना ।
वह रौशनी के जी[1] की हसरत[2], हमको न परवा बल्कि नफ़रत,
सूदो-ज़ियाँ[3] बीमो-रजा[4] की रगड़ कारे-ज़ार[5] था ॥
योंहि रफ़ता रफ़ता पड़े कभी, कभी उठ खड़े थे, मरे कभी ।
कभी शिक्मे-मादर[6] घर हुआ, कभी ज़न[7] बोसो-कनार[8] था ॥
बढ़ना कभी, घटना कभी, मद्दो-जज़र[9] दुश्वार था ।
गरज़ इन्तिज़ारो-कशाकशी[10], दिन रात सीना-फ़िगार[11] था ॥
क्या ज़िन्दगी यह है बगोले की तरह पेचाँ[12] रहे ?
और कोरे-सग[13] बनकर शिकारे-बाद[14] में हैराँ रहे ?
लो आख़िरश आया वह दिन, इक़रार पूरा हो गया ।
सदियों की मंज़िल कट गई, सब कार पूरा हो गया ॥
हाँ ! रौशनी है सुर्ख़रू, तेरा वादा आज वफ़ा[15] हुआ ।
तेरे सदक़े सदके मैं नाज़नीं ! कुल भेद आज फ़िशा[16] हुआ ॥
उमरों का उक़दा[17] हल हुआ, क़ुफ़लो-गिरह[18] सब खुल गये ।
सब कब्ज़ो-तंगी उड़ गई, पाप और शुबहे सब घुल गये ॥
सब ख्वाबे दुई[19] मिट गया, दीदे[20] अजब यह खुल गये ॥

---

१ चित्त, २ शोक, ३ लाभ-हानि, ४ भय और आशा, ५ युद्ध, ६ माता का पेट वा गर्भ, ७ स्त्री, ८ चुम्बन और आलिंगन प्यार, ९ ज्वार भाटा, चढ़ाव उतार, १० खैंचातानी, ११ घायल चित्त, १२ पेच खाती रहे, १३ अन्धा कुत्ता, १४ पवन के शिकार, १५ पूरा, १६ अफ़शाँ, प्रकट, १७ घुन्डी खुल गई, मुश्किल हल हो गई, १८ ताले और गाँठें, १९ द्वैत रूपी सपना, २० नेत्र ।

ऐ रौशनी ! ऐ रौशनी ! खुश हो मैं तेरा यार हूँ ।
खाविन्द[1] घरवाला हूँ मैं, पुश्तेपनाह-सरकार[2] हूँ ।।
वह राम जो मा ूद[3] था, साया था मेरे नूर[4] का ।
क्या रौशनी, क्या राम, इक शोला[5] है, मेरे तूर[6] का ।।
इन आँसुओं के तार के सेहरे से चेहरा खिल उठा ।
क्या लुत्फ़ शादी मर्ग[7] है, हर शै[8] से शादी वाह ! वाह !
हाँ! मुज़दाबाद[9] ऐ साँप सग! ऐ ज़ाग़[10], माही[11], चील, गिद्ध !
इस जिस्म से कर लो ज़ियाफ़त, पेट भर भर वाह ! वाह !!
आनन्द के चश्मे के नाके[12] पर यह जिस्म[13] इक बन्दा था ।
वह बह गया बन्दे-खुदी[14], दरिया बहा है वाह ! वाह !!
सब फ़र्ज़ क़र्ज़ और ग़र्ज़ के अमराज़[15] एकदम उड़ गये !
हल फिर गया ज़ेरो[16]-ज़बर पर और सुहागा वाह ! वाह !!
दुनिया के दल बादल उठे थे, नज़रे-ग़लत अन्दाज़[17] से ।
लो इक निगाह से चुक गया सारा सियापा वाह ! वाह !!
तन नूर से भरपूर हो, मामूर[18] हो, मसरूर[19] हो ।
वह उड़ गया, जाता रहा, पुर नूर हो, काफ़ूर हो ।।
अब शब कहाँ ? और दिन कहाँ ? फ़र्दा[20] है नै इमरोज़[21] है ।
है इक सरूरे-लातग़य्युर[22] ऐश है नै[23] सोज़[24] है ।।

१ पति, स्वामिन्, २ तेरा सहायक, स्वामी, ३ पूजनीय, ४ प्रकाश, ५ ज्वाला, ६ अग्नि का पर्वत ७ प्रसन्नता पूर्वक मृत्यु का आनन्द, ८ प्रत्येक पदार्थ, ९ प्रसन्न हो, १० काग, मछली, १२ मुख, द्वार, १३ शरीर, १४ अहंकार रूपी बन्धन, १५ रोग, १६ ऊँच नीच, बड़े छोटे, १७ ग़लत ढंग की दृष्टि, अज्ञान, १८ पूर्ण, १९ खुश, २० कल, २१ आज, २२ विकार रहित आनन्द, २३ नहीं, २४ जलन, दुःख ।

उठना कहाँ? सोना कहाँ? आना कहाँ? जाना कहाँ?
मुझ वहरे-नूरो-सरूर[१] में, खाना कहाँ? पाना कहाँ?
मैं नूर हूँ, मैं नूर हूँ, मैं नूर का भी नूर हूँ।
तारों में हूँ, सूरज में हूँ, नज़दीक से नज़दीक हूँ और दूर से भी दूर हूँ॥
मैं मादनो-मखज़न[२] हूँ, मैं मम्बा[३] हूँ चश्मए-नूर का।
आरामगाह[४], आरामदेह[५], हूँ रौशनी का नूर का॥
मेरी तजल्ली[६] है यह नूरे-अक्ल[७]-ओ-नूरे-अनसरी[८]।
मुझसे दुरखशां[९] हैं यह कुल अजरामे[१०]-चर्खे-चम्बरी[११]॥
हाँ! ऐ मुबारक रौशनी! ऐ नूरे जाँ[१२]! ऐ प्यारी "मैं"।
तू राम और मैं एक हैं, हाँ एक हैं, हाँ एक हैं॥
हर चश्म[१३], हर शै[१४] हर बशर[१५], हर फ़हम[१६], हर मफहूम[१७] में।
नाज़िर नज़र[१८] मंजूर मैं, आलिम[१९] हूँ मैं, मालूम मैं॥
हर आँख मेरी आँख है, हर एक दिल है दिल मेरा।
हाँ! बुलबुलो-गुल, मेहरो-मह[२०] की आँख में है तिल मेरा॥
वहशत[२१] भरे आहू[२२] का दिल, शेरे-बबर का क़हर[२३] का।
दिल आशिक़े-बेदिल का प्यारे, यार का और दहर[२४] का॥
अमृत भरे स्वामी का दिल, और मार पुर-अज़-ज़हर[२५] का।
यह सब तजल्ली[२६] है मेरी, या लहर मेरे बहर का॥

---

१ आनन्द और प्रकार के समुद्र में, २ खान और भण्डार, ३ निकास, स्रोत, ४ आराम का स्थान, ५ आराम देनेवाला, ६ तेज, ७ बुद्धि का तेज, ८ पंच भौतिक तेज, ९ चमकते, १० तारा गण, ११ गोल आकाश वा आकाश मण्डल के, १२ प्राण के तेज, १३ चक्षु, १४ वस्तु, १५ मनुष्य (जीव जन्तु), १६ समझ, ज्ञान, १७ समझा हुआ, ज्ञात, १८ दृष्टा, दर्शन, दृश्य, १९ ज्ञानी २० सूर्य-चाँद, २१ घबराहट भरे, २२ मृग, २३ ज़बर्दस्ती काटने वाला, २४ काल, समय का, २५ ज़हरीले सर्प का, २६ प्रकाश।

इक बुलबुला है मुझमें सब, ईजादे[1]-नौ, ईजादे-नौ[2]।
है इक भँवर मुझ में यह मर्गे-नागहाँ[3] और ज़ादे[4] नौ ।।
सोये पड़े बच्चे को वह जाली उठाकर घूरना।
आहिस्ता से मक्खी उड़ाना, तिफ़्ल[5] का वह बिसूरना ।।
वह दो बजे शब को शफ़ाखाने में तिशना[6] मरीज़ को।
उठकर पिलाना सोडावाटर काट अपनी नींद को ।।
वह मस्त हो नंगे नहाना, कूद पड़ना गङ्ग में।
छींटे उड़ाना, गुल मचाना, ग़ोते खाना रङ्ग में ।।
वह मां से लड़ना, ज़िद में अड़ना, मचलना, एड़ी रगड़ना।
वालिद से पिटना और चिल्लाते हुए आँखों को मलना ।।
कालिज के साइन्स रूम में, गैसों से शीशे फोड़ना।
बारूद और गोलों से सफ़ दर सफ़[7] सिपाहें तोड़ना ।।
इन सब चालों में हम ही हैं, यह मैं ही हूँ, यह हम ही हैं ।।
गर्मी का मौसम सुबहदम, साअ़त[8] है दो[8] या तीन[8] का।
खिड़की में दीवा देखते हो टिमटिमाता टीन का ।।
दीवे पे पर्वाने हैं गिरते, बेख़ुदी में बार बार।
बेचारा लड़का कर रहा है इल्म[9] पर जाँ को निसार ।।
बेचारे तालिब-इल्म[10] के चेहरे की ज़र्दी है मेरी।
बेनींद लम्बे साँस और आहों की सर्दी है मेरी ।।
इन सब चालों में मैं ही हूँ, यह हम ही हैं, यह हम ही हैं ।।
है लहमहाता खेत, पुरवा चल रही है ठुम ठुमक।
गाढ़े की धोती, लाल चीरा चौधरी की लट लटक।

१ नई ईजाद, आविष्कार, २ नई उन्नति, ३ अचानक मृत्यु, ४ नई उत्पत्ति, ५ बच्चा, ६ प्यासा, ७ पंक्तिवार ८ दो या तीन बजे हैं, ६ विद्या, १० विद्यार्थी।

जोशे - जवानी ! मस्त, अलगोजा बजाना उछलना ।
मुगदर घुमाना, कुश्ती लड़ना, पिछड़ना और कुचलना ।।
छकड़ा लदा है बोझ से, हिचकोले खाता बार बार ।
वह टाँग पर धर टाँग पड़ना, बोझ ऊपर हो सवार ।।
शिद्दत[१] की गर्मी, चील अण्डे के समय, सरे[२] - दोपहर ।
जा खेत में हल का चलाना, अर्क़[३] में हो तरबतर ।।
और सर पै लोटा छाछ का, कुछ रोटियाँ, कुछ साग धर ।
भत्ता उठा कुत्ते को ले, औरत[४] का आना ऐंठ कर ।।
इन सब चालों में हम ही हैं, यह मैं ही हूं, यह हम ही हैं ।
दुलहन का दिल से पास आना ज़रा रुकना, झिझक जाना ।।
शर्मो - हया का इश्क के चंगुल में रह रह कर के आना ।
वह माहे - गुलरू[५] के गले में डाल बाहें प्यार से ।।
ठण्डे चश्मों के किनारे, बोसाबाजी[६] यार से ।
हाँ ! और वह चुपके से छिपकर, आड़ में अशजार[७] के ।
बेदाम ख़ुफ़िया पुलिस बनना, राम की सरकार के ।।
इन सब चालों में हम ही हैं, यह मैं ही हूं, यह हम ही हैं ।
यह सब तमाशे हैं मेरे, यह सब मेरी करतूत हैं ।।
वह इस तरफ़ खा खा के मरना, उस तरफ़ फ़ाक़ों से गुम ।
वह बिलबिलाना जेल में, जंगल में फिरना सुम बुकुम[८] ।।
और वह गदेले कुर्सियाँ, तकिये बिछौने, बग्गियाँ ।
सब मादरे - सुस्ती बवासीरो - ज़ुकाम और हिचकियाँ ।।

---

१ अत्यन्त गर्मी, २ सारी, ३ पसीने से मुराद है, ४ स्त्री । ५ चन्द्रमुख प्रिया, ६ चुम्बन का लेना, ७ वृक्षों, ८ बहरे और गूंगे ।

यह सब तमाशे हैं मेरे, यह सब मेरी करतूत है।
वह रेल में या तार घर में महल क्वारिन्टीन में ॥
रूस, अमरीका ईरान में, जापान में या चीन में।
दुःखड़े सुनाना, सिसकना, खून बहाना ज़ार ज़ार ॥
वह खिलखिलाना क़हक़हों और चहचहों में बार बार।
वह वक्त पर बारिश न लाना, हिन्द में या सिन्ध में ॥
फिर राम को गाली सुनाना, तंग होकर हिन्द में।
वह धूप से सब को मिसाले-मुर्ग़ बिरियाँ[1] भूनना ॥
बादल की साड़ी को किनारी चाँदनी से गूंदना।
चुप होके खानी गालियाँ, साले से उस शिशुपाल से[2] ॥
खुश हो सलीबो-दार[3] पर, चढ़ना मुबारक हाल से।
यह कुल तमाशे है मेरे, यह सब मेरी करतूत हैं ॥
इन सब चालों में हम ही हैं, यह मैं ही हूं, यह हम ही हैं।
मोहताज[4] के, बीमार के, पापी के और नादार[4] के ॥
मैं हमलब-ओ-हमबग़ल[5] हूँ, हमराज़[6] हूँ बेयार[7] के।
सुनसान शब[8] दरिया किनारे हैं खड़े डटकर तो हम ॥
और क़ैदे-तख्तो-ताज में गर हैं पड़े जकड़े तो हम।
सस्ते से सस्ते हैं तो हम, मँहगे से मँहगे हैं तो हम ॥
ताज़ा से ताज़ा हैं तो हम, सब से पुराने हैं तो हम।

---

१ भूने हुए पक्षी के सदृश, २ इस सारी पंक्ति से कृष्ण भगवान् का गाली खाना अभिप्रेत है, ३ सलीब पर चढ़ने से महात्मा मसीह से अभिप्राय है और सूली पर चढ़ने से मंसूर से, ४ ग़रीब निर्धन, ५ नितान्त समीप, ६ भेद जाननेवाला, ७ अनाथ, ८ रात्रि।

वाहिद[1] हूँ, मुझ को मेरा ही सिजदा[2] सलाम है।
मेरी नमस्ते मुझको है और राम राम है॥
जानते हो? आशिक़-ओ-माशूक़[3] जब होते हैं एक।
बेशुबह[4] मेरी ही छाती पर बहम[5] सोते हैं नेक॥
पुण्य में और पाप में, हर बाल, साँस और माँस में।
दूर कर आँखों से परदा, देख जल्वा[6] घास में॥
कुछ सुना तुमने? अजब चालें मेरी चालाकियाँ।
बे-हिजाबाना[7] करिश्मे, लाधड़क बेबाकियाँ[8]॥
हाँ, करोड़ों ऐब, जुर्म, अफ़आले-नेक[9], आमाले-ज़िश्त[10]।
मुझमें मुतसव्वर[11] हैं दोज़ख, मैकदह[12], मसजिद, बहिश्त॥
मार देना, झूठ बकना, चोरी-यारी और सितम[13]।
कुल जहाँ के ऐब रिन्दाना[14] पड़े करते हैं हम॥
ऐ ज़मीं के बादशाहो! पण्डितो, परहेज़गारो[15]।
ऐ पुलिस! ऐ मुद्दई, हाकिम, वकील, ऐ मेरे यारो!
लो बता देते हैं तुमको राज़े-खुफ़िया[16] आज हम।
अपने मुंह से आप ही इक़रार खुद करते हैं हम॥
"ख्वाह चोरी से कि यारी से खपा लेता हूँ मैं।
सब की मिलकीयत को, मक़बूज़ात[17] को और शान को"॥

---

१ अद्वैत, एक अकेला, २ झुकना, प्रणाम, ३ प्रेमी और प्रिया, ४ निःसन्देह, ५ एकत्र ६ दर्शन, ७ पर्दा रहित करामात, ८ निर्भयता, निडरपन, ६ पुण्य कर्म, १० पाप कर्म, ११ कल्पित, १२ शराब खाना, १३ जुलम, १४ निर्भय वा निहङ्ग होकर, १५ व्रत और तप करने वाले, १६ गुह्य, भेद, १७ अधिकार सम्पति।

यह सितम, यारो ! कि हरगिज़ भी तू सह सकता नहीं ।
ग़ैर-ख़ुद[1] के ज़िक्र को, या नाम को कि निशान को ।।
ख़ुदकुशी[2] करते हैं सब क़ानून, तनक़ीह-ओ-जिरह[3] ।
दूर ही से देख पाते हैं जो मुझ तूफ़ान को ।।
कुल जहाँ सब एक ख़र्राटा है मस्ती में मेरा ।
ऐ ग़ज़ब[4] ! सच कर दिखाता हूँ मैं इस बोहतान[5] को ।।
क्या मज़ा हो, लो भला दौड़ो, मुझे पकड़ो,
　　　　मुझे पकड़ो, मुझे पकड़ो कोई ।
रिन्दमस्तों का शहनशा हूँ मुझे पकड़ो,
　　　　मुझे पकड़ो, मुझे पकड़ो कोई ।।
सीना ज़ोरी[6] और चोरी छेड़ - छाड़ अठखेलियाँ ।
चुटकियाँ सीना में भरता हूँ, मुझे पकड़ो कोई ।।
खा के माखन, दिल चुराकर, वह गया मैं वह गया ।
मारकर मैं हाथ हाथों पर यह जाता हूँ मुझे पकड़ो कोई ।।
रात दिन छुप कर तुम्हारे बाग में बैठा हूँ मैं ।
बाँसुरी में गा बुलाता हूँ, मुझे पकड़ो कोई ।।
आइयेगा, लो उड़ा दीजियेगा मेरे जिस्म[7] को ।
नाम मिट जाने से मिलता हूँ मुझे पकड़ो कोई ।।
दस्तो-पा[8], ओ गोशो-दीदा[9], मिस्ले-दस्ताना[10] उतार ।
हुलिया सूरत को मिटाता हूँ, मुझे पकड़ो कोई ।।

---

१ अपने से अतिरिक्त या भिन्न, २ आत्म-घात, ३ जाँच पड़ताल । ४ आश्चर्य, ५ झूठ, ६ ज़बरदस्ती, ७ शरीर, ८ हाथ पाँव, ९ कान और आँख, १० दस्ताना की तरह ।

साँप जैसे कैंचुली को, फेंक नामो-नङ्ग,[११] को ।
बे सिलह[१२] के वश में आता हूँ, मुझे पकड़ो कोई ।।
नट गया, वह नट गया ! नटकर भला जाये कहाँ ।
मुंह तो फेरो ! यह खड़ा हूँ, लो ! मुझे पकड़ो कोई ।।
आते आते मुझ तलक, मैं ही तो तुम हो जाओगे ।
आपको जकड़ो ! अगर चाहो मुझे पकड़ो कोई ।।
आतिशे-सोज़ा[१३] हूँ, मुझ में पुण्य क्या और पाप क्या ।
कौन पकड़ेगा मुझे ? और हाँ ! मेरा पकड़ेगा क्या ? ।।

(१५)

गज़ल, ताल क़वाली

जब उमड़ा दरिया उल्फ़त[१] का, हर चार तरफ़ आबादी है ।
हर रात नई इक शादी है, हर रोज़ मुबारकबादी है ।
ख़ुश[२] ख़न्दां है रंगीं गुल का, ख़ुश शादी शाद मुरादी है ।
बन सूरज आप दुरख़शां[३] है, ख़ुद जंगल है ख़ुद वादी[४] है ।
नित राहत है नित फ़रहत है नित रंग नये, आज़ादी है ।
हर रग रेशे में, हर मू[५] में अमृत भर-भर भरपूर हुआ ।
सब कुल्फ़त[६] दूरी दूर हुई, मन शादी[७]-ए-मर्ग से चूर हुआ ।
हर वर्ग[८] बधाइयां[९] देता है, हर ज़र्रा[१०] ज़र्रा तूर[११] हुआ ।

(१) जब प्रेम का समुद्र बहने लगा तो हर तरफ से प्रेम की बस्ती नज़र

११ लज्जा और निर्लज्जा, १२ बिना हथियारों का प्रयोग किये अर्थात् बिना लड़े, १३ जला देने वाली अग्नि ।

१ प्रेम, २ अच्छा खिला हुआ, ३ प्रकाशमान, ४ आबाद स्थान, ५ सिर का बाल, ६ जुदाई का कष्ट, दुःख, ७ अनन्त आनन्द के बढ़ने से जो मृत्यु होती है, ८ प्रत्येक पत्ता, ९ स्वस्ति वाचन, १० परमाणु ११ अग्नि का पर्वत ।

जो है सो है अपना मज़हर[1], ख्वाह आबी[2] नारी[3] बादी[4] है ।
क्या ठंडक है, क्या राहत[5] है, क्या शादी[6] है, आज़ादी है ।।
रिम-झिम, रिम-झिम आँसू बरसें, यह अब्र[7] बहारें देता है ।
क्या खूब मज़े की बारिश में वह लुत्फ़ वस्ल[8] का लेता है ।
किश्ती मौजों में डूबे है, बदमस्त उसे कब खेता[9] है ।
यह गर्क़ाबी[10] है जी[11] उठना, मत झिझको, उफ़ बरबादी है ।
क्या ठंडक है, क्या राहत है, क्या शादी है, आज़ादी है ।।

आने लगी। अब सुंदर पुष्प की तरह हँसना और खिलना रहता है, नित्य चित्त को प्रसन्नता और आनन्द है । आप ही सूर्य बन कर चमक रहा है और आप ही जंगल, बस्ती बन रहा है, अहा ! कैसा नित्य आनन्द है, नित्य शांति है, नित्य सब प्रकार ख़ुशी और आज़ादी हो रही है ।

(२) हर रग और नाड़ी में तथा रोम-रोम में आनन्द रूपी अमृत भरा हुआ है । जुदाई के सब दुःख और कष्ट दूर हो गये और मन (अहंकार) मरने (मौत) की ख़ुशी से चूर हो गया है, अब प्रत्येक पत्ता बधाइयाँ दे रहा है, क्योंकि परमाणु मात्र भी इस ज्ञानाग्नि से अग्नि के पर्वत की तरह प्रकाशमान हो गया । अब जो है सो सब अपना ही झांकी-स्थान या ज़ाहिर होने का स्थान है । ख्वाह वह पानी का जीव है, ख़्वाह अग्नि का और ख्वाह हवा का जीव है, सब कुछ वास्तव में मुझे जाहिर करनेवाले हैं ।

(३) आनन्द की वर्षा से आँसू रिम झिम बरस रहे हैं, और यह आनन्द का बादल क्या अच्छी बहार दे रहा है, । इस जोर की वर्षा में वह चित्त क्या खूब अभेदता (एकता) का आनन्द ले रहा है । शरीररूपी किश्ती तो आनन्द की लहरों में डूबने लग रही है,

---

१ झाँकी का स्थान, ज़ाहिर होने का स्थान, २ पानी से उत्पत्ति वाला, ३ अग्नि से उत्पत्तिवाला, ४ वायु से उत्पत्तिवाला, ५ आराम, ६ प्रसन्नता, खुशी ७ बादल, ८ अभेदता, एकता, ९ चलाता है, १० डूब जाना, ११ ज़िन्दा हो जाना या जीवित होना ।

मातम, रंजूरी[1] बीमारी, ग़लती, कमज़ोरी, नादारी[2]।
ठोकर ऊँचा नीचा, मिहनत जाती है उन पर जां वारी।
इन सब की मददों के बाइस[3] चश्मा मस्ती का है जारी।
गुम शीर[4], कि शीरीं तूफ़ां में कोह[5] और तेशा फ़रहादी है।
क्या ठंडक है, क्या राहत है, क्या शादी, क्या आज़ादी है॥
इस मरने में क्या लज्ज़त है जिस मुंह को चाट[6] लगे इसकी।
थूके है शाहंशाही पर, सब नियामत दौलत हो फीकी।
मय[7] चाहिए? दिल सिर दे फूंको, और आग जलाओ भट्टी की।
क्या सस्ता बादा[8] बिकता है, "ले लो" का शोर मुनादी है।
क्या ठंडक है, क्या राहत है, क्या शादी, क्या आज़ादी है॥

मगर वह सच्चा आनन्द में उन्मत्त उसे कब लेता है? (वह तो शरीर का ख्याल नहीं करता) क्योंकि उसके लिए यह देहाध्यास का डूबना वास्तव में जी उठना है, इसलिए ऐ प्यारो! इस मौत से मत झिझको (क्योंकि झिझकने में अपनी बरबादी है)। इस मृत्यु में तो क्या ही ठंडक है, क्या ही आराम है, और क्या ही आनन्द और क्या ही स्वतंत्रता है, इसका वर्णन नहीं हो सकता।

(४) रोना, पीटना, शोक, चिन्ता, बीमारी, गलती, कमजोरी, निर्धनता, नीच-ऊँच ठोकर और पुरुषार्थ, इन सब पर प्राण वारे जा रहे हैं। इन सब की सहायता से मस्ती का समुद्र बह रहा है। प्रिया शीरीन् के इश्क़ में फ़र्हाद का तेशा पर्वत और शीरी लोप हो रहे हैं। इस लोप होने में क्या शान्ति है, क्या आराम है, क्या आनन्द और क्या ही आज़ादी मिल रही है।

(५) इस मरने में क्या ही आनंद (लज्ज़त) है, जिस मुंह को इस लज्ज़त

---

१ रोना, पीटना, शोक, चिन्ता, २ निर्धनता, जिस समय पास कुछ न हो, ३ कारण, ४ मीठी नदी जो अपनी प्रिया (शीरीं) के इश्क़ (प्रेम) में फ़रहाद पहाड़ पर से तोड़कर मैदान में लाया था, ५ पर्वत, ६ चटक स्वाद, लज्ज़त, ७ शराब, ८ आनन्द रूपी शराब।

इल्लत[1] मालूल[2] में मत डूबो, सब कारज कारण तुम ही हो ।
तुम ही दफ़्तर से ख़ारिज हो, और लेते चारज तुम ही हो ।
तुम ही मसरूफ़ बने बैठे, और होते हारिज[3] तुम ही हो ।
तू दाविर[4] है तू वुकला[5] है, तू पापी तू फ़र्यादी है ।
नित फ़रहत है, नित राहत है, नित रंग नये आज़ादी है ।
दिन शब[6] का झगड़ा न देखा, गो सूरज का चिट्टा सिर है ।
जब खुलती दीदये-रौशन[7] है, हंगामये-ख्वाब[8] कहाँ फिर है ?
आनन्द सरूर[9] समुन्दर है जिसका आग़ाज़[10] न आख़िर है ।

की चटक (स्वाद) लग गई वह शाहंशाही पर थूकता है, और सब धन दौलत (वैभव) फीका हो जाता है । अगर आप को आनन्द की शराब चाहिये, तो दिल और सिर को फूंक कर (इस शराब के वास्ते) उसकी भट्ठी जला दो । वाह ! निजानन्द की शराब (अपने सिर के एवज़) क्या सस्ती बिक रही है, और (कबीर की तरह) "ले लो" "ले लो" का शोर हो रहा है । इस शराब में क्या शान्ति, आराम, आनन्द, और आज़ादी है ।

(६) हेतु (कारण) और फल (कार्य) में मत डूबो, क्योंकि सब कारण कार्य तुम ही हो, और जो दफ़्तर से ख़ारिज होता है अथवा जो नौकर होता है, वह सब तुम आप हो । तुम ही सब काम में प्रवृत्त होते हो । तुम ही उसमें विक्षेप डालने वाले होते हो । तुम ही पापी और फ़र्यादी होते हो । आहा ! नित्य चैन है, नित्य शान्ति है और नित्य राग रंग और आज़ादी है ।

(७) सूर्य यद्यपि आप सफ़ेद है, मगर दिन रात का झगड़ा अर्थात् श्वेत

---

१ कारण, २ कार्य, ३ किसी काम में हरज करने, ४ न्यायकारी, मुंसिफ, जज, ५ वकील, ६ रात, ७ ज्ञान, चक्षु, ८ स्वप्न की दुनिया, स्वप्न का झगड़ा, फ़िसाद, ९ आनन्द, खुशी, १० आदि, शुरू ।

सब राम पसारा दुनिया का जादूगर की उस्तादी है ।
नित फ़रहत है, नित राहत है, नित रंग नये आज़ादी है ॥

(१६)

परज, ताल चलन्त

दरिया से हुबाब[1] की है यह सदा[2] ।
तुम और नहीं, हम और नहीं ॥
मुझको न समझ अपने से जुदा ।
तुम और नहीं, हम और नहीं ॥
जब ग़ुन्चा[3] चमन[4] में सुबह[5] को खिला ।
झट कान में गुल के यह कहने लगा ॥
हाँ आज यह उक़दा[6] है हम पै खुला ।
तुम और नहीं, हम और नहीं ॥
आईना[7] मुकबिले-रुख़[8] जो रखा ।
झट बोल उठा यूं अक्स[9] उसका ॥
क्यों देख के हैरां यार हुआ ।
तुम और नहीं, हम और नहीं ॥

काले का भेद उसमें नहीं देखा जाता, क्योंकि दिन रात तो पृथ्वी के घूमने पर निर्भर हैं । ऐसे ही जब आंख खुलती है तो स्वप्न फिर बाकी नहीं रहता, बल्कि चारों ओर अनन्त और नित्य आनन्द का समुद्र उमड़ता दिखाई देता है । यह संसार ठीक राम का पसारा है, और जादूगर राम की उस्तादी है । इसलिए यहां नित्य चैन है, शान्ति है, और नित्य राग रंग और नई आज़ादी है ।

---

१ बुलबुला, २ आवाज़, ३ पुष्प-कली, ४ बाग, ५ प्रातः ६ भेद या गुह्य रहस्य, ७ शीशा, दर्पण, ८ मुख के सामने, ९ प्रतिबिम्ब ।

दाने ने भला खिरमन[1] से कहा ।
चुप रह इस जा[2] नहीं चूंनो-चरा[3] ।।
वहदत[4] की झलक कसरत[5] में दिखा ।
तुम और नहीं, हम और नहीं ।।
नासूत[6] में आ के यही देखा ।
है मेरी ही ज़ात[7] से नश्वो-नुमा[8] ।।
जैसे पुम्बा[9] से तार का हो रिश्ता[10] ।
तुम और नहीं, हम और नहीं ।।
तू क्यों समझा मुझे ग़ैर[11] बता ।
अपना रुखे-ज़ेबा[12] न हम से छिपा ।।
चिक़ पर्दा उठा, टुक सामने आ ।
तुम और नहीं, हम और नहीं ।।

(१७)

ग़ज़ल ताल पशतो

ठंढक भरी है दिल में आनन्द बह रहा है ।
अमृत बरस रहा है, झिम ! झिम ! ! झिम ! ! !
फैली है सुबहे[1]-शादी, क्या चैन की घड़ी है ।
सुख के छुटे फुहारे, फ़रहत[2] चटक रही है ।।

---

१ दानों का ढेर, खलियान, २ जगह, स्थान, ३ क्यों और कब, वाद-विवाद, ४ एकत्व, ५ नानत्व ६ स्थूल, जगत, ७ स्वरूप, निजात्मा, ८ पालना पोसना वा फलना फूलना, ९ रुई, १० सम्बन्ध, ११ अन्य, १२ सुन्दर मुख ।

१ आनन्द की प्रात:, २ खुशी, आनन्द ।

क्या नूर[1] की झड़ी है, झिम ! झिम !! झिम !!!
शवनम[2] के दिल ने चाहा पामाल[3] करदे गुल[4] को।
सब फ़िक्र मिलके आंई, कि निढाल कर दें दिल को।
आया सबा[5] का झोंका, वह सबाये-रौशनी[6] का
झड़ती है शबनमे ग़म, झिम ! झिम !! झिम !!!
डट कर खड़ा हूँ, खौफ़ से खाली जहान में।
तसकीने[7]-दिल भरी है मेरे दिल में, जान में॥
सूंघें ज़मां[8] मकां[9], मेरे पा को मिसाले-सग[10]।
मैं कैसे आ सकूं हूँ, क़ैदे-बयान[11] में ?
ठंडक भरी है दिल में आनन्द बह रहा है।
अमृत बरस रहा है, झिम ! झिम !! झिम !!!

नोट—यह कविता अंगरेजी कविता Drizzle Drizzle के आधार पर है और उन्ही दिनों लिखी गई, जब कि अन्त में अपना नाम देने का स्वभाव राम से छूट गया था।

(१८)

राग भाग्य, ताल दादरा

इश्क़ का तूफ़ाँ बपा[1] है, हाजते मयख़ाना नेस्त[2]।
खूं शराबो, दिल कवाबो, फ़ुरसते-पैमाना[3] नेस्त॥

(१) प्रेम की उमंग उमड़ी हुई है, अन्य शराबखाने की अब जरूरत नहीं

१ प्रकाश, २ ओस, ३ पैर से मसलना, ४ पुष्प, ५ पूर्वी वायु अर्थात् वह वायु जो पूरब से चल रही हो, अथवा वह पवन जो प्रातःकाल चलती है, ६ प्रकाश रूपी वायु, यहाँ अभिप्राय सूर्य से है, ७ दिल में चैन, शान्ति, आराम, ८ देश, ९ काल, १० कुत्ते के समान, ११ वर्णन के बन्धन में।
१ उठा है, २ शराबखाने की ज़रूरत नहीं है, ३ प्याला पीने का अवकाश नहीं

सख्त मख़मूरी[1] है तारी[2] ख्वाह कोई कुछ कहे।
पस्त[3] है आलम[4] नज़र में वहशते-दीवाना नेस्त[5]॥

अल्विदा[6] ऐ मर्ज़े-दुनिया! अल्विदा ए जिस्मो-जाँ!
ऐ अ़तश[7], ऐ जू[8] चलो, ईं[9] जा कबूतरख़ाना नेस्त॥

क्या तजल्ली[10] है यह नारे-हुस्न[11] शोलाखेज़[12] है।
मार ले पर ही यहाँ पर, ताक़ते-पर्वाना नेस्त॥

है। इस समय अपना रुधिर तो शराब हो रहा है और चित्त कबाब अतएव किसी नशे के प्याले का अब अवकाश नहीं।

(२) प्रेम मदिरा का नशा अत्यन्त चढ़ा हुआ है, इसलिए अब जो चाहे सो कोई कहे, सारा संसार तो तुच्छ हो रहा है। पर यह नशा या मस्ती पागल मनुष्य की पशुवृत्ति नहीं है।

(३) हे जगत् जो एक रोग है! तू अब रुख़सत हो। देह और प्राण तुम भी अब चलो। हे भूख और प्यास! तुम दोनों मेरे पास से परे हटो, यह जगह कोई कबूतरख़ाना (अर्थात् तुम्हारे सदा खाने पीने का घर) नहीं है।

(४) आहा! सौंदर्य की तेज़ ज्वाला कैसी भड़की हुई है। अब किस पतंगे की शक्ति है कि जो इसके आगे पर भी मार सके? अर्थात् इस सुन्दरता से बढ़कर कौन सुन्दरता हो सकती है।

---

१ नशा, २ छाया हुआ, ३ तुच्छ, ४ संसार, ५ पागल पुरुष का वहशीपन (पशुवत व्यवहार) नहीं है। ६ रुख़सत हो, ७ प्यास, ८ भूख, क्षुधा, ९ यह जगह, १० प्रकाश, चमक, ११ सौंदर्य रूप ज्वाला, १२ भड़की हुई।

मेह्[1] हो, मह[2] हो, दबिस्ताँ[3] हो, गुलिस्तां कोह्सार[4] ।
मौजज़न[5] अपनी है ख़ूबी, सूरते-बेगाना नेस्त ।।
लोग बोले गहन[7] ने पकड़ा है सूरज को, ग़लत ।
ख़ुद हैं तारीकी[8] में, बरमन[9] साया महजूबाना[10] नेस्त ।।
उठ मेरी जाँ ! जिस्म से, हो ग़र्क़ ज़ाते-राम[11] में ।
जिस्म[12] बदरीश्वर की मूरत, ह्रकते-फ़रज़ाना[13] नेस्त[14] ।

---

(५) सूर्य हो चाहे चन्द्र, पाठशाला हो चाहे बाटिका और पर्वत, इन सब में अपनी ही सुन्दरता तरंगें मार रही है, अन्य किसी और रूप की नहीं।

(६) लोग कहते हैं कि सूर्य को ग्रहण ने पकड़ रक्खा है, पर यह नितान्त झूठ है, क्योंकि स्वयं तो अन्धकार में होते हैं और प्रकाश स्वरूप सूर्य को अन्धकार में समझने लग जाते हैं। सूर्य कहता है कि मैं अन्धकार नहीं हूँ। जैसे सूर्य का ग्रहण से पकड़े जाना झूठ है और सूर्य वास्तव में ग्रहण से ऊपर होता है, ऐसे ही मुझे अज्ञान रूपी अन्धकार मानना झूठ है और मुझ पर वास्तव में किसी प्रकार का ढाकने वाला पर्दा नहीं है।

(७) हे मेरे प्राण ! इस देह से उठकर राम परमात्मा के स्वरूप में लीन हो जाओ। और देह ऐसी हो जाय, जैसे बदरीनारायणजी की मूर्ति (जड़) कि जिसमें चेतनता की गति भी नहीं है।*

१ सूर्य, २ चन्द्र, ३ पाठशाला, ४ बाग़, ५ पर्वत व पहाड़ी जगह, ६ तरङ्गमयी वा लहराने वाली। ७ ग्रहण, ८ अन्धकार, ६ मुझपर, १० परदे में छुपे के समान छिपाने वाला, ११ राम के स्वरूप, आत्मदेव, राम कवि का नाम भी है, १२ देह, १३ चेतन्यता की गति, १४ भाग्य।

---

*यह कविता सन् १६०२ की दीपमाला में हिमालय के बदरीनारायण के मन्दिर में ग्रहण के समय लिखी गई थी। अतएव इसमें ग्रहण और श्री बदरीनारायणजी का मूर्ति का दृष्टान्त आया है।

(१९)

राग ज़ला ताल दादरा

गुल को शमीम[1], आब[2] गोहर[3] और ज़र[4] को मैं।
देता बहादुरी हूँ बला शेरे-नर[5] को मैं॥
शाहों को रोब[6] और हसीनों[7] को हुस्नो-नाज़[8]।
देता हूँ, जबकि देखूं उठाकर नज़र[9] को मैं॥
सूरज को सोना चाँद को चाँदी तो दे चुके।
फिर भी तवाफ़[10] करते हैं, देखूँ जिधर को मैं॥
अब्रूए[11]-कहकशाँ[12] भी अनोखी[13] कमन्द है।
बस क़ैद हो असीर[14] हो देखूं इधर को मैं॥
तारे झमक झमक के बुलाते हैं राम को।
आँखों में उनकी रहता हूँ, जाऊँ किधर को मैं॥

(२०)

ज्ञानी का आशीर्वाद

बदले है कोई आन[1] में अब रंगे-ज़माना[2]।
आता है अमन[3], जाता है अब जंगे-ज़माना[4]॥

---

१ सुगन्ध, २ चमक, ३ मोती, ४ स्वर्ण, ५ नर शेर, सिंह, ६ दबदबा, प्रभाव, ७ सुन्दर लोग वा सुन्दरियों को, ८ सौंदर्य और नख़रा, ९ दृष्टि, १० मुजरा, नाच, ११ आँखों की भौंहें, १२ आकाश में एक लम्बी सफ़ेदी जो रात्रि के समय नज़र आती है जिसको (milky path) आकाश गंगा करते हैं, १३ विचित्र, १४ क़ैद, बद्ध, आसक्त।

१ घड़ी, २ समय का रंग ढंग, ३ सुख, चैन, ४ युद्ध का समय,

ऐ जेहल[५]! चलो, दर्द उड़ो, दूर हटो हसद[६]।
कमज़ोरी मरो डूब, बस ऐ नंगे-ज़माना[७]॥

ग़म दूर, मिटा रश्क[८], न ग़ुस्सा, न तमन्ना।
पलटेगा घड़ी पल में नया ढंगे ज़माना॥

आज़ाद है, आज़ाद है, आज़ाद है हर एक।
दिलशाद[९] है क्या खूब उड़ा तंगे ज़माना[१०]॥

लो[११] काठ की हँडियाँ से निभे भी तो कहाँ तक।
अग्नि तो जला ज्ञान की दे संगे-ज़माना॥

आती है जहाँ में शहे-मशरिक़[१२] की सवारी।
मिटता है सियाही का अभी ज़ंगे-ज़माना[१३]॥

वह ही जो इधर ख़ार[१४] उधर है गुले-ख़न्दां[१५]।
हो दंग, जो यूं जान ले नैरंगे ज़माना[१६]॥

देता है तुम्हें राम भरा जाम[१७] यह पी लो।
सुनवायेगा आहंग[१८] नये - चंगे - ज़माना[१९]॥

---

५ अविद्या, ६ ईर्ष्या, ७ निर्लज्जता का समय, ८ ईर्ष्या, द्वेष, ९ प्रसन्न चित्त, १० समय की तंगी, मुसीबत, ११ काठ की हंडिया को अग्नि पर रखने से क्या लाभ होगा? यदि कुछ जलाना चाहते हो तो ज्ञानाग्नि पर समय का ग़म रूपी पत्थर रख कर उसे फूंक दो, १२ सूर्य, ज्ञान के सूर्य से तात्पर्य है, १३ समय का कलंक, दाग़, अज्ञान, १४ काँटा, १५ खिला हुआ पुष्प, १६ समय की विचित्रता, १७ निजानन्द की मस्ती का या प्रेम का प्याला, १८ स्वर, १९ समय के बाजे का।

(२१)

जंगल का जोगी

राग भैरवी, ताल तीन

हर हर ओ३म्, हर हर ओ३म् (टेक)
जङ्गल में जोगी बसता है, गह[१] रोता है गह[१] हँसता है ।
दिल उसका कहीं न फँसता है, तन मन में चैन बरसता है ।।
ख़ुश फिरता नंग मनंगा है, नैनों में बहती गंगा है ।
जो आ जाये सो चंगा है, मुख रंग भरा मन रंगा है ।।
गाता मौला[२] मतवाला[३] है, जब देखो भोला भाला है ।
मन मनका[४] उसकी माला है, तन उसका एक शिवाला है ।।
पर्वाह न मरने जीने की, है याद न खाने पीने की ।
कुछ दिन की सुधि न महीने की, है पवन रूमाल पसीने की ।।
पास उसके पंछी[५] आते हैं, और दरिया गीत सुनाते हैं ।
बादल असनान कराते हैं, वृछ[६] उसके रिश्ते नाते हैं ।।
गुलनार[७] शफ़क़[८] वह रंग भरी, जोगी के आगे है जो खड़ी ।
जोगी की निगह[९] हैरां गहरी, को तकती रह रह कर है पड़ी ।।
वह चांद चटकता गुल जो खिला, इस मेह[१०] की जोत से फूल झड़ा !
फ़व्वारा फ़हरत[११] का उछला, फुहार[१२] का जग पर नूर[१३] पड़ा ।।

---

* यह कविता सन् १९०६ में टिहरी के वासिष्ठाश्रम के बन में उन दिनों कही थी जब राम से अन्त में अपना नाम देने का स्वभाव भी छूट गया था ।

१ कभी, २ ब्रह्मज्ञानी, आत्मवेत्ता, ३ मस्त, ४ माला का दाना, ५ पक्षी, ६ वृक्ष, दरख्त, ७ अनार के रंगवाली, ८ लाली जो आकाश में सूर्य के उदय व अस्त समय होती है, ९ दृष्टि, १० सूर्य, ११ खुशी आनन्द, १२ बौछार, १३ प्रकाश, तेज ।

(२२)

ग़ज़ल, ताल क़वाली

हिप हिप हुर्रे। हिप हिप हुर्रे।
अब देवन के घर शादी[1] है, लो! राम का दर्शन पाया है।
पा-कोबां[2] नाचते आते हैं, हिप हिप[3] हुर्रे, हिप हिप हुर्रे॥
खुश खुर्रम[4] हिलमिल गाते हैं, हिप हिप हुर्रे, हिप हिप हुर्रे।
वे मंगल साज़ बजाते हैं, हिप हिप हुर्रे, हिप हिप हुर्रे॥
सब ख्वाहिश मतलब हासिल हैं, सब खूबों[5] से मैं वासिल[6] हूँ।
क्यों हमसे भेद छुपाते हैं, हिप हिप हुर्रे, हिप हिप हुर्रे॥
हर इक का अन्तर आतम हूँ, मैं सब का आक़ा[7] साहिब हूँ।
मुझ पाये दु:खड़े जाते हैं, हिप हिप हुर्रे, हिप हिप हुर्रे॥
सब आँखों में मैं देखूं हूँ, सब कानों में मैं सुनता हूँ।
दिल बरकत मुझ से पाते हैं, हिप हिप हुर्रे, हिप हिप हुर्रे॥
गह[8] इश्वा[9] सीमींबर[10] का हूँ, गह नारा[11] शेर-बबर[12] का हूँ।
हम क्या क्या स्वांग बनाते हैं, हिप हिप हुर्रे, हिप हिप हुर्रे॥
मैं कृष्ण बना, मैं कंस बना, मैं राम बना, मैं रावण था।
हाँ वेद अब कस्में खाते हैं, हिप हिप हुर्रे, हिप हिप हुर्रे॥
मैं अन्तर्यामी साकिन[13] हूँ, हर पुतली नाच नचाता हूँ।
हम सूत्रतार[14] हिलाते हैं, हिप हिप हुर्रे, हिप हिप हुर्रे॥

---

१ खुशी, २ पावों के बल नाचते आते हैं, ३ अंगरेज़ी भाषा में अति प्रसन्नता का बोधक यह शब्द है। ४ आनन्द, मस्त होकर, ५ सुन्दर लोग, ६ अभेद, मिला हुआ, ७ मालिक, ८ कभी, ९ नाज़, नख़रा, १० चांदी जैसी सूरत वाली प्यारी, ११ गर्ज, १२ बबर शेर, (सिंह), १३ स्थिर, १४ सूत्रधारी की तरह पुतली तार हिलाते हैं।

सब ऋषियों के आईनए-दिल[१] में, मेरा नूर[२] दरख़शाँ[३] था।
मुझ ही से शायर[४] लाते हैं, हिप हिप हुर्रे, हिप हिप हुर्रे ।।
मैं ख़ालिक[५], मालिक, दाता हूँ, चश्मक[६] से दह्र[७] बनाता हूँ।
क्या नक़शे रंग जमाते हैं, हिप हिप हुर्रे, हिप हिप हुर्रे ।।
इक कुन[८] से दुनिया पैदा कर, इस मन्दिर में ख़ुद रहता हूँ।
हम तनहा शहर बसाते हैं, हिप हिप हुर्रे, हिप हिप हुर्रे ।।
वह मिसरी हूं जिसके बाइस[९] दुनिया की इशरत[१०] शीरीं[११] है।
गुल मुझ से रंग खिलाते हैं, हिप हिप हुर्रे, हिप हिप हुर्रे ।।
मसलूद[१२] हूँ, क़िबला[१३], काबा हूँ, माबूद[१४] अज़ां[१५] नाक़ूस[१६] का हूँ।
सब मुजको कूक बुलाते हैं, हिप हिप हुर्रे, हिप हिप हुर्रे ।।
कुल आलम[१७] मेरा साया है, हर आन बदलता आया है।
ज़िल[१८] क़ामत[१९] गिर्द घुमाते हैं, हिप हिप हुर्रे, हिप हिप हुर्रे ।।
यह जगत हमारी किरणें हैं, फैलीं हर सू[२०] मुझ मर्कज़[२१] से।
शाँ बूक़लमूं[२२] दिखलाते हैं, हिप हिप हुर्रे, हिप हिप हुर्रे ।।

---

१ अन्त:करण रूपी शीशा, २ प्रकाश, ३ चमकता था, ४ कवि (अर्थात् मेरे आत्म स्वरूप से यह सब कवितादि निकलती हैं), ५ सृष्टि का रचने वाला, ६ आँख की झपक में, ७ युग, समय ८ आज्ञा, हुक्म का संकेत, ९ सबब, कारण, १० विषय-आनन्द, भोग के पदार्थ, ११ मीठी, १२ उपास्य, पूजा किया गया, १३ जिसकी तरफ मुंह करके ईश्वर-पूजा (ध्यान) की जाती है, १४ पूज्यदेव, १५ बाँग, १६ शंख-ध्वनि, १७ सब संसार, १८ छाया, प्रतिबिम्ब, १९ बिम्ब, २० तरफ, २१ केन्द्र, २२ नाना प्रकार के।

मैं हस्ती[1] सब अशिया[2] की हूं, मैं जान मलायक[3] कुल की हूँ।
मुझ बिन बेबूद[4] कहाते हैं, हिप हिप हुर्रे, हिप हिप हुर्रे ॥
बेजानों में हम सोते हैं, हैवां[5] में चलते फिरते हैं।
इन्सां में नींद जगाते हैं, हिप हिप हुर्रे, हिप हिप हुर्रे ॥
संसार तजल्ली[6] है मेरी, सब अन्दर बाहर मैं ही हूँ।
हम क्या शोले[7] भड़काते हैं, हिप हिप हुर्रे, हिप हिप हुर्रे ॥
जादूगर हूँ, जादू हूँ खुद, और आप तमाशा-बीं[8] मैं हूँ।
हम जादू खेल रचाते हैं, हिप हिप हुर्रे, हिप हिप हुर्रे ॥
हूं मस्त मैं अपनी महिमा में, है कुछ भी ग़ैर[1] अज़ राम नहीं।
सब कल्पित धूम मचाते हैं, हिप हिप हुर्रे, हिप हिप हुर्रे ॥

(२३)

निवास स्थान की बहार—ऋतु इत्यादि का वर्णन

राग आसा ताल दादरा

आ देख ले बहार कि कैसी बहार है।
गंगा का है किनार[1], अजब सब्ज़ा-ज़ार है।
बादल की है बहार हवा खुशगवार[2] है ॥
क्या खुशनुमा[3] पहाड़ पै वह चश्मा[4]-सार है।
गंगा धुनी सुरीली है, क्या लुत्फ़[5]-दार है ॥

---

१ अस्तित्व, सब की जान, २ वस्तु, ३ सारे फ़रिश्तों (देवताओं) की, ४ न होना, अविद्यमान, ५ पशु ६ चमक। ७ अग्नि की लपटें, अंगारे, ८ तमाशा देखने वाला।

१ तट, किनारा, २ मनोहर, आनन्ददायक, ३ रमणीय, ४ धारा बहती है, ५ आनन्ददायक,

वक्ते सुबहे[१] - ईद तमाशा तैयार है ।
गुलगूना[२] मुंह पै मल के खड़ा गुलइज़ार[३] है ।।
शाहे - फ़लक[४] से याँ जो हुई आँख चार[५] है ।
मारे शरम के चेहरा बना सुर्ख़ - नार[६] है ।।
क़तरे हैं ओस के कि दूरों[७] की क़तार है ।
किरणों की उनमें, बल[८] बे, नज़ाकत[९] ! यह तार है ।।
मुर्ग़ाने - ख़ुश - नवां[१०], तुम्हें काहे की आर[११] है ।
गाओ बजाओ, शब[१२] का मिटा दिल से बार[१३] है ।।
माशूक़[१४] क़द दरख्तों पै बेलों का हार है ।
नै[१५] नै ग़लत है, ज़ुल्फ़ का पेचाँ[१६] यह मार[१७] है ।।
वाह वा ! सजे सजाये हैं, कैसा शृङ्गार है ।
अशजार[१८] में चमकता है, ख़ुश आबशार[१९] है ।।
अशजार सिर हिलाते हैं, क्या मस्त वार हैं ।
हर रंग के गुलों से चमन लाला - ज़ार[२०] हैं ।
भँवरे जो गूंजते हैं, बड़े ज़र - निगार[२१] हैं ।
आनन्द से भरी यह सदा[२२] ओंकार हैं ।।

---

१ आनन्द के प्रातःकाल का समय, २ पाऊडर, ३ फूल जैसी गालों (कपोलों) वाला प्यारा ४ सूर्य, ५ परस्पर दर्शन, परस्पर मेल, ६ आग की तरह लाल, ७ मोतियों, ८ इस कोमलता पर बलिहारी जाऊँ, क़ुर्बान जाऊँ, ९ कोमलता व नाज़ुक सी धारा, १० अच्छे गानेवाले पक्षी, ११ शरम, लज्जा, १२ रात्रि, १३ बोझ (अर्थात् दुःख की रात गई और सुख का प्रातःकाल हुआ), १४ प्रेम मूर्ति १५ नहीं, नहीं, १६ लिपटा हुआ, १७ साँप, १८ दरख्तों, १९ झरना, २० सुर्ख़ रंग, २१ सुनहरा रंग जिनके परों पर होता है, २२ ध्यान वा आवाज़ ।

गङ्गा के रू सफ़ा[1] से फिसलती न गर[2] नज़र[3] ।
लहरों पै अक्स[4] मेहृ[5] का क्यों बेक़रार[6] है ।।

विष्णु के शिव के घर का असासा[7] यह गङ्ग है ।
यहाँ मौसमे-ख़िज़ाँ[8] में भी फ़स्ले बहार[9] है ।।

साक़ी[10] वह मय[11] पिलाता है, तुर्शी[12] को हार है ।
वाह क्या मज़े से खाने को ग़म का शिकार[13] है ।।

दिलदारे ख़ुश-अदा तो सदा हम किनार[14] है ।
दर्शन शराबे-नाब[15], सखुन[16] दिल के पार है ।।

बाहर निगाह[17] कीजे तो गुलज़ार है खिला ।
अंदर सरूर[18] की तो भला हद कहाँ दिला[19] ।।

कालिज क़दीम का यह सरे-मू[20] नहीं हिला ।
सिखलाता मारफ़त[21] का सबक़ मेरा यार है ।।

ऐ जां बिया बिया कि ईं दुनियाये दीगरस्त[22] ।
आबे दिगर, हवाये दिगर, जाय दीगरस्त ।।

---

१ शुद्ध रूप, २ अगर, ३ दृष्टि, ४ प्रतिबिम्ब, साया ५ सूर्य, ६ चंचल अस्थिर, ७ सम्पत्ति, माल, ८ पतझड़, ९ वसन्त ऋतु, १० आनन्द रूपी शराब पिलानेवाला अर्थात् ब्रह्मविद् गुरु, ११ प्रेममद, १२ खटाई अर्थात् विषय वासना, खटाई से नशा उतरता है मगर यह वह शराब है जिसका नशा उतारने में खटाई भी हार मान गई है, १३ मास १४ पास, १५ खालिस शराब, १६ बातचीत, १७ दृष्टि, १८ आनन्द, १९ ऐ दिल, २० बाल बाँका नहीं हुआ (अर्थात् पढ़ाना बन्द नहीं हुआ) २१ आत्मज्ञान, २२ ऐ प्यारे यहाआ कि यहाँ संसार दूसरा है यहाँ का जल, यहाँ की वायु और यहाँ का स्थान ही दूसरा है ।

ख़ूबाने खैर दूर व दर जेह्ल अफ़गनन्द ।
ख़ुबस्तो जेहल दूर कुनद जाय दीगरस्त ।।*
साधू फ़क़ीर का तो इसी पर मदार[१] है ।
आ देख ले बहार कि कैसी बहार है ।।
मस्ती मुदाम[२]-कार, यही रोज़गार है ।
गुलबीं[३] निगाह पड़ते ही फिर किसका ख़ार[४] है ।।
क्यों ग़म से तू निज़ार[५] है क्यों दिलफ़िगार[६] है ।
जब राम क़ल्ब[७] में तेरे ख़ुद यारे-ग़ार[८] है ।।

(२४)

राम का नाच

राग नट-नारायण, ताल दीपबंदी

नाचूं मैं नटराज रे ! नाचूं मैं महाराज रे !
सूरज नाचूं, तारे नाचूं, नाचूं बन महताब[१] रे !
तन तेरे में मन हो नाचूं, नाचूं नाड़ी नाड़ रे !
बादर[२] नाचूं, वायू नाचूं, नाचूं नदी अरु नाव[३] रे !
ज़र्रा[४] नाचूं, समुद्र नाचूं, नाचूं भारी[५] काज रे !
मधुआ[६] लब बदमस्ती वाला, नाचूं पी पी आज रे !

---

* जो अपने सगे हैं और अज्ञान में पड़े हुए हैं अच्छा है, यह स्थान कोई और है जो अज्ञान को दूर करता है।

१ भरोसा, २ नित्य रहनेवाली, ३ पुष्प (गुण) देनेवाली, अर्थात हंस दृष्टि, ४ काँटा, ५ दुबला पतला, दुर्बल, ६ घायल चित्त, ज़ख़मी दिल, मन मलीन, ७ अंतःकरण, ८ सच्चा मित्र ।

१ चाँद, २ बादल, ३ जहाज़, बेड़ी, किस्ती ४ परमाणु, अणु, ५ भारी, ६ प्रेम रूपी मदिरा का प्याला ।

घर लागो रंग, रंग घर लागो, नाचूं पापा बाज रे !
राग गीत सब होवत हरदम, नाचूं पूरा साज रे !
राम ही नाचत, राम ही बाजत, नाचूं हो निर्लाज रे !

(२५)

राग जिला ताल दादरा

क्या पेशावाई[1] बाजा है, अनहद[2] सदा है आज ।
वेलकम[3] को कैसी रौशनी, समदानिया[4] है आज ।।
चक्कर से इस जहाँ के फिरे असल घर को हम ।
फुटबाल सब ज़मीन है, पा[5] पर फ़िदा[6] है आज ।।

---

(१) स्वागत करने को अनहद ध्वनि का बाजा क्या उत्तम बज रहा है और स्वागत के वास्ते कैसा उत्तम वा स्वच्छ प्रकाश जगमगा रहा है। अभिप्राय यह है कि—अनहद शब्द सुनाई देता है और ज्योति निरंजन साक्षात्कार से पहले अर्थात् चारों ओर भीतर प्रकाश ही प्रकाश भान होता है इसलिए साक्षात्कार के थोड़े पहले की अवस्था को दर्शाते समय अनहद ध्वनि और प्रकाश उस अनुभव का स्वागत करने वाले वर्णन हुए हैं।

(२) इस संसार चक्कर से निकलकर हम जब अपने असली धाम (निज स्वरूप) की ओर मुड़े तो पृथ्वी हमारे लिए एक फुटबाल अर्थात् खेल का गेंद हो गई और अब वह हमारे चरणों पर वारे जाती है। अभिप्राय यह कि जब वृत्ति आत्मरूप से विमुख थी, तो संसार दूर भागता था। जब वृत्ति संसार से मुंह मोड़कर अन्तर्मुख हुई, तो संसार हमारे चरणों पर गिरने लगा।

---

१ आगे चलकर लेनेवाला (अर्थात् स्वागत का बाजा), २ अनहद ध्वनि, जो अन्दर सुनाई देती है, ३ मुबारकवादी (स्वागत), ४ उत्तम शुद्ध, पवित्र, ५ पाद, पांव, ६ प्राण दिये हुए, अर्पित ।

चक्कर में है जहान, मैं मर्कज़[1] हूँ मेहर[2] सा ।
धोके से लोग कहते हैं, सूरज चढ़ा है आज ।।
शहज़ादे[3] का जलूस[4] है, अब तख़्ते-ज़ात[5] पर ।
हर ज़र्रा[6] सदक़े[7] जाता है, नग़मा-सरा[8] है आज ।।
हर बर्गे-मेहरो-माह[9] का रक्सो-सरोद[10] है ।
आरामो अमनो चैन का तूफाँ बपा है आज ।।

---

(३) संसार तो चक्कर में है और सूर्यवत् मैं उस चक्र का केन्द्र हूँ पर लोग धोखे से कहते हैं कि आज सूर्य चढ़ा है (यद्यपि वास्तव में ईश्वर कहीं बाहर नहीं है और उसके ढूंढ़ने में चक्कर लगाते फिरते हैं, पर आत्मदेव सूर्यवत् सबका केन्द्र हुआ सबके भीतर स्थित है, केवल अज्ञान के बादल से आच्छादित है, और उसके दूर हटने पर वह नित्य उपस्थित आत्मा वा आत्मज्ञान प्रकट होता है, परन्तु लोग धोखे से यह कहते हैं कि हमने उसे ढूंढ़ पाया है ।

(४) युवराज अर्थात् सूर्य का अपने स्वराज्य की गद्दी पर बैठने का शुभ समय हो रहा है, अर्थात् उदयकाल अब हो रहा है, इस वास्ते एक-एक परमाणु उस पर प्राण दे रहा या क़ुर्बान जा रहा है । अभिप्राय, वृत्ति का अपने परम स्वरूप में लय होने का अब समय आ रहा है, इसलिए प्रत्येक परमाणु उस ज्ञानी पर वारे न्यारे जा रहा है ।

(५) इस समय प्रत्येक पत्ता, सूर्य और चन्द्र का नाच-राग हो रहा है, और सुख आनन्द, शान्ति का समूह बह रहा है । अभिप्राय यह है कि इस आत्म-साक्षात्कार पर प्रत्येक पत्ता, चन्द्र और सूर्य प्रसन्नता में नृत्य कर रहे हैं, और चारों ओर प्रसन्नता, शान्ति और सुख का समुद्र बह रहा है ।

---

१ केन्द्र, २ सूर्य के समान, ३ युवराज, ४ राजतिलक, ५ स्वराज्य की गद्दी, ६ परमाणु, ७ वारे जाता, प्राण देता या कुर्बान होता है, ८ आवाज़ दे रहा है, गीत गा रहा है । ९ प्रत्येक पत्ते, चन्द्र और सूर्य का, १० नाच, राग ।

किस शोख़े-चश्म[1] की है यह आमद[2] कि नूरे-बर्क़[3]।
दीदों[4] को फाड़ फाड़ के रह देखता है आज ॥
आता करम-फ़िशाँ[5], वह शहे-अब्र-दस्त[6] है।
बारिश की राह[7] पानी छिड़कता ख़ुदा हैं आज ॥
झुक झुक सलाम करता है अब चाँदे-ईद है।
इक़बाल[8] राम[9], राम का ख़ुद हो रहा है आज ॥

---

(६) किसी तीक्ष्ण-दृष्टि प्यारे का यह आगमन है कि जिसके इन्तज़ार में बिजली का तेज आँखें फाड़-फाड़ कर देख रहा है। अभिप्राय यह कि ऐसा आनन्द का समय देखकर साधारण मनुष्य के चित्त में संशय उठ पड़ता है कि ऐसा कौन प्रभावशाली अब आ रहा है जिसकी प्रतीक्षा में विद्युत भी आँखें फाड़-फाड़ कर देख रहा है अर्थात् घोर प्रकाश फैला रहा है।

(७) जिसका हाथ बादल के समान कृपा-वृष्टि करने वाला है, ऐसा कृपालु महाराजाधिराज परमात्मा आ रहा है और आनन्दरूपी जल की वृष्टि कर रहा है। अभिप्राय यह है कि जो कृपा का अधिष्ठान या समुद्र है, ऐसे प्रकाश स्वरूप आत्मा का अनुभव हो रहा है और अब ईश्वर स्वयं आनन्द की वृष्टि कर रहा है।

(८) ईद का चाँद अर्थात् द्वितीया का चन्द्र निकला है, वह मानो राम को झुक-झुककर नमस्कार कर रहा है। आज ऐश्वर्य स्वयं राम के आधीन हो रहा है। अभिप्राय यह कि इस साक्षात्कार के बाद तो द्वितीया का चाँद जिसके आगे लोग झुकते हैं, वह स्वयं उस आत्म-ज्ञानी के आगे झुक-झुककर नमस्कार करता है और ऐश्वर्य स्वयं उसके आधीन है।

---

१ तीक्ष्णदृष्टि वाला प्यारा, (आत्मा), २ आगमन, ३ बिजली का तेज वा प्रकाश, ४ आँखों को, ५ कृपालु, कृपावृष्टि करने वाला, ६ वह बादशाह जिसके हाथ में बादल हो अर्थात् सूर्य व जिसका हाथ बादल के समान कृपावृष्टि करता हो, ७ वर्षा के स्थान पर ८ स्वागत, प्रताप, प्रभाव, ९ आधीन।

(२६)

राग बिहाग, ताल दादरा

चार तरफ़ से अब्र[१] की वाह ! उठी थी क्या घटा !
बिजली की जगमगाहटें राद[२] रहा था कड़कड़ा ।
बरसे था मेंह भी झूम-झूम, छाजों उमड़[३] उमड़ पड़ा !
झोंके हवा के ले गये होशे वदन[४] को वह उड़ा ।
हर रगे-जाँ[५] में नूर था, नग़मा[६] था ज़ोर शोर का ।
अब्रे-बरूँ से था सिवा, दिल में सरूर[७] बरसता ।।
आबे-हयात[८] की झड़ी, ज़ोर जो रोज़ो-शब[९] पड़ी ।
फ़िक्रो-ख़्याल[१०] बह गये, टूटी दुई[११] की झोपड़ी ।।

(२७)

ग़ज़ल व राज खमाच, दादरा

चलना सबा[१] का ठुम ठुमक, लाता प्यामे-यार[२] है ।*
टुक आँख जब लगने लगी, तीरे निगह[३] तय्यार है ।।

*—यह कविता राम महाराज द्वारा उस समय लिखी गयी थी जिन दिनों वह नितान्त अकेले, टिहरी से छः मील की दूरी पर गोदी सिरायीं

---

(१) **प्रातःकाल की वायु का ठुमक-ठुमक चलना ही अपने प्यारे यार (स्वरूप) का संदेशा ला रहा है और ज़रा सी आँख भी लगने नहीं**

---

१ बादल, २ बिजली की कड़क, ३ मतलब इस मुहावरे का यह है कि बड़े जोर से वर्षा हुई, ४ शरीर का होश, ५ प्राण नस-नस में, ६ गाना, ७ आनन्द, ८ अमृत वर्षा, ९ दिन रात जो ज़ोर से पड़ी, १० चिन्ता और शोक, ११ द्वैत की झोपड़ी जो दिल में स्थित थी सब बह गई ।

१ प्रातःकाल की वायु, २ ईश्वर (प्यारे) का संदेश ३ दृष्टि का तीर ।

होशो-ख़िरद[1] से इत्तफ़ाक़न, आँख गर दो चार हैं ।
बस यार की फिर छेड़ख़ानी का गरम बाज़ार है ।।
मालूम होता है हमें, मतलब का हम से प्यार है ।
सख़्ती से क्यों छीने है दिल, क्या यूं हमें इन्कार है ? ।।

ग्राम के समीप एक बमरोगी नाम की गुफा में कुछ दिन चुपचाप रहे और वहाँ निजानन्द की मस्ती से बेहोश हुए दुनिया से बेख़बर बहुत काल तक तट पर लेटे रहते थे । तत्पश्चात् होश में आने से और एक दिन नारायण (लेखक) के पहुँचने पर यह कविता अत्यन्त मस्ती के साथ सुनायी और फिर नारायण के साथ बातचीत की गई ।

देता, क्यों आँख अब ज़रा लग जाती है (सोने लगता हूँ) तो झट उस प्यारे (स्वरूप) की दृष्टि (प्रकाश) का तीर लगना आरम्भ हो जाता है जिससे मैं सोने न पाऊँ, (अर्थात् उसे भूल न जाऊँ) ।

(२) अगर अकस्मात अक़ल और होश में आने लगता हूँ, या मन बुद्धि का संग करने लगता हूँ, तो उसी समय प्यारा छेड़खानी करने लग जाता है, ताकि फिर बेहोश और आत्मानन्द से पागल हो जाऊँ, अर्थात् मैं पुनः दुनिया का न रहूँ, सिर्फ़ प्यारे (स्वस्वरूप) का ही हो जाऊँ (इस छेड़खानी से) ।

(३) ऐसा मालूम होता है कि प्यारे का हमसे एक मतलब (स्वार्थ) के कारण प्यार है, और वह मतलब हमारा दिल लेना है । भला वह सख़्ती से क्यों दिल छीनता है, क्या वैसे हमको इनकार है ? (अर्थात् जब पहले से ही प्यारे के हवाले दिल करने को तैयार बैठे हैं, तो फिर वह सख़्ती से क्यों छीनना चाहता है ?) ।

---

१ होश और अक़ल,

लिखने की नै,[1] पढ़ने की फ़ुरसत, काम की नै काज की।
हम को निकम्मा कर दिया, वह आप तो बेकार है।।
पहरा मुहब्बत का जो आये, हमबग़ल होता है वह।
ग़ुस्सा तबीयत का निकालें? रूबरू दिलदार है।।
सोने पै हाज़िर ख्वाब में, जागे पे ख़ाक़ो-आब[2] में।
हँसने में हँस मिलता है, मिल रोता है लूलू बार है।।
गह बर्क़-वश[3] खंदाँ[4] बना, गह अब्रोतर[5] गिरियाँ[6] बना।
हर सूरतो हर रंग में पैदा बुते-अय्यार[7] है।।

---

(४) दिल को प्यारे के अर्पण करने से न लिखने की फुर्सत रही, और न किसी काम काज की। आप तो वह बेकार (अकर्ता) था ही, अब हमको भी वैसा ही बेकार कर दिया है।

(५) जब प्रेम का समय आता है तो वह प्यारा झट हमबग़ल (संग वा मूर्तिमान्) हो जाता है, ऐसी दशा में हम किस पर ग़ुस्सा निकालें, क्योंकि सामने तो वह स्वयं खड़ा है।

(६) सोते समय वह स्वप्न में हाजिर है, जाग्रत में पृथ्वी--जल के रूप में साथ है, हँसते समय वह साथ मिलकर हँसता है और रोते समय वह अभेद हुआ साथ रोता है, अर्थात् सब दशाओं में वह स्वयं मौजूद है।

(७) कभी चमकती हुई बिजली के रूप में हँसता है और कभी बरसते हुए घने बादलों के रूप में रोता है, इस प्रकार प्रत्येक रूप और रंग में वही प्यारा प्रकट हुआ दिखाई देता है।

---

१ नहीं, २ पृथ्वी और जल, ३ कभी बिजली की मानिन्द, ४ हंसता हुआ, ५ बादल की तरह तरबतर, ६ रोते हुए, ७ तसवीर जिससे यार का अन्दाज़ा लगाया जावे, अथवा अपने साक्षात्कार की कसौटी।

दौलत ग़नीमत जान दर्दे-इश्क़ की, मत खो उसे।
मालो-मता,[1] घर-बार, ज़र[2] सदक़े[3] मुबारक नार[4] है ।।
मंजूर नालायक को होता है, इलाजे-दर्दे-इश्क़[5]।
जब इश्क़ ही माशूक़ हो, क्या सेहत में बीमार है ।।
क्या इन्तज़ारो, क्या मुसीबत, क्या बला, क्या खारे-दश्त[6]।
शोला[7] मुबारक जब भड़क उट्ठा, तो सब गुलनार[8] है ।।
दौलत नहीं, ताक़त नहीं, तालीम नै,[9] तकरीम[10] नै।
शाहे-ग़नी[11] को तो फ़क़त, इर्फ़ाने-हक़[12] दरकार है ।।

---

(८) ऐ प्यारे जिज्ञासु ! इश्क़ (प्रेम) के धन को उत्तम जान, इसको मत खो, बल्कि इस प्रेम की आग पर सारे घर-बार और धन-दौलत को वार दे।

(९) इस प्रेम के दर्द का इलाज करना तो अज्ञानी को ही मंजूर होता है, क्योंकि जब प्रेम ही माशूक (इष्ट देव) हो, तो क्या ऐसी नीरोगता में भी बीमार है ?

(१०) इन्तज़ार, मुसीबत, बला और जंगल के काँटे यह सब उसी समय जलकर फूल (आग का पुष्प) हो गये, जिस समय ज्ञानाग्नि अन्दर प्रज्वलित हुई।

(११) दौलत, बल, विद्या और इज्जत तो नहीं चाहिए, उस (अनन्य भक्त या ब्रह्मविद्) बेपरवाह बादशाह को, उसे तो केवल आत्मज्ञान (ब्रह्म विद्या) की ही आवश्यकता है।

---

१ माल और असबाब, २ धन, ३ नौछावर कर दो, ४ मुबारक आग, धन्य प्रेमाग्नि पर ५ इश्क़ के दर्द (पीड़ा) का इलाज (औषध), ६ जंगल के काँटे, ७ प्रेमाग्नि व ज्ञानाग्नि की शुभ ज्वाला, ८ अनार फूल, यहाँ अग्नि के पुष्प से मुराद है, ९ नहीं, १० मान प्रतिष्ठा, ११ सख़ी दिल बादशाह, १२ आत्मज्ञान।

उमरों की उम्मीदें उड़ा, छोटी बड़ी सब ख्वाहिशें ।
दीदार[1] का लीजे मज़ा, जब उड़ गयी दीवार है ।।
मंसूर से पूछी किसी ने कूचये-जानाँ[2] की राह ।
खुब साफ़ दिल में राह बतलाती ज़ुबाने-दार[3] है ।।
इस जिस्म से जाँ कूद कर, दरियाये-वहदत[4] में पड़ी ।
करलें महोछा जानवर, लो वह पड़ा मुरदार है ।।

---

(१२) कई वर्षों की आशायें, जो स्वरूप के अनुभव में पर्दे वा ओट का काम कर रही हैं, इन सब छोटी बड़ी आशाओं को आत्मज्ञान से जला दो, और जब इस तरह से इच्छाओं की दीवार उड़ जावे तो फिर प्यारे (स्वस्वरूप) के दर्शन का आनन्द लो ।

(१३) मंसूर एक मस्त ब्रह्मवेत्ता हुआ है, जब वह सूली पर चढ़ाया गया तो उस समय एक पुरुष ने उससे प्यारे की गली अर्थात् स्वस्रूप के अनुभव करने का रास्ता पूछा । मंसूर तो चुप रहा क्योंकि उस समय सूली पर था, परन्तु सूली की नोक अर्थात् सिरे ने (जिसको ज़ुबानेदार कहते हैं) मंसूर के दिल में साफ़ चुभकर बतला दिया कि यह रास्ता है, अर्थात् प्यारे के अनुभव का केवल दिल के भीतर जाना ही रास्ता है ।

(१४) इस शरीर से शारीरिक प्राण कूदकर तो अद्वैत की गंगा में पड़ गये हैं, अब इस मृतक शरीर (मुर्दे) को प्रारब्धभोग रूपी पक्षी खायें और महोत्सव कर लें (क्योंकि साधु के मरने के पश्चात् भण्डारा अर्थात् भोजन दिया जाता है और मस्त पुरुष अपने शरीर को ही सबके अर्पण करना भण्डारा समझता है इसलिए राम जब मस्त

---

१ दर्शन २ अपने प्राण प्यारे अर्थात् परमात्मा के घर का रास्ता, ३ सूली की नोक से अभिप्राय है, ४ एकता की गंगा अद्वैत रूपी समुद्र ।

तशरीफ़ लाता है जुनूं, चश्मो-सरो-दिल फर्शे-राह ।
पहलू[1] में मत रखना ख़िरद[2] को, रांड यह बदकार[3] है ।।
पल्ला छुटा इस जिस्म से, सर से टली अपने बला ।
वेलकम ! ऐ तेग़े-ख़ूं-चकां[4], क्या मौत[5] लज़्ज़तदार है ।।
यह जिस्मो-जाँ नौकर को दे, ठेका सदा का भर दिया ।
तू जान तेरा काम रे, क्या हम को इससे कार है ।।
ख़ुश हो के करता काम है, नौकर मेरा चाकर मेरा ।
हो राम बैठा बादशाह, हुशियार ख़िदमतगार हैं ।।

हुए तो शरीर को मृतक देख कर भण्डारे के वास्ते पक्षियों को बुलाते हैं ।)

(१५) जब इस निजानन्द के कारण पागलपन आने लगें तो उस समय अपने पास द्वैत दर्शाने वाली संसार की अक़ल न रक्खो, बल्कि अपने दिल और आँखों के द्वारा उस बेसुधी को आने दो ।

(१६) जब राम अति मस्त हुए, तो बोल उठे कि 'इस शरीर से अब सम्बन्ध छूट गया है, इसलिए इसकी जिम्मेदारी की सिर से बला टली गयी । अब तो राम ख़ून पीने वाली तलवार (मुसीबत) का भी स्वागत करता है क्योंकि राम को यह मौत बड़ा स्वाद देती (या स्वादिष्ट) है ।

(१७) यह देह-प्राण तो अपने नौकर (दैव या प्रारब्ध) के हवाले करके उसे नित्य का ठेका दे दिया है, अब ऐ प्यारे (स्वस्वरूप) ! तू अपने में मगन हो, हमको इस शरीर से क्या मतलब है ?

(१८) नौकर बड़ा ख़ुश होकर काम कर रहा है, राम अब बादशाह हो बैठा है, क्योंकि ख़िदमतगार (सेवक) बड़ा होशियार मिला हुआ है ।

---

१ अपने समीप, २ बुद्धि, ३ दुराचार परायण ४ ख़ून चखाने वाली अर्थात् ख़ून करने वाली तलवार, ५ मृत्यु ।

सोता नहीं यह रात दिन, क्या उड़ गयी दीदों[१] से नींद।
ग़फ़लत[२] नहीं दम भर इसे, यह हर घड़ी बेदार[३] है ॥
नौकर मेरा यह कौन है ? आक़ा[४] हूँ इसका कौन राम ?
ख़ादिम[५] हूँ मैं या बादशाह ? यह क्या अजब इसरार[६] है ॥
वाहिद[७]-मुजर्रद[८], लाशरीको[९], ग़ैर-सानी[१०], बे बदल[११]।
आक़ा कहां ख़ादिम कहां ? यह क्या ग़लत गुफ़्तार है ॥
तन्हास्तम,[१२] तन्हास्तम, दर बहरो-बर[१३] यकतास्तम[१४]।
नुतक़ो-ज़ुबां[१५] का राम तक आ पहुंचना दुशवार[१६] है ॥

(१९) नौकर ऐसा अच्छा है कि रात दिन ज़रा भी सोता नहीं, मानो उसकी आँखों में नींद ही नहीं, और दम भर भी इसको सुस्ती नहीं, वह हर घड़ी जागता ही रहता है।

(२०) ऐ राम ! मेरा नौकर कौन है ? और मालिक उसका कौन है ? मैं क्या मालिक हूँ या नौकर हूँ ? यह क्या आश्चर्यजनक रहस्य है (कुछ कहा नहीं जा सकता है)।

(२१) मैं तो अकेला, अद्वैत, नित्य, असंग, और निर्विकार हूं, मालिक और नौकर का भाव कहाँ ? यह क्या ग़लत बोलचाल है !

(२२) मैं अकेला हूं, मैं अकेला हूं, पृथ्वी जल पर मैं ही अकेला हूं, वाणी और वाक्-इन्द्रिय का मुझ तक पहूंचना कठिन है (अर्थात् वाणी इत्यादि मुझे वर्णन नहीं कर सकती।

१ आँखों, २ सुस्ती, आलस्य, सोना, ३ जागा हुआ ४ मालिक, ५ नौकर, सेवक, ६ रहस्य, गुह्य भेद, ७ एकमेवाद्वितीयम्, ८ संग रहित व अकेला, ९ सम्बन्ध वा दृष्टान्त रहित, १० अद्वितीय, ११ निर्विकार, १२ मैं अकेला हूँ, १३ पृथ्वी समुद्र अर्थात् जल थल पर, १४ अकेला हूँ, १५ वाक् इन्द्रिय व वाणी, १६ कठिन।

ऐ बादशाहाने - जहां ! ऐ अञ्जमे[1] - हफ़्त आस्मां ! ।
तुम सब पै हूँ मैं हुक्मरां, सब से बड़ी सरकार है ।।
जादू निगाहे[2] - यार हूं, नशए लबे - मैं - गूं[3] हूं मैं ।
आबो - हयाते रुख[4] हूं मैं, अबरू मेरी तलवार है ।।
यह काकुले - जुलमाते माया[5], पेच - पेंचां[6] है वले[7] ।
सीधे को जल्वा - राम[8] है, उलटे को डसता मार[9] है ।।

(२८)

ज्ञानी की सैर

मैं सैर करने निकला, ओढ़े अबर[1] की चादर ।
पर्वत में चल रहा था, हवा के बाज़ुओं[2] पर ।।

---

(२३) ऐ दुनिया के बादशाहो ! और ऐ सातों आसमानों के तारो ! मैं तुम सब पर राज्य करता हूँ । मेरा राज्य सबसे बड़ा है ।

(२४) मैं अपने स्वरूप की जादूभरी दृष्टि हूँ, निजानंद भरी मस्ती की शराब का नशा मैं हूँ । अमृत स्वरूप मैं हूँ, भवें (माया) मेरी तलवार हैं ।

(२५) यह मेरी माया की ज़ुल्फें (अविद्या के पदार्थ) पेचदार (आकर्षक) तो हैं, मगर जो मुझे (मेरे असली स्वरूप की ओर) सीधा आकार देखता है, उसको तो वास्तविक राम के दर्शन हो जाते हैं, और जो उलटा (पीछे को) होकर (मेरी माया रूपी काली ज़ुल्फ़ों को) देखता है, उसको ("राम" शब्द का उलटा शब्द) "मार अविद्या का साँप काट लेता है ।

---

१ ऐ सातों आकाशों के तारो, २ प्यारे की जादू भरी दृष्टि, ३ आनन्द रूपी शराब की मस्तीवाले नशे को पीने वाला, ४ अमृत की ओर जाने वाला मार्ग वा अमृत स्वरूप, ५ माया रूपी काली ज़ुल्फ़ें, ६ पेचदार, ७ लेकिन, ८ राम का दर्शन, ९ सांप (सर्प) ।। १ बादल, २ पंख पर ।

मतवाला[3] झूमता था, हर तरफ घूमता था ।
झरने नदी - व - नाले, पहचान कर पुकारे ॥
नेचर[4] से गूंज उट्ठी, उस वेद की ध्वनी की ।
"तत्त्वमसि, तत्त्वमसि"[5], तू ही है जान सबकी ।
यह नज़ारा[6] प्यारा प्यारा, तेरा ही है पसारा[7] ।
जो कुछ भी हम बने हैं, यह रूप बस तो तू है ॥
यह सुन जो मैंने झाँका, नीचे को सीधा बाँका ।
हर आबशारो[8] - चश्मा, गुलो-वर्ग[9] का करिश्मा[10] ॥
अल्वाने-नौ-वदर नौ[11], अशख़ासे - जिन्स[12] हर नौ[13] ।
हर रंग में तो मैं था, हर संग[14] में तो मैं था ॥
मां[15] मामता[16] की मारी, जाती है वारी न्यारी ।
शौहर[17] को पाके दुलहन[18], सौंपे है अपना तन मन ॥
मुद्दत का बिछुड़ा बच्चा, रोता है माँ को मिलता ।
बेइख्तियार मेरा, दिलो - जान बह ही निकला ॥
वह गुदाज़े-फ़हरत आमेज़[19], वह दर्दे दिल दिलावेज़[20] ।
पुर सोज़े[21] राहते - जां[22] लज्ज़त भरे वह अरमां[23] ॥

---

३ मस्त, ४ प्रकृति, क़ुदरत, ५ वह ब्रह्म तू है, तू है, ६ दृश्य, ७ फैलाव, तेरी ही है यह सृष्टि, ८ झरना, ९ पुष्प और पत्ते, १० इशारा, ११ भली भाँति के, १२ हर प्रकार के लोग, १३ हर तरह के, १४ प्रत्येक पत्थर में १५ माता, १६ मोह, १७ पति, १८ पत्नी, १९ दिल का आनन्दमय पिघलना, २० दिलपसन्द दर्द, अर्थात् वह दुःख जो दिल को भावे २१ प्रभावपूर्ण, २२ ज़िन्दगी का आराम, २३ हौसले, आरज़ू ।

वह निकले जेबे - दिल[२४] से, वस्ले दवां[२५] में बदले ।
मेंह बरसा मोतियों का, तूफ़ान आंसुओं का,
झिम ! झिम ! ! झिम ! ! !

(२६)

राग नट-नारायण, ताल दादरा

गंजे-निहां[१] के क़ुफ़्ल पर, सिर ही तो मोहरे-शाह[२] है ।
तोड़ के क़ुफ़लो-मोहर को कन्ज़[३] को खुद न पाये क्यों ?
दीदा-ए-दिल[४] हुआ जो वा[५], खुब गया[६] हुस्ने-दिलरुबा[७] ।।
यार खड़ा हो सामने, आंख न फिर लड़ाये क्यों ?
जब वह जमाले - दिलफ़रोज़[८], सूरते-मिहरे-नीमरोज़[९] ।
आप ही हो नज़ारा सोज़[१०], परदे में मुंह छुपाये क्यों ?

गुप्त कोश आत्मदेव जो प्रत्येक प्राणी के भीतर है उसके ताले पर प्रजापति की मोहर अहंकार रूपी सिर है । इस ताले और मोहर को तोड़कर भीतर खज़ाने आत्मा को क्यों न हम लें ?

हृदय की आँखें जब खुलीं तब प्यारे का सौंदर्य भीतर घंस गया । जब अपना प्यारा (प्रियतम) सामने खड़ा हो तो फिर उससे आँख क्यों न लड़ावें ?

जब वह हृदय को प्रकाशित करने वाला सौंदर्य मध्याह्न काल के सूर्य की भाँति आप ही प्रकाशमान हो तो पर्दे में मुख क्यों छुपावें ?

---

२४ दिल की जेब अर्थात् हृदय की कोठरी से, २५ सदैव रहने वाला मिलाप या आत्म-साक्षात्कार जब आंसू बह निकले तब वह सब दुख दर्द आत्म-साक्षात्कार में बदले गये ।

१ गुप्त कोश, २ महाराजा की मोहर, ३ खज़ाना, गुप्त रत्न, ४ हृदय का नेत्र, दिव्य चक्षु, ५ खुल गया, घँस गया, ७ प्यारे का सौन्दर्य, ८ हृदय को प्रकाशित करने वाला सौन्दर्य, ९ मध्याह्न काल के सूर्य के रूप में, १० प्रकाशमान हो वा दृष्टि को प्रकाशित करे ।

दशना-ए-ग़मज़ा जांसितां,[11] नावके नाज़े-बेपनाह[12] ।
तेरा ही अक्से-रुख़[13] - सही, सामने तेरे आये क्यों ?
आप ही डाल साये को, उसको पकड़ने जाय क्यों ?
साया जो दौड़ता चले, कीजिये वाये वाये क्यों ?
अह्लो-अयालो[14]-मालो-ज़र[15], सबका है बार[16] राम पर ।
अस्प[17] पै साथ बोझ धर, सिर पर उसे उठाये क्यों ?

यह प्राण हरने वाली नैन-कटारी, यह अथाह नखरे का तीर, यह गो तेरे ही मुख का प्रतिबिम्ब है, पर तेरे सामने क्यों आवे ? अर्थात् मोहने-वाली यह तेरी माया तेरी छाया होकर तेरे स्वरूप के सामने आकर तुझे क्यों ढकती या मोहती है ?

आप ही अपनी छाया डाल कर तू उसको पकड़ने क्यों दौड़ता है ? और छाया को पकड़ने के लिए दौड़ते समय जब वह आगे दौड़ती चली जाती है (जो कि उसका स्वभाव है) तो हे प्यारे ! तू तब हाय हाय क्यों करता है ।

घर बार, बालबच्चे और धन दौलत सबका बोझ जब एक राम भगवान् पर है, तो तू भोले जाट* के समान घोड़े को अपने साथ रखकर उसको व्यर्थ अपने सिर पर क्यों उठाता है ?

---

११ नैन कटारी, या प्राण हरने वाला कटाक्ष, १२ अथाह नखरे का तीर, १३ मुख की छाया वा प्रतिबिम्ब, १४ बाल बच्चे, १५ धन दौलत, १६ बोझ, १७ घोड़े पर ।

*एक भोला जाट अपने घोड़े पर असबाब रख कर अपने ग्राम को जा रहा था। घोड़े से उसका अत्यन्त मोह था। समय मध्याह्न काल का था। ग्रीष्म ऋतु थी। असबाब घोड़े की पीठ पर रख कर आप उस पर आप सवार था। जब कुछ काल तक सवार रहने से (उसके और असबाब के बोझ से) घोड़े की पीठ पर पसीना आ गया, तो मोह से असबाब उसने पीठ पर से अलग कर लिया। नङ्गी पीठ पर आप स्वयं सवार हो

(३०)

राग देश, ताल तीन

देखा न शब[1] जो यार को नूरे-ज़्या[2] से कार[3] क्या।
मुरदे की क़बरे-तार[4] को आबों[5] गियाह से कार क्या॥
अच्छी है आहे-सर्द ही, ख़ूब है रंगे-ज़र्द ही।
ठीक है दिल में दर्द ही, हमको दवा से कार क्या॥

रात जब अपना प्यारा नहीं देखा तो प्रकाश की ज्योति से क्या मतलब? अर्थात् जब इस अज्ञान रूपी माया के परदे में अपना स्वरूप अनुभव नहीं कर सके, तो यह भौतिक प्रकाश किस काम का? और इसी प्रकार मरे हुए प्राणी की अन्धेरी क़बर (समाधि) पर जल और घास किस काम के।

उस निज स्वरूप के देखने के लिए जो चित्त से सर्द आहें उठ रही हैं वे उत्तम हैं, जो रंग पीला पड़ा है वह अच्छा है, और दिल में जो पीड़ा उठ रही है वह सब ठीक है। ऐसी दशा में औषधि से क्या प्रयोजन?

---

१ रात, २ प्रकाश की ज्योति, ३ किस काम का, ४ अंधेरी क़ब्र, ५ जल और घास।

गया, और उस असबाब को अपने सिर पर रख लिया, जिससे बोझ घोड़े पर तो उतना ही रहा, पर व्यर्थ में अपनी गर्दन बोझ से तोड़ ली। इसी प्रकार सब जगत् का बोझ ईश्वर रूपी घोड़े पर है, पर जो मूर्खता से उस बोझ को अपने सिर पर डाल लेता है, वह अपनी गर्दन व्यर्थ में तोड़ लेता है, बोझ तो तब भी ईश्वर पर वैसे का वैसा ही रहता है)।

चाहे कोई भला कहे, ख्वाह पड़ा बुरा कहे ।
पल्ला छुटा जो जिस्म से, बीमो-रज़ा[१] से कार क्या ।।
अहमके[२] -कोर ही को हैं, उलफ़ते-मासिवाय[३] -हक़
काबा ए-दिल[४] में यह ज़िना[५] ? बूए-वफ़ा से कार क्या ।।
नेकी बदी ख़ुशी ग़मी ज़ीना[६] थीं बामे-यार[७] का ।
ज़ीना जलादो अब यहां पायीं बिया[८] से कार क्या ।।
इतना लिहाज़ कर लिया, दुनिया तेरा, परे भी हट ।
नाचूं हूं साथ राम के शर्मो-हया से कार क्या ।।

चाहे कोई अच्छा कहे और बुरा कहे । इस शरीर से हमारे सम्बन्ध व पल्ला जब छूट गया तो अब भय और आशा से क्या मतलब ?

आत्म-ज्ञान से विमुख यानी भीतरी-नेत्र विहीन (ऐसे अन्धे) को ही अपने प्यारे से इतर, अर्थात् अनात्म पदार्थों से प्रीति होती है, हाय ! हृदय रूपी मन्दिर में यह व्यभिचार, ऐसे व्यभिचारी को वफ़ा की गन्ध (प्रतिज्ञा-पूर्ति) से क्या मतलब ?

पुण्य-पाप, सुख-दुःख, ये सब अपने प्यारे स्वरूप की छत पर चढ़ने की सीढ़ी है । अब इस सीढ़ी को जला दो, क्योंकि जब आत्म-साक्षात्कार हो गया तो उस अवस्था से नीचे उतारने वाली सीढ़ी से अब क्या मतलब ?

ऐ दुनिया ! तेरा इतना लिहाज़ (सम्मान) तो कर लिया, अब हम से परे हट । अब तो हम अपने राम के साथ नाच रहे हैं । लोक लज्जा से क्या मतलब ?

---

१ भय और आशा, २ अन्धे अज्ञानी को, अनात्म पदार्थ से प्रीति, ४ हृदयरूपी भगवान् के मन्दिर, ५ व्यभिचार, ६ सीढ़ी, ७ अपने प्यारे की छत पर चढ़ने की, ८ नीचे आने से ।

(३१)

राग तिलंग, ताल केरवा

कहाँ जाऊँ ? किसे छोड़ूं ? किसे ले लूं ? करूँ क्या मैं ?
मैं इक तूफ़ा क़यामत का हूं पुर हैरत[1] तमाशा मैं ।।
मैं बातिन[2], मैं अयां[3], ज़ेरो[4]-ज़बर, चप[5]-रास्त, पेशो[6]-पस ।
जहां मैं, हर मकाँ[7] मैं, हर ज़माँ[8] हूँगा, सदा था मैं ।।
नहीं कुछ जो नहीं मैं हूँ, इधर मैं हूँ, उधर मैं हूँ ।
मैं चाहूं क्या ? किसे ढूंढूं ? सभी में ताना बाना मैं ।।
वह बहरे-हुस्नो[9]-ख़ूबी हूँ, हुबाब[10] हैं क़ाफ़[11] और कैलाश ।
उड़ा इक मौज[12] से क़तरा, बना तब मेहर[13] आसा मैं ।।
ज़रो-नियामत[14] मेरी किरणों में धोका था सुराब[15] ऐसा ।
तजल्ली नूर[16] है मेरा कि 'राम' अहमद हूँ, ईसा मैं ।।

(३२)

राग भैरवी, ताल कैहरवा

बिछुड़ती दुलहिन[1] वतन[2] से है जब, खड़े हैं रोम और गला रुके है ।
कि फिर न आने की है कोई ढब[3], खड़े हैं रोम और गला रुके है ।।

जब लड़की पति के साथ विवाही जाकर अपने माता पिता के घर से अलग होने लगती है, तो लड़की और माता-पिता के रोमाँच हो जाते हैं, और विषाद की दशा व्याप्त होने से गला भर जाता है ।

---

२ भीतर, ३ बाहर, प्रकट, ४ नीचे ऊपर, ५ बायें-दायें, ६ आगे-पीछे, ७ देश, ८ काल, ९ सुन्दरता और अच्छाई का समुद्र, १० बुलबुला, ११ कोह क़ाफ़ के पर्वत से आशय है, १२ लहर, तरंग, १३ सूर्य जैसा, १४ धन दौलत, १५ मृगतृष्णा का जल १६ तेजमय प्रकाश ।

१ विवाहित लड़की, २ घर, ३ उपाय, रास्ता, तरीक़ा,

यह दीनो-दुनियां[४] तुम्हें मुबारक, हमारा दुलहा[५] हमें सलामत ।
पै[६] याद रखना, यह आख़िरी छवि, खड़े हैं रोम और गला रुके है ।।
है मौत दुनिया में बस ग़नीमत[७] ख़रीदो राहत[८] को मौत के भाव ।
न करना चूं तक, यही है मज़हब[९], खड़े हैं रोम और गला रुके है ।।

लड़की को फिर घर वापस आने की अथवा माता-पिता के घर में ही बने रहने की कोई आशा मालूम नहीं देती, इस वास्ते सर्वदा की जुदाई होते देखकर माता-पिता और लड़की के रोंगटे खड़े हो जाते हैं और गला भर जाता है ।

लड़की फिर मन में यह कहने लगती है कि माता-पिता ! यह घर, आपकी दुनिया तो आपको मुबारक हों और मेरा पति मुझे, पर यह जुदा होते समय की आखिरी छबि (अवस्था) आप जरूर याद रखें, "कि रोंगटे खड़े हो रहे हैं और गला रुक रहा है" ऐसे ही अब मनुष्य की वृत्ति रूपी लड़की अपने पति आत्मस्वरूप के साथ विवाही जाती अर्थात् आत्मा से तदाकार होती है, तो उसके माता-पिता (अहंकार और बुद्धि) के रोंगटे खड़े हो जाते हैं, और गला मारे बेबसी के रुक जाता है, और उस वृत्ति को अब वापिस आते न देख कर इन्द्रियों में रोमांच हो जाता है । उस समय वृत्ति भी अपने सम्बंधियों से यह कहती मालूम देती है कि ऐ अहंकार रूपी पिता ! और बुद्धि रूपी माता ! यह दुनिया अब तुम्हें मुबारक हो और हमें हमारा दूल्हा (आत्मस्वरूप) सलामत हो ।

अहंकार की यह मौत दुनिया में अति उत्तम है, और इस मौत के दाम पर आनन्द को खरीदो, इसमें चूं-चरा (क्यों, कैसे) न करना ही धर्म है । यद्यपि इस मौत को खरीदते समय रोंगटे खड़े हो जाते हैं और गला रुक जाता है ।

---

४ धर्म और संसार, अर्थात् आपका लोक-परलोक, ५ पति, ६ परंतु, ७ उत्तम, ८ आराम, ९ धर्म,

जिसे हो समझे कि जाग्रत है, यह ख्वाबे-ग़फ़लत[1] है सख्त ऐ जाँ ।
क्लोरोफ़ारम हैं सब मतालब[2], खड़े हैं रोम और गला रुके है ।।
ठगों को कपड़े उतार दे दो, लुटा दो अस्वाबो-मालो-ज़र सब ।
खुशी से गर्दन पै तेग़[3] धर तब, खड़े हैं रोम और गला रुके है ।।
जो आरज़ू[4] को हैं दिल में रखते, हैं बोसा[5] दीवाना सग[6] को देते ।
यह फूटी किस्मत को देख जब कब, खड़े हैं रोम और गला रुके है ।।
कहा जो उसने[7] उड़ा दो टुकड़े, जिगर के टुकड़ों के, प्यारे अर्जुन ।
यह सुनके नादां[8] के खुश्क हैं लब, खड़े हैं रोम और गला रुके है ।।

ऐ प्यारे ! जिसे आप जाग्रत समझ रहे हो, वह तो घोर सुषुप्ति है, क्योंकि ये सब विषयों के पदार्थ तो क्लोरोफ़ारम दवा की तरह हैं जिसको सूंघने (अर्थात् भोगने) से सब रोम खड़े हो जाते हैं, और गला रुक जाता है ।

ठगों को कपड़े उतार कर दे दो और माल अस्बाब सब लुटा दो और अहंकार की गर्दन पर खुशी से तलवार रख दो चाहे तब रोम खड़े हों और गला रुक जावे (मगर जब तक आनन्द से अपने अहंकार को नहीं मारोगे, तब तक किसी प्रकार का भला आप का कदापि नहीं हो सकता) ।

जो इच्छा मात्र को दिल में रखते हैं वह पागल कुत्ते को चूमते हैं, ऐसी फूटी प्रारब्ध को देख कर रोमाँच हो जाते हैं और गला रुक जाता है ।

जब उस कृष्ण ने अर्जुन से कहा कि सब सम्बन्धियों के टुकड़े-टुकड़े कर दो, यह सुन कर उस अज्ञानी अर्जुन के ओंठ खुश्क हो जाते हैं, और रोमाँच होता तथा गला रुक जाता है ।

---

१ सुषुप्ति अवस्था, २ इच्छायें, स्वार्थ, मतलब, ३ तलवार ४ इच्छा ५ चूमना, ६ पागल कुत्ता ७ यहाँ कृष्ण भगवान से अभिप्राय है ८ मूर्ख अर्जुन

लहू का दरिया जो चीरते हैं, हैं तख़्त पाते वही हक़ीक़ी[1] ।
ताल्लुक़ों[2] को जला भी दो सब, खड़े हैं रोम और गला रुके है ।।
है रात काली घटा भयानक, ग़ज़ब दरिन्दे[3] हैं, वाये जंगल ।
अकेला रोता है तिफ़्ल[4] या रब ! खड़े हैं रोम और गला रुके है ।।
गुलों[5] के बिस्तर पै ख़्वाब ऐसा, कि दिल में दीदों[6] में ख़ार[7] भर दे ।
है सीना[8] क्यों हाथ से गया दब, खड़े हैं रोम और गला रुके है ।।

फिर कृष्ण जी कहते हैं कि ऐ प्यारे अर्जुन ! जो पुरुष लहू का दरिया चीरते हैं अर्थात् सम्बंधियों के मोह में आसक्त नहीं होते हैं, वह ही स्वराज्य, असली तख़्त, पाते हैं, इसलिए ऐ प्यारे ! सब सांसारिक सम्बन्धों को जला दो, पर यह सुन कर उस अर्जुन के रोमाँच होते हैं, और गला रुक जाता है ।

ऐसा स्वप्न आ रहा है कि रात काली है, घनघोर घटा छा रही है, क्रूर व रुधिर के प्यासे पशु (शेर इत्यादि) सामने हैं और बड़ा भारी जंगल है, उस वन में लड़का अकेला रोता है । ऐसा देख कर रोमाँच हो रहे हैं, गला रुक रहा है । मगर पुष्पों के बिस्तर पर ऐसा भयानक स्वप्न आ रहा है जो कि दिल में और आँखों में काँटे भर दे, परन्तु ऐ प्यारे ! अपने हाथ से तेरी छाती क्यों दब गयी कि जिसके कारण ऐसा भयभीत स्वप्न आ रहा है, और रोमाँच होते जाते हैं तथा गला रुक जाता है । अर्थात् तू आनन्द-कन्द होता हुआ दुःख का स्वप्न जो देख रहा है इसका कारण तेरी अज्ञानता है ।

हम इस विचार (संकल्प) से गंगा किनारे जम कर बैठे थे कि अब कोई त्रिया बाक़ी नहीं छोड़ेंगे, मगर अब तो पिछला लिखा

---

१ सच्चा या असली स्वराज्य, २ सम्बन्धों को, ३ पशु, ४ बच्चा, ५ फूलों के, ६ आँखों में, ७ काँटे, ८ छाती ।

न बाकी छोड़ेंगे इल्म कोई, थे इस इरादे से जम के बैठे।
है पिछला लिक्खापढ़ा भी ग़ायब[1], खड़े हैं रोम और गला रुके है॥
है बैठा पट्ठों में कच्चा पारा, रही न हिलने की ताबो-ताक़त[2]।
न असर करता है नेशे-अक़रब[3], खड़े हैं रोम और गला रुके है॥
पिये निगाहों के जाम[4] रिझकर, न सिर की सुध बुध रही न तन की।
न दिन ही सूझे है, नै[5] तो अब शब[6] खड़े हैं रोम और गला रुके है।
हवासे ख़मसा[7] के बन्द थे दर[8], किधर से क़ाबिज़ हुआ है आकर।
नशा बला का, सितम[9] ताज्जुब, खड़े हैं रोम और गला रुके है॥

पढ़ा भी गुम हो गया है; रोंगटे खड़े हो रहे हैं और गला रुक रहा है। अर्थात् जब साक्षात्कार होता है संसार बिसर जाता है।

पट्ठों में ऐसा कच्चा पारा बैठ गया है (मस्ती का इतना जोश चढ़ गया) कि हिलने की भी ताक़त नहीं रही, और न अब बिच्छू का डंक ही कुछ असर करता है, बल्कि ऐसी हालत हो रही है कि रोंगटे खड़े हो रहे हैं, और गला रुक जाता है।

प्यारे की दृष्टि (दर्शन) रूपी अनुभव के प्याले ऐसे रिझ-रिझ कर पिये हैं कि अपने सिर (मन-बुद्धि) और तन की भी सुध बुध नहीं रही। अब न तो दिन सूझता है और न रात ही नज़र आती है, बल्कि रोमांच हो रहे हैं, और गला रुक जाता है।

पाँचों ज्ञान-इन्द्रियों के द्वार तो बन्द थे मगर मालूम नहीं कि किस तरफ़ से यह (मस्ती का जोश) अन्दर आकर क़ाबिज़ हो गया है, जो बला का नशा है, और सितम ढा रहा है, जिससे रोमांच खड़े हैं और रुका जा रहा है।

---

१ भूल गया, २ हिम्मत और बल, ३ बिच्छू का डंक, ४ प्याले, ५ नहीं, ६ रात ७ पाँचों ज्ञान-इन्द्रियों के, ८ द्वार, ९ ग़ज़ब, ज़ुल्म।

यह कैसी आँधी है जोशे-मस्ती की, कैसा तूफ़ाँ सरूर[1] का है।
रही ज़मीं मह[2] न मेहरो-कौकव[3], खड़े हैं रोम और गला रुके है।।
थीं मन के मंदिर में रक्स[4] करतीं, तरह तरह की जो ख्वाहिशें मिल।
चिराग़ख़ाने[5] से जल गया सब, खड़े हैं रोम और गला रुके है।।
है चोर चौपट यह खेल दुनिया लपेट गंगा में इसको फेंका।
मरा है फ़ीला[6], उड़ा है अशहब[7], खड़े हैं रोम और गला रुके है।।
पड़ा है छाती पे धर के छाती, कहां की दुई[8], कहाँ की वहदत[9]।
है किसको ताक़त बयां करे अब, खड़े हैं रोम और गला रुके है।।

यह ज्ञान की मस्ती की कैसी घटा आ रही और निजानन्द का जोश कैसे बढ़ रहा है कि पृथ्वी, चाँद, सूर्य और तारों की भी सुध बुध नहीं रही, अर्थात् द्वैत बिलकुल भासमान नहीं हो रहा है, बल्कि रोंगटे खड़े हैं, और गला रुका हुआ है।

मन रूपी मन्दिर में जो नाना प्रकार की इच्छायें नाच रही थीं, वे घर के दीपक से (आत्मानुभाव से) सब जल गयीं, अर्थात् अपने अन्दर ज्ञान-अग्नि ऐसे प्रज्वलित हुई कि सर्व प्रकार के संकल्प जल गये और रोंगटे खड़े हो गये और गला रुक गया।

यह दुनिया शतरंज के खेल की तरह है। इस शतरंज रूपी खेल को लपेट कर अब गंगा में फेंक दिया, वह फ़ीला मारा यह घोड़ा उड़ा यह देख रोम खड़े हो रहे हैं, और गला रुक रहा है।

अब प्यारा छाती पर छाती धर कर पड़ा है, (अभेद दृष्टि है) अब तो कहाँ का द्वैत और कहाँ का अद्वैत! किस को बताने की अब ताक़त है, केवल रोंगटे खड़े हैं और गला रुके है।

---

१ आनंद, २ चाँद, ३ सूर्य और तारे, ४ नाच करती, ५ घर के दीपक, निजात्मा के प्रकाश से ६ हाथी, ७ घोड़ा, ८ द्वैत, ९ अद्वैत।

यह जिस्मे-फ़र्ज़ी[1] की मौत का अब, मज़ा समेटे नहीं समिटता ।
उठाना दूभर[2] है वहमे-क़ालिब[3], खड़े हैं रोम और गला रुके है ।।
कलेजे ठंडक है, जी[4] में राहत[5], भरा है शादी[6] से सीनाए-राम[7] ।
हैं नैन[8] अमृत से पुर लबालब, खड़े हैं रोम और गला रुके हैं ।।

(३३)

राग मांड, ताल दादरा

आपमें यार देखकर, आइना[1] पुर सफ़ा कि यूं ।
मारे खुशी के क्या कहें, शशदर[2] सा रह गया कि यूं ।।

यह जो आनन्द आ रहा है यह क्या है? यह संकल्पमयी (भासमान) शरीर की मौत का आनन्द है जो समेटे से भी नहीं सिमटता है। अब तो इस आनन्द के भड़कने से यह पंचभौतिक शरीर उठाना भी कठिन हो गया है, क्योंकि आनन्द के मारे रोम खड़े हैं और गला रुक रहा है।

कलेजे (हृदय) में शांति है और दिल में अब चैन है, खुशी से राम का हृदय भरा है, और नैन आनन्द के अमृत से लबालब भरे हुए हैं अर्थात् आनन्द के मारे आँसू टपक रहे हैं, और रोम खड़े हैं तथा गला रुक रहा है।

जैसे साफ़ पानी में वस्तु पूरी तरह नज़र आती है, इस तरह अपने शुद्ध हृदय में अपना प्यारा प्रियात्मा देखकर मैं ऐसा चकित हो गया कि खुशी के मारे मुख से कुछ बोल न सका।

---

१ वज़ीर, कल्पित शरीर, २ कठिन, मुश्किल, ३ शरीर का भ्रम, ४ चित्त में, ५ सुख, चैन, ६ खुशी, ७ राम का हृदय, ८ नेत्र।

१ साफ़ दर्पण, २ आश्चर्य,

रो के जो इल्तमास[1] की, दिल से न भूलियो कभी ।
पर्दा हटा दुई मिटी, उसने भुला दिया कि यूं ।।
मैंने कहा कि रंजो-ग़म[2], मिटते हैं किस तरह कहो ।
सीना[3] लगा के सीने से, मह ने[4] बता दिया कि यूं ।।
गर्मी हो इस बला कि हाय भुनते हों जिससे मर्दो-ज़न[5] ।
अपनी ही आबो-ताब[6] है ख़ुद ही हूं देखता कि यूं ।।
दुनियां-ओ-आक़बत[7] बना, वाह वा जो जेहल[8] ने किया ।
तारों सा मेहर-राम[9] ने, पल में उड़ा दिया कि यूं ।।

जब मैंने उस प्यारे से रोकर प्रार्थना की "कि मुझे कभी न भूलना" तो उसने द्वैत का पर्दा बीच में से हटा दिया और मेरे से अभेद होकर अर्थात् मेरा ही स्वरूप बनकर झट मुझे भुला दिया क्योंकि परस्पर एक दूसरे का स्मरण तो द्वैत में ही हो सकता है ।

मैंने उस प्यारे से कहा कि "शोक-चिन्ता कैसे मिटते हैं ?" तो उसने छाती से छाती मिलाकर अर्थात् पूर्ण अभेद होकर कहा कि ऐसे मिटते हैं, और तरह से नहीं ।

गरमी इतनी भारी (तीक्ष्ण) हो कि दाने की तरह पुरुष-स्त्री भुन रहे हों, परन्तु मुझे ऐसा भान होता है कि यह सब मेरा ही तेज और ताप है और मैं ही स्वयं भूना जा रहा हूँ ।

लोक और परलोक जो कुछ अज्ञान से बना था, राम ने उसे पल में ऐसे उड़ा दिया जैसे सूर्य तारों को उड़ा देता है ।

---

१ प्रार्थना २ दुःख, पीड़ा, ३ छाती, ४ चन्द्र मुख प्यारे ने, ५ स्त्री-पुरुष, ६ चमक और दमक, ७ लोक और परलोक, ८ अविद्या, अज्ञान, ९ सूर्य रूपी राम ।

(३४)

ग़ज़ल, ताल दादरा

हस्ती - ओ[1] - इल्म हूँ, मस्ती हूँ, नहीं नाम मेरा ।
किबरयाई[2] - ओ - खुदाई है फ़क़त[3] काम मेरा ।।
चश्मे - लैला[4] हूं, दिले - क़ैस[5], व दस्ते - फ़रहाद[6] ।
बोसा[7] देना हो तो दे ले, है लबे - जाम[8] मेरा ।।
गोशे-गुल[9] हूँ, रुखे-यूसुफ़[10], दमे ईसा[11], सरे सरमद[12] ।
तेरे सीने[13] में बसूं हूँ, है वही धाम[14] मेरा ।।
हल्क़े - मंसूर[15], तने - शम्श,[16] व इल्मे - उलमा[17] ।
वाह वा बहर[18] हूँ और बुदबुदा[19] इक राम मेरा ।।

---

१ सच्चिदानन्द हूँ, २ स्वात्म अभिमान का माहात्म्य और ईश्वरता, ३ केवल, ४ प्रिया लैला की आँख, ५ प्रिय मजनूं का चित्त, अर्थात् लैला और मजनूं दो आशिक़ माशूक़ अरब देश में हुए हैं, और मजनूं का चित्त अपनी प्रिया लैला की आँखों (वा दृष्टि) पर अत्यन्त आसक्त था, इसलिए मजनूं के चित्त और लैला की आँखों का उदाहरण दिया है, ६ (शीरीं का प्यारा आशिक़ा) फ़रहाद का हाथ (जिसने पर्वत् को फोड़ डाला था), ७ चुम्बन देना अर्थात् चूमना हो तो चूम लो, ८ मेरा ओंठों रूपी प्याला तेरे पास है, ९ फूल का कान, १० यूसुफ़ का मुख, ११ ईसा का श्वास (प्राण फूंकना), १२ सरमद का सर, दिमाग़, १३ हृदय, १४ घर, १५ मंसूर (ब्रह्मज्ञानी) का कंठ, जो सूली पर चढ़ाये जाने पर भी अनलहक़ (अहं ब्रह्मास्मि) बोलता रहा, १६ शम्सतबरेज़ का तन जिसकी खाल उतारी गई, १७ विद्वानों की विद्या, १८ समुद्र, १९ बुलबुला ।

(३५)

बीमारी में ज्ञानी की अवस्था

राग भैरवी, ताल शूल

वाह वा, ऐ तप ओ रेंज़िश ! वाह वा ।
हब्बज़ा,[1] ऐ दर्दो-पेचिश ! वाह वा ।।
ऐ बलाये-नागहानी[2] ! वाह वा ।
वेल्कम,[3] ऐ मर्गे-जवानी[4] । वाह वा ।।
यह भंवर, यह क़हरे[5] बरपा ? वाह वा ।
वहरे-मेहरे-राम[6] में क्या वाह वा ।।
खाँड का कुत्ता गधा चूहा बिला[7] ।
मुंह में डालो ज़ायक़ा[8] है खाँड का ।।
पगड़ी, पाजामा, दुपट्टा, अंगरखा ।
ग़ौर से देखा तो सब कुछ सूत था ।।
दामनी तोड़ी व माला कोघड़ा ।
पर-निगाहे-हक़[9] में है वह सब तिला[10] ।।
मोतियाबिन्द दिल की आँखों से हटा ।
मर्ज़ो-सेहते[11] ऐन[12] राहते राम[13] था ।।

---

१ बहुत अच्छा, बहुत खूब, २ अचानक आने वाली आफ़त, ३ तेरा स्वागत हो, ४ तरुणाई अर्थात् युवावस्था में मृत्यु, ५ ईश्वरीय कोप वा रोष, ६ सूर्य रूपी राम के समुद्र में, अर्थात् राम के प्रकाश स्वरूप सिन्धु में यह सब नाम रूप प्रपञ्च मानों भँवरें और लहरें हैं, ७ बिलोटा, ८ स्वाद, ९ तत्व दृष्टि, १० स्वर्ण, सोना, ११ रोग और निरोग, १२ ठीक, निश्चय पूर्वक, १३ राम की शान्त दशा, आनन्दावस्था ।

(३६)

अभेदता का स्वरूप

गज़ल

बन के गेसू[1] रुख़े-हस्ती पे बिखर जाता हूँ ।
शानए[2]-मौजए[3] सर सर से सँवर जाता हूँ ।।
सैर करता हुआ जिस दम लबे-जू[4] आता हूँ ।
वालियां नहर को गिरदाब[5] की पहनाता हूँ ।।
सर पे सब्ज़े के खड़े हो के कहा क़ुम[6] मैंने ।
गुञ्च-ए-गुल[7] को दिया ज़ौके-तबस्सुम[8] मैंने ।।

इसको श्रीस्वामी राम ने अपने एकान्त स्थान वशिष्ठाश्रम से लिखकर रावलपिंडी की धर्म सभा को उसके पत्र के उत्तर में भेजा था जो तत्पश्चात् अनेक पत्रों में प्रकाशित हुई थी, इसके लक्ष्यार्थ गूढ़ होने से प्रत्येक पद का भावार्थ नीचे दिया जाता है :—

अस्तित्व, वस्तु या आत्मा के मुख पर मैं तम या अविद्या रूपी काले-काले बाल बनकर बिखर जाता हूँ । इस प्रकार मेरा असली रूप अविद्या से ढक जाता है । फिर मैं ही विद्या रूपी आँधी के झोंकों की कंघी से उन बिखरे हुए बालों अर्थात् अविद्या को हटाकर उन्हें संवार लेता हूँ जिसमें आत्मा रूपी मुखारविन्द का प्रकाश हो जाता है ।

टहलता हुआ जिस समय मैं नहर के तट पर आता हूँ, तो मैं भँवर की बालियाँ नहर को पहनाता हूँ, अर्थात् नहर में जो भँवर पड़ते हैं वे भी मेरे ही कारण से होते हैं ।

हरियाली पर खड़े होकर जो मैंने 'क़ुम' अर्थात् 'एड़ों' कहा तो

---

१ ज़ुल्फ़, सिर का बाल, २ कंघी, ३ तरंग, ४ नहर का तट, ५ भँवर, ६ खड़ा हो, ७ पुष्प की कली, ८ खिलने का आनन्द,

है मुझे दामने कोहसार[1] में सुनने का मज़ा।
आबशारों[2] के वह ख़ुशनग़मा[3] तराने[4] की सदा[5]॥
वह सरे-कोह[6] से थम-थम के उतरना मेरा।
गाह[7] मशरिक़[8] कभी मग़रिब[9] को यह फिरना मेरा॥
हर घड़ी पल में नया रूप बदलना मेरा।
जामए-सूरते-नौ[10] पहन निकलना मेरा॥
हाथ पर दूध की ठिलिया को उठाते आना।
गाह हँसते हुए गह आँखें दिखाते आना॥

हरियाली लहलहा आई और मैंने ही पुष्प की कली को खिलने का आनन्द दिया। अर्थात् पुष्प की कली भी मेरी उपस्थिति से मेरे संकेत पर खिलने लग गई।

मुझे पर्वत की तलेटी पर झरनों के सुन्दर राग और सुरों के सुनने में बहुत स्वाद वा आनन्द आता है।

वह झरनों के रूप में पर्वत की चोटी से मेरा थम-थम के उतरना और कभी पूर्व और कभी पश्चिम की ओर मेरा इस प्रकार फिरना।

प्रति घड़ी और प्रति पल में मेरा अर्थात् झरनों को नया-नया रूप बदलना क्या है, झरनों के इन नये-नये रूपों के वस्त्र पहन कर मेरा बाहर निकलना।

कभी दूध की ठिलिया हाथ पर उठाते आना, कभी हँसते हुए और कभी आँखें दिखाते आना।

---

१ पर्वत की तलेटी, २ झरना, ३ सुन्दर ध्वनि, ४ सुर, अलाप, ५ आवाज़ ६ पर्वत की चोटी, ७ कभी, ८ पूर्व, ९ पश्चिम, १० नये रूप का वस्त्र।

दौड़ते दूर से वह अश्क[1] बहाते आना।
और थम-थम के उतरते हुए गाते आना ॥
कौन कह सकता है क्या मेरा निशाँ, मेरा पता।
हश्र[2] ढाती है यह अलबेली[3] ख़िरामी की अदा[4] ॥
मुझसे चलने में न होगा कोई ग़ाफ़िल बढ़कर।
गिर पड़े हैं मेरे दामन[5] की गिरह खुल के गुहर[6] ॥

दौड़कर दूर से अश्रुपात करते आना और धीमे-धीमे नीचे उतरते हुए गाते आना।

मेरे इन पारस्परिक भिन्न और नाना रूपों को देखकर कौन मेरा ठीक-ठीक निशान या पता दे सकता है बल्कि मेरी यह विचित्र, सुन्दर बांकी चालें क़यामत ढाती अर्थात् प्रलय लाती हैं।

चलने में मुझसे बढ़कर कोई भी आलसी वा सुस्त न होगा (अर्थात् में नितान्त अचल हूँ) और मेरा चलना मानो ऐसा है कि जैसे मेरे वस्त्र के पल्ले में जो मोती बँधे हुए थे उस पल्ले की गाँठ के खुल जाने से मोती गिर पड़े हों। तात्पर्य यह कि मैं स्वयं तो चलने का कोई संकल्प न करता हूँ और न रखता हूँ, अलबत्ता किसी अदृष्ट के उदय होने पर मेरे भीतर यदि फुरना उठ जाय और उस फुरने से मेरे अचल रहने की ग्रंथी खुल जाय, तो मैं मोतियों के गिरने के समान चला भी आता हूँ।

---

१ अश्रु, २ क़यामत ढाती है अर्थात् प्रलय लाती है, ३ यह बांकी चाल, ४ नखरा, छबि, ५ पल्ला, ६ मोती।

अन्य महात्माओं की रचनायें

(३७)

लावनी

शुद्ध सच्चिदानन्द ब्रह्म हूँ, अजर, अमर, अज, अविनाशी ।
जासु ज्ञान से मोक्ष हो जावे कट जावे यम की फाँसी ।।
अनादि ब्रह्म, अद्वैत, द्वैत का जामें नामो-निशान नहीं ।
अखंड सदा सुख, जाका कोई आदि–मध्य–अवसान[1] नहीं ।।
यही ब्रह्म हूं, मनन निरन्तर करें मोक्ष-हित सन्यासी ।
शुद्ध सच्चिदानन्द ब्रह्म हूँ, अजर, अमर, अज अविनाशी ।।
सर्व देशी हूँ, हमारा एक जगह स्थान नहीं ।
रमा हूँ सब में, मुझ से कोई भिन्न वस्तु इन्सान नहीं ।।
देख विचारो, सिवा ब्रह्म के हुआ कभी कुछ आन नहीं ।
कभी न छूटे पीड़-दुःख से जिसे ब्रह्म का ज्ञान नहीं ।।
ब्रह्म ज्ञान हो जिसे उसे नहीं पड़े भोगनी चौरासी ।
शुद्ध सच्चिदानन्द ब्रह्म हूँ, अजर-अमर, अज, अविनाशी ।।
अदृष्ट, अगोचर, सदा दृष्टि में जा का कोई आकार नहीं ।
नेति-नेति कह निगम, ऋषीश्वर पाते जिसका पार नहीं ।।
अलख ब्रह्म लियो जान, जगत नहीं, कार नहीं, कोई यार नहीं ।
आंख खोल दिल की टुक प्यार कौन तरफ़ गुलज़ार नहीं ।।

---

१ अन्त ।

सत - स्वरूप आनन्द राशि हूँ, कहें जिसे घट - घट वासी ।
शुद्ध सच्चिदानन्द ब्रह्म हूँ, अजर, अमर, अज, अविनाशी ।।

(३८)

ज्ञानी की होली

होली, राग कालंगड़ा, ताल दीपचंदी

रे कृष्ण कैसी होली तैंने मचाई, अचरज लख्यो न जाई ।
असत सत कर दिखलाई—रे कृष्ण कैसी होली तैंने मचाई ।।
एक समय श्रीकृष्ण के मन में होली खेलन की आई ।
एक से होली मचे नहिं कबहूँ, यातें करूं बहुताई ।।
यही प्रभु ने ठहराई—रे कृष्ण कैसी होली तैंने मचाई ।
पांच भूत की धातु मिलाकर, अंड पिचकारी बनाई ।।
चौदह भुवन रंग भीतर भरकर, नाना रूप धराई ।
प्रकट भये कृष्ण कन्हाई—रे कृष्ण कैसी होली तैंने मचाई ।।
पांच विषय की गुलाल बनाकर, बीच ब्रह्मांड उड़ाई ।
जिस - जिस नैन गुलाल पड़ी, उसकी सुध बुध बिसराई ।।
नहीं सूझत अपनाई[1]—रे कृष्ण कैसी होली तैंने मचाई ।
वेद - अंत अंजन की शलाका[2], जिस ने नैन में पाई ।।
तिस का ही ठीक सब तम[3] नाश्यो, सूझ पड़ी अपनाई ।
होली कुछ बनी न बनाई—रे कृष्ण कैसी होली तैंने मचाई ।।

---

१ अपना आप, अपना स्वरूप, २ सलाई, ३ अन्धकार, अज्ञान ।

(३९)

राग मांड, ताल धुमाली

भला हुआ हरि बीसरो[1], सिर से टली बलाय ।
जैसे थे वैसे भये, अब कछु कहा न जाय ।।
मुख से जपूँ, न कर[2] जपूँ, उर[3] से जपूँ न राम ।
राम सदा हम को भजे, हम पावें विश्राम[4] ।।
राम मरे तो हम मरें ! हमरी मरे बलाय ।
सत्पुरुषों का बालका, मरे न मारा जाय ।।
हद टपे सो औलिया[5], बेहद टपे सो पीर ।
हद बेहद दोनों टपे, वा का नाम फ़क़ीर ।।
हद हद करते सब गये, बेहद गया न कोय ।
हद बेहद मैदान में, रह्यो कबीरा सोय ।।
मन ऐसो निर्मल भयो जैसो गंगा नीर[6] ।
पीछे पीछे हरि फिरें, कहत कबीर, कबीर ।।

(४०)

सवैया राग धनासरी

सब शाहों का शाह मैं, मेरा शाह न कोय ।
सब देवों का देव मैं, मेरा देव न होय ।।
चाबुक सब पर है मेरा, क्या सुल्तान अमीर[2] ।
पत्ता मुझ बिन ना हिले, आंधी मेरी असीर[3] ।।

---

१ भूल गया, २ हाथ, ३ दिल वा हृदय से, ४ आराम, ५ महात्मा, ६ गंगा जल ।

१ महाराजाधिराज, २ धनी, ३ क़ैदी ।

(४१)

मरज़ी चेतन की जब, झक मारन की होय ।
मृगतृष्णा के नीर में, वह चलियो बिन तोय[1] ।।
वह चलियो बिन तोय सहारा कहीं न पावे ।
इत उत ग़ोते खाय बहुरि[2] पाछे फिर आवे ।।
कह गिरिधर कविराय करूं मैं का[3] ढिग अरज़ी ।
झक मारन की चेतन की जब होवे मरजी ।।

(४२)

ग़ज़ल भैरवी, ताल पश्तो

कैसे रंग लागे, खूब भाग जागे, हरी गयी[1] सब भूख और नंग[2] मेरी ।
चूड़े साँच स्वरूप[3] के चढ़े हमको, टूट पड़ी जब काँच की वँग[4] मेरी ।।
तारों संग[5] आकाश में चमकती है, बिन डोर अब उड़ी पतंग[7] मेरी ।
झड़ी नूर[8] की बरसने लगी ज़ोरों[9], चंद सूर में एक तरंग मेरी ।।

(४३)

राग शंकराभरण, ताल धुमाली

हमें इक पागलपन दरकार । टेक
अकल नकल नहीं चाहिए, हमको पागलपन दरकार । हमें०
छोड़ पुवाड़े[1], झगड़े सारे, ग़ोता वहदत[2] अन्दर मार । हमें०
लाख उपाय करले प्यारे ! कदे[3] न मिलसी यार । हमें०
बेख़ुद[4] होजा देख तमाशा, आपे ख़ुद दिलदार[5] । हमें०

---

१ जल, २ पुनः, ३ किस ।

१ उड़ गई, दूर हो गई, २ शरम, ३ सत्य स्वरूप, ४ पहनने की चूड़ी, यहाँ अभिप्राय अहंकार से है, ५ साथ, ६ चमकती, ७ यहाँ वृत्ति से अभिप्राय है ८ प्रकाश की वर्षा, ९ ज़ोर से ।

१ झगड़े, बखेड़े, २ एकता, अद्वैत, ३ कभी भी, ४ अहंकार रहित, ५ आशिक, प्यारा ।

(४४)

ग़ज़ल

जिधर देखता हूं ख़ुदा ही ख़ुदा है।
ख़ुदा से नहीं चीज़ कोई जुदा है॥
जब अव्वल व आख़िर ख़ुदा-ही-ख़ुदा है।
तो अब भी वही, कौन इसके सिवा है॥
है आग़ाज़ो[1]-अन्जाम[2] ज़ेवर[3] का ज़र[4] में।
मियां[5] में न हरगिज़[6] वह ग़ैरअज़ तिला[7] है॥
वही आप हर एक सूरत में आया।
कहीं आबो-आतिश[8], ज़मीनो-हवा है॥
ख़ुदा में दुई[9] को जो देता दख़ल है।
वही काफ़िरो-मुन्किर[10] अहले ख़ता[11] है॥
कहाँ उसको दूर और जुदा ढूंढ़ते हो।
हमेशा है हाज़िर न हरगिज़ छुपा है॥
जिसे तुम समझते हो दुनिया ऐ ग़ाफ़िल[12]।
यह कुल हक़[13] ही हक़, नै जुदा नै मिला है॥
सिफ़ाती यक़ीं[14] से हटा दिल को देखो।
यही एक ज़ाते-ख़ुदा जा बजा[15] है॥
यही चीज़ ज़ाती[16], यही है सिफ़ाती[17]।

---

१ आरम्भ, आदि, २ अन्त, ३ भूषण, ४ स्वर्ण, ५ बीच में, ६ कदापि, ७ स्वर्ण से भिन्न, ८ जल-अग्नि, ९ द्वैत, १० नास्तिक, ईश्वर को न माननेवाला, ११ अपराधी, १२ अज्ञानी, १३ सत्य स्वरूप परमात्मा, १४ गुण अर्थात् नाम रूप पर विश्वास, १५ सर्वत्र, १६ असली, निर्गुण, १७ नकली, सगुण।

महज़ इक तअय्युन[१८] में दो हो रहा है ।।
नज़र आती हैं मुख़्तलिफ़[१९] सूरतें गो[२०] ।
मगर रूपे-मानी[२१] से सब एकता[२२] है ।।
हर इक चीज़ हस्ती[२३] में अपनी है क़ायम[२४] ।
नहीं पैदा होता नहीं कुछ फ़ना[२५] है ।।
नहीं होता हरगिज़ फ़ना का फ़ना भी ।
हुआ इससे साबित[२६] बक़ा[२७] ही बक़ा है ।।
धरमदास समझेगा वह बात मेरी ।
दुई से किया जिसने दिल को सफ़ा है ।।

(४५)

ग़ज़ल क़व्वाली, ताल दादरा

पा लिया जो था कि पाना, काम क्या बाक़ी रहा ।
जानना था सोई जाना, काम क्या बाक़ी रहा ।।
आ गया आना जहां, पहुंचा वहां जाना जहां ।
अब नहीं आना न जाना, काम क्या बाक़ी रहा ।।
बन गया बनना बनाने बिन[१], बना जो बन बना ।
अब नहीं बानी[२]-ओ-बाना[३] काम क्या बाक़ी रहा ।।

---

१८ उपाधि व ख़्याल, १९ भिन्न-भिन्न रूप, २० यद्यपि, २१ भीतर से, लक्ष्यार्थ से, २२ एक हैं, २३ सत्ता निज स्वरूप, २४ स्थित, २५ नाश, २६ सिद्ध, २७ अविनाशी या सत ।

१ विना, २ बनाने वाला, ३ बनाने की वस्तु, ताना,

जानते आये हैं जिसको जान झगड़ा तै[४] हुआ ।
उठ गया बकना बकाना, काम क्या बाक़ी रहा ॥
लाख चौरासी के चक्कर से थका, खोली कमर ।
अब रहा आराम पाना, काम क्या बाक़ी रहा ॥
स्वप्न के मानिन्द यह सब अनहुआ[५] ही हो रहा ।
फिर कहां करना कराना, काम क्या बाक़ी रहा ॥
डाल दो हथियार, मेरी राय[६] पुख्ता अब हुई ।
लग गया पूरा निशाना, काम क्या बाक़ी रहा ॥
होने दो जो हो रहा है, कुछ किसी से मत कहो ।
सन्त हो किस को सताना, काम क्या बाक़ी रहा ॥
मोह का अम्बार अग्नी ज्ञान में भस्मी हुआ ।
अब नहीं दिल को लगाना, काम क्या बाक़ी रहा ॥
आत्मा के ज्ञान से कृतार्थ[७] होता जन्म है ।
अब नहीं कुछ और पाना, काम क्या बाक़ी रहा ॥
देह के प्रारब्ध से मिलता है सब को सर्व कुछ ।
फिर जगत को क्यों रिझाना[८], काम क्या बाक़ी रहा ॥
घोर निद्रा से जगाया सद्‌गुरु ने वाह वा ।
अब नहीं जगना जगाना, काम क्या बाक़ी रहा ॥
मान कर मन में मियां, मौला[१०] का मेला है यह सब ।
फिर बनूं अब मौलवी, क्यों काम क्या बाक़ी रहा ॥

---

४ समाप्त, फैसल, ५ बिना हुए ही हो रहा है, ६ सम्मति, ७ सन्तुष्ट, खुशामद करना, चापलूसी करना, ९ गहरी सुषुप्ति, १० ईश्वर-लीला,

जान कर तौहीद[12] का मंशा[13], शुबह सब मिट गया ।
यों ही गालों को बजाना, काम क्या बाक़ी रहा ।।
एक में कसरत व कसरत[14] में भी एक ही एक है ।
अब नहीं डरना डराना, काम क्या बाक़ी रहा ।।
अक़ल से भी दूर है, कहने-व-सुनने से परे ।
हो चुका कहना कहाना, काम क्या बाक़ी रहा ।।
रम्ज़[15] है तौहीद[16], यां हुकमा[17] की हिकमत[18] तंग है ।
हो गया दिल भी दीवाना[19], काम क्या बाक़ी रहा ।।
रह गये उलमा-व-फ़ुज़ला[20] इल्म की तहक़ीक़[21] में ।
भर्म है पढ़ना पढ़ाना, काम क्या बाक़ी रहा ।।
द्वैत और अद्वैत के झगड़े में पड़ना है फ़िज़ूल ।
अब न दांतों को घिसाना, काम क्या बाक़ी रहा ।।
जान कर दुनिया को पूरे तौर से ख्वाबो-ख्याल[22] ।
अब नहीं तपना तपाना, काम क्या बाक़ी रहा ।।
कुछ नहीं मतलब किसी से, सो रहा टांगें पसार ।
अब कहीं काहे को जाना, काम क्या बाक़ी रहा ।।
हो गयी दे दे के डंका, सारी शंका भी फ़ना[23] ।
अब मिला निर्भय[24] ठिकाना, काम क्या बाक़ी रहा ।।

---

१२ अद्वैत, एकता, १३ मन्तव्य, १४ बहुत, अनेक, १५ इशारा, रहस्य, १६ अद्वैत, एकता, १७ बुद्धिमानों, १८ बुद्धि, १९ पागल, २० विद्वान और महात्मा, २१ दरयाफ्त, ढूंढ, २२ स्वप्न, भ्रम, २३ नाश, २४ भय रहित और कवि का नाम भी है ।

(४६)

मुझी से हुई इब्तिदाये[1] दो आलम।
मुझी में क़याम[2] इनका रहता है मुहकम[3]।।
मुझी में फ़ना[4] होंगे एक रोज़ इक दम।
शिवोऽहं, शिवोऽहं, शिवोऽहं, शिवोऽहं।।
मैं दरिया हूं, और मुझमें बेहद[5] हैं क़तरे।
मैं सूरज हूं और मुझसे रोशन हैं ज़र्रे।।
आ हा हा! अजब देखता हूं तमाशे।
शिवोऽहं, शिवोऽहं, शिवोऽहं शिवोऽहं।।
चमक है मेरी मेहरो-मह[6] की ज़िया[7] में।
दमक लालो-गौहर[8] की आबो-सफ़ा[9] में।।
ख़ला[10] में मेरा नूर[11] है और मला[12] में।
शिवोऽहं, शिवोऽहं, शिवोऽहं, शिवोऽहं।।
बहिश्ते बरीं[13] मेरा जल्वा जमाली[14]।
जहन्नुम[15] के तबक़े हैं शक्ले-जलाली[16]।।
मेरा ज्ञान वह्मो-गुमां[17] से है आली[18]।
शिवोऽहं, शिवोऽहं, शिवोऽहं, शिवोऽहं।।

---

१ दोनों लोक, (अर्थात् लोक परलोक) का आरम्भ, २ स्थिति, ३ दृढ़, ४ नाश, लीन, ५ असंख्य, ६ सूर्य और चाँद, ७ रोशनी, प्रकाश, ८ लाल और मोती, ९ आबोताब, १० आकाश, एकान्त, ११ ज्योत, प्रकाश, १२ जङ्गल, समूह, समाज, १३ सबसे ऊँचा स्वर्गलोक अर्थात् ब्रह्मलोक, १४ दयालु रूप, १५ नरक, दोज़ख़, १६ काल रूप, १७ भ्रम और शंका, १८ ऊपर

फ़लक[19] पर मलिक[20] और ज़मीं पर बशर[21] हूं।
यहां हूं, वहां हूं, इधर हूं, उधर हूं ॥
जिधर देखिये मेह्[22] में जल्वागार[23] हूँ।
शिवोऽहं, शिवोऽहं, शिवोऽहं, शिवोऽहं ॥

(४७)

ग़ज़ल

बेहोश हैं तो हम हैं, हुशियार हैं तो हम हैं।
मय नोश[1] हैं तो हम हैं, दीनदार[2] हैं तो हम हैं ॥
अपने सिवा नहीं है हस्ती किसी की हरगिज।
बेजान हैं तो हम हैं, जाँदार हैं तो हम हैं ॥
गुलशन[3] में हम हैं नुज़हत[4], सहरा[5] में हम हैं वहशत[6]।
गर फूल हैं तो हम हैं, गर ख़ार[7] हैं तो हम हैं ॥
अलफ़ाज़[8] और मआनी[9] दिल से हमारे निकले।
गर नस्र[10] हैं तो हम हैं, अशआर[11] हैं तो हम हैं ॥
अय्यारी[12] और यारी दोनों की तह में हम हैं।
गर यार हैं तो हम हैं, अग़यार[13] हैं तो हम हैं ॥
झगड़ा भी तै करो तुम ऐ शेख़ो रिन्द अपना।
बेदीन हैं तो हम हैं, दींदार हैं तो हम हैं ॥

---

१९ आकाश या परलोक, २० फ़रिश्ता, देवता, २१ मनुष्य व प्राणी, २२ सूर्य और कवि नाम २३ प्रकाशमान्।

१ अधर्मी मदिरा पीनेवाले, २ धार्मिक, ३ बाग़, ४ सुगन्ध ५ जंगल बियावान, ६ पशुत्व, ७ काँटा, ८ शब्द, ९ अर्थ, १० गद्य, ११ पद्य, १२ बदमाशी, १३ शत्रु

इल्म[१४] और जहल[१५] पहलू दो अपनी ज़ात[१६] के हैं।
नादान हैं तो हम हैं, हुशियार हैं तो हम हैं॥
हम से है सब अमीरी, हम से है सब फ़क़ीरी।
ज़रदार[१७] हैं तो हम हैं, नादार[१८] हैं तो हम हैं॥
हम ही निहां[१९] रहे हैं, हम ही अयां[२०] हुए हैं।
गर कश्फ़[२१] हैं तो हम हैं, असरार[२२] हैं तो हम हैं॥
हैं शेख़ सूमये[२३] में और रिन्द मय-कदे[२४] में।
हुशियार हैं तो हम हैं, सरशार[२५] हैं तो हम हैं॥
अपनी है सारी बरकत, अपनी है सारी हरकत[२६]।
रफ़तार हैं तो हम हैं, गुफ़तार[२७] हैं तो हम हैं॥
वहदत[२८] में हम निहां[२९] हैं, कसरत में हम अयां[३०] हैं।
मस्तूर[३१] हैं तो हम हैं, दो-चार हैं तो हम हैं॥
मुनकिर[३२] हैं जो वे अपने और जो मुक़िर[३३] वे अपने।
इक़रार हैं तो हम हैं, इन्कार हैं तो हम हैं॥
ख़ुद कहते हैं अनलहक़[३४], ख़ुद पाते हैं सज़ायें।
मन्सूर[३५] हैं तो हम हैं, और दार[३६] हैं तो हम हैं॥

---

१४ विद्या, १५ अविद्या, १६ निजात्मा, निज स्वरूप के, १७ धनी, १८ निर्धन, १९ गुप्त, अप्रकट, अविद्यमान, २० प्रकट, विद्यमान, २१ साक्षात्कार, २२ गुप्त, रहस्य, २३ पूजागृह, कुटी, २४ शराब ख़ाना, २५ दोषों से पूर्ण बदमस्त, २६ चालढाल, २७ बातचीत, बोल चाल, २८ अद्वैत, २९ गुप्त, ३० प्रकट, ३१ छिपे हुए वा परदे में, ३२ इन्कार करने वाला, ३३ स्वीकार करने वाला, ३४ शिवोऽहं, ३५ एक मस्त का नाम, जिसको अनलहक़ कहने पर सूली हुई थी, ३६ सूली,

अपने ही दम से सारी गुलज़ार[३७] की फ़िज़ा[३८] है।
गर बर्ग[३९] हैं तो हम हैं, गर बार[४०] हैं तो हम हैं॥
जन्नत[४१] जमाल[४२] अपना, दोज़ख[४३] जलाल[४४] अपना।
गर नूर[४५] हैं तो हम हैं, गर नार[४६] हैं तो हम हैं॥
हर शक्ल है हमारी, हर नाम है हमारा।
ऐ मेहर[४७]! तुम से हर जा[४८], दो-चार हैं तो हम हैं॥

(४८)

बने ध्यान में जिसके ध्यानी हैं मजनूं[१]।
हुए ज्ञान पर जिसके ज्ञानी हैं मफ़तूं[२]॥
पढ़ा जिसका योगी यती ने है अफ़सूं[३]।
वही आत्मा सच्चिदानन्द मैं हूं॥
करम जिसके मिलने को करता है कर्मी।
धरम जिसके पाने को करता है धर्मी॥
मरम जानता है फ़क़त[४] जिस का मर्मी।
वही आत्मा सच्चिदानन्द मैं हूं॥
जिसे यज्ञ और दान से ढूंढ़ते हैं।
जिसे तप से और ज्ञान से ढूंढ़ते हैं॥
जिसे धारणा ध्यान से ढूंढ़ते हैं।
वही आत्मा सच्चिदानन्द मैं हूं॥

---

३७ बाग, ३८ रौनक, ३९ पत्ते, ४० फल, ४१ स्वर्ग, ४२ वैभव, दयालु रूप, ४३ नरक, ४४ गौरव रूप, ४५ स्वर्गीय प्रकाश, ४६ नारकी अग्नि, ४७ सूरज नारायण मेहर कवि नाम, ४८ सर्वत्र।

१ पागल, मस्त, आसक्त, २ निछावर, लट्टू, ३ जादू मन्तर, कथा, ४ केवल

न आग़ाज़[5] जिसका, न अञ्जाम[6] जिसका ।
जहां देखिये, जल्वा[7] है आम जिस का ।।
हर इक शक्ल जिसकी, हर इक नाम जिसका ।
वही आत्मा सच्चिदानन्द मैं हूं ।।
जिसे सुन के इन्सान कहता नहीं है ।
जिसे देख कर होश रहता नहीं है ।।
जिसे पा के दुख कोई सहता नहीं है ।
वही आत्मा सच्चिदानन्द मैं हूं ।।
ज़मानो मकां[8] में हुआ जो नुमायां[9] ।
अलल[10] में हुआ बनके इल्लत[11] जो पिनहां[12] ।।
ग़रज़ जिससे मुमकिन है नैरंग[13] इमकाँ[14] ।
वही आत्मा सच्चिदानन्द मैं हूं ।।
किसी शै की हस्ती नहीं जिससे वाहर ।
हर इक नूर[15] जिस नूर से हैं मुनव्वर[15] ।।
जो बेमिस्ल[17] आनन्द का है समुन्दर ।
वही आत्मा सच्चिदानन्द मैं हूं ।।
जिसे मेहर[18] मौजूद माना है सब ने ।
जिसे अपना मक़सूद[19] माना है सब ने ।।

---

५ आरम्भ, ६ अन्त, ७ दर्शन, प्रकाश, ८ देश, काल, ९ प्रकट, विद्यमान, १० कारणों में, ११ कारण, १२ छिपा हुआ, अप्रकट, गुप्त, १३ नानत्व, १४ सम्भावता, १५ प्रकाश, ज्योति, १६ प्रकाशमान, या ज्योतिर्मय, १७ अद्वितीय, १८ सूर्य तथा कवि का नाम, १९ ध्येय, लक्ष्य, उद्देश्य

जिसे ग़ैरमहदूद[20] माना है सब ने ।
वही आत्मा सच्चिदानन्द मैं हूं ।।

(४९)

राग भैरवी, ताल चलन्त

कहूं क्या रंग उस गुल[1] का, अहाहाहा, अहाहाहा ।
हुआ रंगीं[2] चमन[3] सारा, अहाहाहा अहाहाहा ।।
नमक छिड़के है वह किस किस मज़े से दिल के ज़ख्मों पर ।
मज़े लेता हूं मैं क्या क्या, अहाहाहा, अहाहाहा ।।
ख़ुदा जाने हलावत[4] क्या थी, आबे-तेग़े-क़ातिल[5] में ।
लबे-हर-ज़ख्म[6] है गोया, अहाहाहा, अहाहाहा ।।
शरारो[7]-बर्क़ में क्या फ़र्क़, मैं समझूं कि दोनों में ।
है इक शोला-भभूका[8] सा, अहाहाहा, अहाहाहा ।।
बला-गरदां[9] हूं साक़ी[10] का, कि जामे-इश्क़[11] से मुझ को ।
दिया है घूंट इक ऐसा, अहाहाहा, अहाहाहा ।।
मेरी सूरत-परस्ती[12] हक़-परस्ती[13] है, कहूं मैं क्या ?
कि इस सूरत में है क्या क्या, अहाहाहा, अहाहाहा ।।
जफ़र[14] आलम[15] कहूं मैं क्या तबीयत की रवानी[16] का ।
कि है उमड़ा हुआ दरिया, अहाहाहा, अहाहाहा ।।

---

[20] अपरिछिन्न वा अनन्त ।

१ फूल; (सुन्दर स्वरूप वा आत्मस्वरूप), २ रंगदार (नाना प्रकार का), ३ बाग़, ४ मिठास, स्वाद, ५ क़ातिल की तलवार की धार, ६ हर घाव का ओंट कहता है, ७ अंगारा और बिजली, ८ भड़की हुई लपट, ९ कृतज्ञ, अर्पित हूँ, १० शराब (प्रेमामृत) पिलाने वाला यहाँ आत्मज्ञानी वा गुरु से अभिप्राय है, ११ इश्क़ (प्रेम रस) का प्याला, १२ मूर्ति पूजा (बुत परस्ती), १३ ईश्वर पूजा, १४ कवि का नाम, १५ हाल (अवस्था), १६ रफ़तार (चाल) गति ।

(५०)

लावनी ताल, धुमावली

कोई हाल मस्त, कोई माल मस्त, कोई तूती मैना सूए में ।
कोई खान मस्त, पहरान मस्त, कोई राग रागिनी दोहे[१] में ।।
कोई अमल मस्त, कोई रमल मस्त, कोई शतरंज चौपड़ जूए में ।
इक ख़ुद मस्ती बिन और मस्त, सब पड़े अविद्या कूए में ।।
कोई अक़ल मस्त, कोई शकल मस्त, कोई चंचलताई हांसी में ।
कोई वेद मस्त, कितेब मस्त, कोई मक्के में, कोई काशी में ।।
कोई ग्राम मस्त, कोई धाम मस्त, कोई सेवक में कोई दासी में ।
इक खुद मस्ती बिन और मस्त, सब बंधे अविद्या फांसी में ।।
कोई पाठ मस्त, कोई ठाट मस्त, कोई भैरों में, कोई काली में ।
कोई ग्रन्थ मस्त, कोई पन्थ मस्त, कोई श्वेत[२] पीतरंग[३] लाली में ।।
कोई काम मस्त, कोई ख़ाम मस्त, कोई पूरन में, कोई खाली में ।
इक ख़ुद मस्ती बिन और मस्त, सब बंधे अविद्या जाली में ।।
कोई हाट मस्त, कोई घाट मस्त, कोई वन पर्वत ऊजारा[४] में ।
कोई ज़ात मस्त, कोई पांत मस्त, कोई तात भ्रात सुत दारा में ।।
कोई कर्म मस्त, कोई धर्म मस्त, कोई मसजिद ठाकुरद्वारा में ।
इक ख़ुदमस्ती बिन और मस्त, सब बहे अविद्या धारा में ।।
कोई साक[५] मस्त, कोई ख़ाक मस्त, कोई ख़ासे में, कोई मलमल में ।।
कोई योग मस्त, कोई भोग मस्त, कोई स्थिति में, कोई चलचल में ।।
कोई ऋद्धि मस्त, कोई सिद्धि मस्त, कोई लेन देन की कलकल में ।
इक ख़ुद मस्ती बिन और मस्त, सब फंसे अविद्या दलदल में ।।

---

१ तुकबन्दी में, दोहे चौपाई में, २ सफ़ेद, ३ ज़र्द, पीला, ४ उजाड़ बियाबान, ५ रिश्तेदारी,

कोई ऊर्ध्व[6] मस्त, कोई अध:[7] मस्त, कोई बाहर में, कोई अंतर में।
कोई देश मस्त, विदेश मस्त, कोई औषध में, कोई मन्तर में ।।
कोई आप मस्त, कोई ताप मस्त, कोई नाटक चेटक तन्तर में।
इक खुद मस्ती बिन, और मस्त, सब फंसे अविद्या जन्तर में ।।
कोई शुष्ट[8] मस्त, कोई तुष्ट[9] मस्त, कोई दीरध में, कोई छोटे में।
कोई गुफा मस्त, कोई सुफ़ा मस्त, कोई तूंबे में कोई लोटे में ।।
कोई ज्ञान मस्त, कोई ध्यान मस्त, कोई असली में कोई खोटे में।
इक खुद मस्ती बिन, और मस्त, सब रहे अविद्या टोटे में ।।

(५१)

ग़ज़ल

मुझे बेखुदी ! यह तूने भली चाशनी चखाई।
किसी आरजू[1] की दिल में नहीं अब रही समाई ।।
न हज़र[2] है, नै खतर[3] है, न रज़ा[4] है, नै दुआ[5] है।
न खयाले-वन्दगी[6] है, न है आरज़ू[7] खुदाई ।।
न मुक़ामे-गुफ्तगू[8] है, न महले-जुस्तजू[9] है।
न वहां हवास[10] पहुंचे, न ख़िरद[11] को है रसाई[12] ।।
न मकां[13] मकीं[14] का झगड़ा, न ज़मां[15] जमीं[16] का खदशा।
दिले-बेनवा[17] ने मेरे, वहां छावनी है छायी ।।

---

६ ऊपर, ७ नीचे, ८ खाली, अतृप्त, ९ प्रसन्न चित्त।

१ इच्छा, जिज्ञासा, २ परहेज़, ३ डर, ४ राज़ी होना, सन्तुष्ट ५ चाहना, असन्तुष्ट, ६ सेवा का विचार, ७ अभिलाषा, ८ वाणी का स्थान, ९ जिज्ञासा का स्थान व आधार, १० इन्द्रियाँ, ११ बुद्धि, १२ पहुँच, १३ देश, स्थान, १४ स्थान पर रहनेवाला, १५ काल, १६ पृथिवी, देश, १७ बिना हथियारों वा साधनों के दिल ने।

न विसाल[18] है, न हिजरां[19], न सरूर[20] है न ग़म है।
जिसे कहिये ख्वाबे ग़फ़लत[21], सो वह नींद मुझको आई॥

(५२)

इस क़दर महवे[1] तजल्ली हो गया।
अक्स[2] मिट कर नूर पैदा हो गया॥
बन्दगी है बन्दा बनने के लिए।
जब हुआ आज़ाद मौला हो गया॥
ग़ैर-हक़[3] दिल में जहां आया ख्याल।
बुत[4] ख़ुदा के घर में पैदा हो गया॥
साथ है सूरत के सूरत[5]-आफ़रीं।
नक़्श पर नक़्क़ाश[6] शैदा हो गया॥
शकले-अहमद[7] में अहद[8] था जलवागर[9]।
देखने वालों को धोखा हो गया॥
दार[10] पर चढ़ कर कहा मन्सूर[11] ने।
आज अपना बोल बाला हो गया॥
सुन के आसी[12] तेरी खुश[13] इलहानिया।
बुलबुले-शीराज़ गोया[14] हो गया॥

---

१८ मिलाप, १९ जुदाई, २० आनन्द, चैन, २१ सुषुप्ति।

१ आत्म ज्योति में लीन, २ प्रतिबिम्ब, ३ ईश्वर से इतर अर्थात् अनात्मा, ४ मूर्ति, प्रतिमा, ५ मूर्तिकार, ६ चित्रकार मूर्ति खींचने वाला, ७ हज़रत अहमद के रूप में, ८ अद्वैत ब्रह्म, ९ प्रकाशमान्, १० सूली, ११ एक मस्त का नाम, १२ कवि का नाम, १३ मधुर स्वर, १४ बोलने वाला।

(५३)

आज़ादी

सोहनी, ताल दीपचन्दी

बल बे आज़ादी ! ख़ुशी की रूह[1] ! उम्मीदों की जां।
बुलबुला सा दम से तेरे पेच खाता है जहां ।।
मुल्क-दुनिया के तेरे बस इक करिश्मा[2] पर लड़े।
ख़ून के दरिया बहाये, नाम पर तेरे मरे ।।
हाय मुक्ती ! रुस्तगारी[3] ! हाय आज़ादी ! निजात[4] ।
मक़सदे-जुमला मज़ाहिब[5] हैं फ़क़त तेरी ही ज़ात ।।
उंगलियों पर बच्चे गिनते रहते हैं हफ़्ते[1] के रोज़ ।
कितने दिन पर आयेगा यकशम्बा[2] आज़ादी-फ़रोज़[3] ।।
रम बरांडी के मुक़इय्यद[4] सच्ची आज़ादी से दूर ।
हो गये नशे पै लट्टू, बहरे - आज़ादी - सरूर[5] ।।

---

१ आनन्द के स्वरूप, २ खेल, नख़रा, टख़रा, ३ छुटकारा, ४ मुक्ति, ५ सब मतों या धर्मों का उद्देश्य व लक्ष्य । १ सप्ताह के दिन, २ रविवार, ३ आज़ादी देने वाला, ४ आसक्त, क़ैदी, ५ आज़ादी के आनन्द के ख़ातिर, ६ ईश्वर करे, ७ काल, घड़ी, पल

साहबो ! यह नींद भी मीठी न लगती इस क़दर ।
क़ैदे - तन से दो घड़ी देती न आज़ादी अगर ।।
क़ैद में फंस कर तड़पता मुर्ग़ है हैरान हो ।
काश[६] ! आजादी मिले तन को, नहीं तो जान को ।।
लमहा[७] जो लज्ज़त मज़े का था वह आज़ादी का था ।
सच कहें, लज्जत मज़ा जो था वह आज़ादी ही था ।।
क्या है आज़ादी ? जहां जब जैसा जी[८] चाहे करें ।
खाना पीना ऐश[९] गुलछर्रों में सब दिन काट दें ।।
राग शादी नाच इशरत[१०] जलसे रंगा रंग के ।
बंगले, और बाग़ाते-आली योरोपियन[११] ढंग के ! ।।
क़ितअ[१२] टोपी की नयी, फ़ैशन निराला बूट का ।
दिलकशो[१३] -बेदाग़ खिलना बदन पर वह सूट का ! ।।
दिल को रंगत जिसकी भाये शादी[१४] बेखटके करें ।
धर्म की आयीन[१५] चुपके ताक़ पर तह कर धरें ।।
खच्चरें फ़िटनों[१६] के आगे कोचवां का पोश पोश ।
अलबक़ों[१७] का बढ़ निकलना, हिनहिनाना जोश जोश ।।
कोट पहनाता है नौकर, जूता पहनाये गुलाम ।
नाक है आक़ा, चढ़ाता जल्द, बे नुतफ़ा हराम ! ।।
मुंह में ग़ट ग़ट सोडावाटर और सिगारों का धुआं ।
ज़ोफ़[१७] की दिल में शिकायत, राम की अब जा[१८] कहां ।।

---

८ चित्त, ९ विषय भोग, १० अंग्रेज़ों की तर्ज के मकान, १२ काट छाँट, वज़ातर्ज़, १३ चित्ताकर्षक, १४ खुशी, १५ नियम, शास्त्राज्ञा १६ घोड़े १७ कमज़ोरी, १८ स्थान, जगह

क्या यह आज़ादी है ? हाय ! यह तो आज़ादी नहीं ।
गोये - चौगां[3] की परेशानी है, आज़ादी नहीं ।।
अस्प[4] हो आज़ाद सरपट, क़ैद होता है सवार ।
अस्प हो मुतलक़[5] इनां[6], हैरान रोता है सवार ।।
इंद्रियों के घोड़े छूटे, बाग डोरी तोड़ कर ।
वह मरा, वह गिर पड़ा, असवार सिर मुंह फोड़ कर ।।
ताज़ी[7] तौसन तुन्दखू[8] पर दस्तो-पा[9] जकड़े कड़े ।
ले उड़ा घोड़ा मिज़प्पा[10], जान के लाले पड़े ।।
जाने-मन[11] ! आज़ाद करना चाहते हो आप को ।
कर रहे आज़ाद क्यों हो आस्तीं[12] के सांप को ? ।।
हां, वह है आज़ाद जो क़ादिर[13] है दिल पर जिस्म पर ।
जिसका मन क़ाबू में है, क़ुदरत[14] है शक्लो इस्म पर ।।
ज्ञान से मिलती है आज़ादी यह राहत[15] सर बसर[16] ।
वार के फेंकूं मैं इस पर दो जहां का मालो-ज़र[17] ।।

वेदान्त आलमगीर

(४५)

(१) गर कमिश्नर हो, लाट साहब हो ।
या कोई और ग़ैर साहब हो ।।

---

३ खेल के गेंद, ४ घोड़ा, ५ पूरा, बिल्कुल, ६ अपने वश में अर्थात् लगाम डोरी से क़ाबू में किया हुआ, ७ अरबी घोड़ा, ८ बदमिजाज, तेज, ९ हाथ पाँव जकड़े हुए, १० नाम है, ११ ऐ मेरी जान (प्यारे), १२ बग़ल के सर्प को, १३ बलवान, बली, १४ ताक़त, बल, १५ आराम, १६ लगातार, १७ धन, दौलत ।

हर कोई उस तलक नहीं जाता ।
जो है अधिकारी वह दख़ल पाता ।।
लेक[1] अब अपने घर में आना हो ।
कौन है उस समय जो माने[2] हो ।।
जब कोई अपने घर को आता है ।
हैफ़[3] उस पर है, रोकता जो है ।।
हो जो वेदान्ती, ग़ैर से यारी ।
तब तो कहना बजा था अधिकारी ।।
यह तो जी ! अपने घर की विद्या है ।
पाना इस को तो फ़र्ज़ सबका है ।।
"मैं हूं खुद ब्रह्म," यह करो अभ्यास ।
मैं नहीं जिस्मो-इस्मो[4]—नौकर दास ।।
"मैं हूं बेलौस, पाक[5] आला ज़ात[6]" ।
जेह्ल[7] की हो कभी न जिस में रात ।।
मैं हूं खुर्शेदे[8] तेज़ अनवर[9] आप ।
मैं था ब्रह्मा का बाप सब का बाप ।।
वेद है मेरा एक ख़र्राटा ।
भेद दुनिया का मेरा ख़र्राटा ।।
राम कहता नहीं है सैकिडहैंड[10] ।
वह तो खुद है श्रुति, न सैकिडहैंड ।।

---

१ किन्तु, २ मना करने वाला, रोकने वाला, ३ अफ़सोस, शोक, ४ शरीर और नाम, ५ निष्कलंक, बेदाग़, शुद्ध, पवित्र, निर्लिप्त, ६ परम स्वरूप, ७ अविद्या, अज्ञान, ८ सूर्य, प्रकाश, ९ स्वरूप, १० दूसरे की सुनी सुनाई,

वह जो कमज़ोर आप होते हैं ।
लुक़मये[११] - तीन ताप होते हैं ।।
हों पढ़ाने के जो न अधिकारी ।
उनको मिलता नहीं है अधिकारी ।।
(२) एक दफ़ा देव - ऋषि नारद ने ।
रहम कर ख़ूक[१२] से कहा उसने ।।
"चल तुझे ले चलेंगे हम बैकुण्ठ ।
लीला अद्भुत विचित्र है वैकुण्ठ" ।।
ख़ूक बोला गज़ब से तब नादां ।
क्या मुझे मिल सकेगा कीचड़ वां[१३] ? ।।
जब ऋषी ने कहा "नहीं यह तो" ।
ख़ूक बोला "मैं जाऊं काहे को ?" ।।
यह न समझा, वहां जो जाऊंगा ।
जिस्म भी तो नया ही पाऊंगा ।।
हब्से-दुनिया[१४] के प्यारे शहतीरां ! ।।
ऐ स्तूंहाय दुनिया या बोहतां[१५] ! ।।
तुम न जी[१६] में ज़रा भी घबराओ ।
खटका मुतलक़ न दिल में तुम लाओ ।।
हाय ! वेदान्त क्या ही कर देगा ।
ज़ेर[१७] कर देगा, ज़बर[१८] कर देगा ।।
तुम रखो अपने जी में इतमीनान[१९] ।
शक नहीं इसमें एक रत्ती जान ।।

---

११ ग्रास, १२ वाराह, सूअर, १३ वहाँ से मुराद है, १४ दुनिया के क़ैदी, १५ झूठ, १६ चित्त, १७ नीचा, १८ ऊँचा, १९ धैर्य, हौसला, तसल्ली ।

गर अवारिज़[२०] तेरे बदल देगा ।
साथ तुमको भी और कर देगा ।।
लोटना छोड़ियेगा कीचड़ में ।
जालसाज़ी में, झूठ की जड़ में ।।
ख़ाक दुनिया की मत उड़ाइयेगा ।
असल अपना न भूल जाइयेगा ।।
"मैं हूं यह जिस्म", फ़ोहश बोली है ।
स्वांग छोड़ो, सितम[२१] यह होली है ।।
(२) मिस्र की खोद लीं जो मीनारें ।
हाय ! मुर्दे भरी वह मीनारें ।।
मम्मी मुर्दे उन्हीं में रखे थे ।
ऐसी तरकीबो - अक़्लमन्दी से ।।
गो हज़ारों बरस भी हों बीते ।
मुर्दे आते नजर हैं ज्यों जीते ।।
प्यारे भारत के हिन्दू बाशिन्दो ।
ग़ुस्सा मत करना ज़ाहिदो[२२] ! रिन्दो[२३] ।।
जी रहे हो कि मर गये हो तुम ? ।
मम्मी मीनार बन गये हो तुम ।।
जीते तुम थे ऋषी मुनी थे जब ।
मम्मी क्यों हो हज़ार साल के अब ?
क्यों हो ज़िन्दा[२४] बदस्ते-मुर्दा आप ।
नाम रौशन[२५] डुबोया उनका आप ।।

---

२० इर्द - गिर्द, अड़ोस - पड़ोस, २१ ग़ज़ब की होली, २२ कर्मकांडी, २३ मस्त, २४ जीते जी मौत के हाथ होना, २५ प्रकाशमान ।

वह तो जीते थे, तुम भी जी उट्ठो ।
मुर्दा बच्चे न उनके हो बैठो ॥
नाम तो ले रहे हो व्यास का तुम ।
काम करते हो अदना[26] दास का तुम ॥
बेटा वह ही सपूत होता है ।
बाप से बढ़ के पूत होता है ॥
छोड़ दो नाम लेना ऋषियों का ।
खुद ऋषी हो अगर न अब बनना ॥
जब यह कहता है एक नालायक़ ।
"भृगू मेरा बुज़ुर्ग था लायक़" ॥
भृगू मनसूब[27] उससे होता है ।
शर्म से अर्क़[28] - अर्क़ रोता है ॥
दु:ख मत दो उन्हें सताओ मत ।
शर्म से सर नगूं[29] बनाओ मत ॥
नाम - लेवे[30], अजब मिले ऐसे ।
धब्बे यह नाम को लगे कैसे ?
मूंछ दाढ़ी लगा के बुड्ढे की ।
बच्चा बूढ़ा नहीं कभी होगा ॥
उसको वाजिब है तरबियत पाये ।
वक्त पर यूं बुज़ुर्ग ही होगा ॥
उनकी दाढ़ी लगाया चाहते हो ।
तरबियत[31] से गुरेज़[32] करते हो ॥

---

२६ तुच्छ दास, २७ सम्बन्धी, २८ पसीना-पसीना होना, २९ नीचे सिर-वाला, ३० नाम लेनेवाले, ३१ पालन पोषण, शिक्षा पाना, ३२ भागना ।

है मुनासिब बुज़ुर्ग की ताज़ीम ।
खन्दावर[33] न चाहिए तकरीम[34] ।।
बूढ़ा खाता है खिचड़ी पतली रोज़ ।
नक़्ल से कब जवान हो पीरोज़[35] ।।
प्यारे ! बनियेगा आप ज़िन्दा पीर ।
उन बुज़ुर्गों की मत बनो तस्वीर ।।
नक्श जब है उतारता नक्क़ाश[36] ।
तकता रहता है असल को नक्काश ।।
नक्श यह गरचे बादशाह का हो ।
फिर भी मुर्दा है, ख्वाह किसी का हो ।।
फ़ेल[37] अतवार[38] ऋषियों मुनियों के ।
ऋषी तुमको नहीं बना सकते ।।
अमल ज़ाहिर जो उनको ज़ेबा थे ।
वक्त था और, और ही दिन थे ।।
जिस्म उनके थे जो, उन्हीं के थे ।
वह तुम्हारे नहीं कभी होंगे ।।
करके तक़लीद[39] तुम बना ही लो ।
सूरते - शेर, नारा[40] क्योंकर हो ? ।।
आओ तजवीज़ एक बतलायें ।
ऋषी बनने की बात जतलायें ।।

---

३३ हँसते मुख से, ३४ इज्जत, ३५ बुड्ढा, ३६ चित्रकार, ३७ कर्म ३८ विधियाँ, ३९ और की देखा देखी, बिना विवेचना के किसी की पैरवी करना, या नक़ल करना, ४० गरज, आवाज़ ।

देह सूक्ष्म को और कारण को।
चीरकर चढ़िये मेहर[४१]-रौशन को ॥
चढ़िये ऊपर को असल अपनी को।
ज़िन्दगी तुममें भी ऋषी की हो ॥
मेहर-रौशन जो आत्मा है तेरा।
यह ही वाशिष्ठ कृष्ण राम का था ॥
उसमें निष्ठा, निशस्त कर मुख्तार।
छोड़िये ज़िक्रो-फ़िक्र सब बेकार ॥
नक़ल मत करिये फ़ेल-बेरूनी[४२]।
आत्मा एक ही है अन्दरूनी ॥
ब्राह्मणो ! आप सीख लो विद्या।
फिर यह घर-घर फिरो पढ़ाते जा ॥
और क़ौमें तुम्हारे बच्चे हैं।
गर शिक़ायत करें, वह सच्चे हैं ॥
जबर से, क़हर[४३] से, मुहब्बत से।
ज्ञान दीजे उन्हें मुरब्बत[४४] से ॥
वक्त उपदेश को अगर दोगे।
तो ही क़ायम स्वरूप में होगे ॥
गङ्गा हर वक्त बहती रहती है।
साफ़ निर्मल जभी तो रहती है ॥
कांटे बोता है, झूठ हो जिसमें।
याद रखना है मौत ही उसमें ॥

---

४१ प्रकाश स्वरूप सूर्य (आत्मा), ४२ बाहर से कर्मों की, ४३ सख्ती या गुस्से से, ४४ लिहाज़ से।

ज्ञान के बिना शुद्धि असम्भव

(५५)

पिदरे-मजनूं[1] ने पिदरे-लैला[2] से ।
गिरियां[3]-ज़ारी से आ कहा उसने ।।
मेरी सारी रियासतें लीजे ।
उम्र भर तक ग़ुलाम कर लीजे ।।
मेरे लड़के को लैला जादू-चश्म[4] ।
दीजे, छोड़ दीजे, आख़िर ख़श्म[5] ।।
पिदरे-लैला ने फिर मुहब्बत से ।
यूं कहा प्यार ही का दम भर के ।।
मैं तो हाज़िर हूं लैला देने को ।
उज़्र कोई भी है नहीं मुझको ।।
पर वह आख़िर जिगर का टुकड़ा है ।
न वह पत्थर शजर[6] का टुकड़ा है ।।
वह भी इन्सां-शिकम[7] से आयी है ।
आस्मां से तो गिर न आयी है ।।
क़ैस[8] तुमको अज़ीज़ बेशक है ।
पर वह मजनूं[9] है, इसमें क्या शक है ।।
ऐसी हालत में लड़की क्यों कर दूं ।
इक जनूनी के मैं गले मढ़ दूं ?

---

१ मजनूं (एक प्यारा या आशिक़) का पिता, २ लैला (प्रिया वा माशूक़ा) का पिता, ३ रोते-रोते, ४ जादू भरे नेत्रवाली, ५ गुस्सा, ख़फ़गी, ६ वृक्ष; ७ मनुष्य के पेट, ८ मजनूं, ९ पागल ।

मर्ज़[१०] मजनूं का पहले दूर करो।
सिर से सौदा अगर काफ़ूर करो॥
शौक़ से लीजे, तब तुम्हारी है।
लैला दौलत यह सब तुम्हारी है॥
हाय ज़ालिम, सितमगर! ए बेरहम!
वाये नादां ग़रूर सूरते ज़हम[११]! ॥
देता लैला को वाये आज नहीं।
और मजनूं का तो इलाज नहीं॥
और तो सब इलाज कर हारा।
बचता मजनूं नहीं वह बेचारा॥
मरा मजनूं बग़ैर लैला के।
था न चारा[१२] बग़ैर लैला के॥
हिन्दू पंण्डित महात्मा साधो!
जी कड़ा क्यों है? रहम को राह दो॥
जीव मजनूं बना है दीवाना।
दश्ते-ग़म छानता है वीराना॥
दश्ते-दुनिया[१३] में वहशी आवारा।
लैला "आनन्द" के लिए पारा[१४]॥
लैला समझे गुलों को चुनता है।
फिर पड़ा सिर को अपने धुनता है॥
सरो[१५] को जान कर यह लैला है।
वहम से जान, अपनी खो दी है॥

---

१० पागलपन, ११ दुःख रूप, (तकलीफ़ देने की सूरतवाला), १२ इलाज, १३ दुनिया के गङ्गल, १४ बेक़रार, अशान्त, अस्थिर, १५ एक वृक्ष का नाम है।

चश्मे-ग्राहू[16] को चश्मे-लैला[17] मान ।
पीछे भटका फिरे है हो हैरान ।।
असली ग्रानन्द-ज़ात से महरूम[18] ।
ख़ारो-ख़श[19] में मचा रहा है धूम ।।
गाह[20] ग्रानन्द ज़र को माने है ।
बौल[21] में गाह खाक छाने है ।।
लोग कहते न हों बुरा मुझको ।
नङ्ग रह जावे, नाक हाथी को ।।
राय लोगों की, हो न मुतग़य्यर[22] ।
उसके पीछे फिरे है मुतहय्यर[23] ।।
सारी वहशत[24], यह बादिया-गर्दी[25] ।
लैला ख़ातिर है, जुमला[26] सिरदर्दी ।।
लैला मिलते जुनून[27] जायेगा ।
ब्रह्म-विद्या बिदूं[28] न जायेगा ।।
सम दम ग्रायेंगे ब्रह्म-विद्या से ।
फ़िक्र जायेंगे ब्रह्म-विद्या से ।।
सम हो पहले, व ज्ञान पीछे हो ।
सेर[29] हो लें, तुग्राम[30] पीछे हो ।।
हाय पण्डित ! गज़ब यह ढाते हो ।
उल्टी गङ्गा पड़ें बहाते हो ।।

---

१६ मृगनयन, मृग की ग्राँख, १७ लैला का नेत्र, १८ रहित, विहीन, बेख़बर, १९ घास ग्रौर काँटे में, २० कभी, २१ मूत्र- पेशाब (ग्रभिप्राय विषय भोग), २२ बदलने वाली, २३ ग्राश्चर्यवान, हैरान, २४ पशुपन, २६ जङ्गलों में घूमना, २७ सब, कुल, २८ पागलपन, २९ बिना, बग़ैर, ३० तृप्त, सन्तुष्ट, ३० भोजन, खाना ।

यह इसी पाप का नतीजा है।
डूबे दुःखों में आज जाते हो॥
वेद-दानो! यह मौत मत रखना।
धी[31] को, बुद्धी को घर में मत रखना॥
लड़की घर में न ज़ेब[32] देती है।
धन पराया फ़रेब देती है॥
ब्रह्म-विद्या का दान अब कर दो।
वरना इज्ज़त से हाथ धो बैठो॥
वक्त देखो, समय को संभालो।
ज़ात क़ायम हो, काया[33] पलटा लो॥
नंगो-नामूस अब इसी में है।
बचना ज़िल्लत से बस इसी में है॥
डूबा तारा तुम्हारा पूरब को।
ब्रह्म-विद्या चली है यूरप को॥
हिंद मजनूं बना है दीवाना[34]।
तलमलाता है मिस्ले परवाना[35]॥
मुज़दये-वस्ल[36] अब सुना देना।
ख़ुशो-ख़ुर्रम[37] अदा से गा देना॥
वेद का क़र्ज़ यह चुका देना।
फ़र्ज अपना यह कर अदा देना॥

---

३१ लड़की रूपी बुद्धि, ३२ अच्छी लगती है, ३३ शरीर, ३४ पागल, ३५ पतंग की तरह, ३६ अभेदता (आत्मा-साक्षात्कार) की खुश ख़बरी, ३७ प्रसन्न मुखड़े से।

गुनाह

(५६)

पाप क्या है? गुनाह कितने हैं?
दाख़िले-जेहल[1] सारे फ़ितने[2] हैं ।।
आत्मा जिस्म ही को ठहराना ।
बूटा पापों का यह है लगवाना ।।
आत्मा पाक[3], हस्त[4], बरतर[5] है ।
इल्म-वाहिद[6], सरूरो-अकबर[7] है ।।
जिस्म[8] को शाने-आत्मा[9] देना ।
रात को आफ़ताब[10] कह देना ।।
किज़्बो बुतलां[11] यही है पाप की जड़ ।
एक ही जेह्ल तीन ताप की जड़ ।।
क्या तकब्बुर[12] है? किबरयाई[13]-ए-ज़ात ।
बेच देना दरोग़[14] जिस्म के हाथ ।।
क्रोध क्या है? जलाले[15]-वाहिदे-ज़ात ।
बेच देना दरोग़-जिस्म के हाथ[16] ।।
क्या है शहवत[17]? सरूरे-पाकेज़ात[18] ।
बेच देना हक़ीर[19] जिस्म के हाथ ।।

---

१ अज्ञान में प्रविष्ट, २ फ़िसाद, झगड़े, ३ शुद्ध, पवित्र, ४ सत्ता मात्र, वास्तविक वस्तु, ५ परम, सर्वोपरि, ६ अद्वैत ज्ञान, ७ घनानन्द, ८ शरीर, देह, ९ आत्मा का पद, १० सूर्य, ११ झूट मूठ, व्यर्थ झूठ, तुच्छ झूठ, १२ अभिमान, अहंकार, १३ निज स्वरूप की बड़ाई, १४ झूटा शरीर, १५ अद्वैत स्वरूप की महिमा व रौनक़, १६ हाथ, कर, १७ विषयानन्द, १८ शुद्ध, स्वरूप आत्मा का आनन्द, १९ तुच्छ ।

क्या अदावत[1] है ? पाके वहदते-ज़ात[2] ।
बेच देना हक़ीर जिस्म के हाथ ।।
हिर्स[3] क्या ? सब पै कब्ज़ये-कुल्ली-ए-ज़ात ।
बेच देना हक़ीर जिस्म के हाथ ।।
मोह क्या है ? क़यामे-यक्सां-ज़ात ।
बेच देना हक़ीर जिस्म के हाथ ।।
पस गुनाह क्या है ? आत्मा का हक़[6] ।
जेहल[7] को छीन देना हक़ नाहक़[8] ।।
हस्ते[9]-मुतलक़ का जेह्ल में संसर्ग[10] ।
तोशा[11] है पाप का, गुनाह का वर्ग[12] ।।

कलियुग

(५७)

सच्चे दिल से विचार कर देखो ।
तुमने पैदा किया है कलियुग को ।।
मैं नहीं हूं ख़ुदा, यह कलियुग है ।
जिस्म ही हूं, यक़ीं यह कलियुग है ।।
जिस्म है आत्मा, यह कलियुग है ।
चारवाकों का मत, यह कलियुग है ।।

---

१ शत्रुता, दुश्मनी, २ अद्वैत स्वरूप आत्मा, ३ लालच, ४ सर्व व्यापक की मिलकीयत (सर्वव्यापकता) का कब्जा वा अधिकार, ५ एक रस स्वरूप की स्थिरता, ६ अधिकार, ७ अविद्या, अज्ञान, ८ व्यर्थ बिना प्रयोजन, ९ सत-स्वरूप, १० प्रवेश, दख़ल, ११ भार, असबाव, ज़ख़ीरा, १२ पत्ता, फल ।

खाऊं, पीयूं, मज़े उड़ाऊंगा ।
हां, विरोचन[१] का मत, यह कलियुग है ।।
बंदा-ए जिस्म[२] ही बने रहना ।
सब गुनाहों का घर, यह कलियुग है ।।
जिस्म से कर निशस्त[३] अपनी दूर ।
हूजिये[४] आत्मा में खुद मसरूर[५] ।।
जिस्म में गर निवास रक्खोगे ।
ज्ञान से गर हिरास[६] रक्खोगे ।।
पाप हरगिज़ न छोड़ेंगे, हरगिज़ ।
ताप हरगिज़ न छोड़ेंगे, हरगिज़ ।।
दूर कलियुग अभी से कीजेगा ।
दान दीजेगा, दान दीजेगा ।।
ठीक करयुग है, यह नहीं कलियुग ।
दानकर, दूर कीजिये कलियुग ।।
हिंद पर गहन[७] लग गया काला ।
दान देने से बोल हो वाला ।।

दान

(५८)

दान होता है तीन क़िस्मों का ।
अन्न का, इल्म का, व इरफ़ां[१] का ।।

---

१ असुरों के राजा का नाम है, जो केवल शरीर को आत्मा करके मानता और पूजता था, २ शरीर का अनुचर दास, गुलाम वा देहासक्त, ३ निष्ठा, स्थिति, ५ आनन्द, मग्न, ६ भय, ७ ग्रहण ।

१ आत्म ज्ञान (ब्रह्मविद्या) ।

अन्न का एक दिन के लिए।
जिस्मे-बेरूँ[2] को तक़वियत[3] देवे॥
इल्म का दान उम्र भर के लिए।
जिस्मे-दोयम[4] को कर धनी देवे॥
दान इरफ़ां का ता अबद[5] दायम।
कर सरूरे-अज़ल[6] में दे क़ायम॥
सबसे बढ़कर तो तीसरा है दान।
दान इरफ़ां का, ज्ञान ही का दान॥
पण्डितो! ज्ञान दान दीजेगा।
हिन्द में आम दान दीजेगा॥
गर[7] यह कलियुग का गहन[8] है बाक़ी।
कसर है ज्ञानदान देने की॥
लो बला टल गई है, वाह वाह वा।
हिन्द रौशन हुआ, आहाहा हा॥
जाओ कलियुग, यहां से जाओ तुम।
भागो भारत से, फिर न आओ तुम॥
हुक्मे-नातिक़[9] है राम का तुम पर।
बांध बिस्तर को अब उठाओ तुम॥
हिन्द ही रह गया है क्या तुमको?
आग में, जल में, सिर छिपाओ तुम॥

---

२ वाह्य स्थूल शरीर, ३ पुष्टि ४ यहाँ अभिप्राय सूक्ष्म शरीर से है, ५ नित्य सदा के लिए, ६ अनादि निजानन्द, ७ यदि, अगर, ८ ग्रहण, ९ अटल आज्ञा अर्थात् न टूटने वाला हुक्म।

नै बाँसुरी

(५९)

ख़ाली बिलकुल है बाँस की यह नै[1] ।
चन्द सूराख़दार बेशक है ।।
बोसा[2] देता है उसको जब नाई[3] ?
निकल उस नै से सात सुर आई ।।
रागनी राग सब हुए ज़ाहिर ।
मुख्तलिफ़ भाग सब हुए बाहर ।।
एक ही दम[4] ने यह सितम ढाया ।
कलेजा अब बल्लियों[5] उछल आया ।।
सब सुरों में जो मौज मारे है ।
दम वह तेरा ही कृष्ण प्यारा है ।।
दम तो फूंके था एक मुरलीधर ।
मुख्तलिफ़ ज़मज़मे[6] बने क्योंकर ? ।।
सामआ[7], बासरा[8], ख्यालो-अक़ल ।
सब में वासिल[9] हुआ, करे है नक़ल ।।
मर्द, औरत, गदा[10] में, शाहों में ।
क़हक़हों, चहचहों में, आहों में ।।
क़ुतुब[11] तारों में, मेहर[12] में, माह[13] में ।
झोंपड़े में, महलसरा, राह[14], में ।।

---

१ बाँसुरी, २ चुम्बन, चूमना, ३ बाँसुरी बजाने वाला, ४ श्वास, फूंकना, ५ कलेजा आनन्द से इतना लहराने लगा कि प्रसन्नता अन्दर न समा सकी, ६ राग, गीत, स्वर, ७ सुनने की शक्ति, ८ देखने की शक्ति, ९ अभेद हुआ, १० साधु फ़क़ीर, ११ ध्रुवतारा, १२ सूर्य, १३ चाँद, १४ रास्ता ।

एक ही दम का यह पसारा है।
सब में वासिल है, सबसे न्यारा है॥
दारे-दुनिया[15] की इक तिही[16] नै में।
प्राण तेरे ने राग फूंके हैं॥
तू ही नाई है, कृष्ण प्यारा है।
सारी दुनिया तेरा पसारा है॥

शीश मन्दिर

(६०)

शीश मन्दिर में इक दफ़ा बुल[1]-डाग।
आ फंसा तो हुआ बगूला आग॥
जौक़ दर जौक़[2] पल्टनें सग[3] थे।
ठट के ठट[4] लग रहे थे कुत्तों के॥
सख्त झुंझलाया यह, वे झुंझलाये।
चार जानिब[5] से तैश[6] में आये॥
बिगड़ा मुंह इसका, वे भी सब बिगड़े।
जब यह उछला, वे सबके सब कूदे॥
जब यह भूंका, सदाये-गुम्बद[7] से।
क्या ही औसां[8] ख़ता हुए इसके॥
"मैं मरा, मैं मरा" समझ कर वाये।
मर गया डाग, सिर को धुनकर वाये॥

---

१५ दुनिया का घर, १६ ख़ाली (खोखली) बाँसुरी।

१ एक प्रकार का कुत्ता, २ गिरोह के गिरोह, ३ कुत्ते, ४ झुण्ड के झुण्ड, ५ चारों ओर से, ६ ग़ुस्सा, ७ गुम्बज़ की आवाज़, ८ आश्चर्यमय, घबराहट युक्त चित्त।

शीश मन्दिर में आ के दुनिया के।
जाहिले-ग़ैर-दां[९] मरा भौंके॥
वहम में क्यों भरमता जाता है।
अपने आपे में क्यों न आता है॥

दृष्टान्त

(६१)

गाड[१] मालिक मकान का आया।
मर्दे-दाना[२] ने जल्वा फ़रमाया[३]॥
रूये[४]-ज़ेबा को हर तरफ़ पाया॥
फ़ुर्ते-शादी[५] से सीना भर आया।
फ़र्शे-अतलस नफ़ीस झालरदार॥
इत्रो-अम्बर लतीफ़ ख़ुशबूदार॥
तख्ते-ज़र्री[६] पै रेशमी तकिये।
गद्दे-मख़मल के ज़ेब देते थे॥
बैठा ठस्से से ज़ीनते-खाना[७]।
गुदगुदी दिल में, झूमता शाना[८]॥
जब नज़र चार सू[९] उठा देखा।
कुछ न अपने से मासिवा[१०] देखा॥
गरचे वाहिद[११] था, पर हज़ारों जा[१२]।
जल्वा अफ़गन[१३] रुये-सफ़ा[१४] देखा॥

---

९ द्वैत देखने वाला मूर्ख वा अज्ञानी,

१ ईश्वर, २ ज्ञानी पुरुष, ३ दर्शन दिया, ४ सुन्दर स्वरूप, ५ आनन्द की अधिकता से, ६ सुनहरा तख्त, ७ घर को रौनक़ देने वाला स्वरूप, ८ कन्धे, ९ तरफ़, १० इतर, अतिरिक्त, ११ अद्वैत, १२ स्थान, १३ प्रकाशमान, १४ शुद्ध स्वरूप।

गाह[15] मूंछों को ताव दे दे कर ।
सूरते - वीर - रस[16] में आ देखा ।।
करके शृंगार कंघी पट्टी का ।
पान होठों तले दबा देखा ।।
तेग़[17] मिसरी के देखने के लिए ।
प्यारी - प्यारी भवें चढ़ा देखा ।।
ख़ंदेय - गुल[18] की दीद[19] की ख़ातिर ।
क्या तहे-दिल[20] से खिलखिला देखा ।।
अब्रे नेसां[21] का लुत्फ़ लेने को ।
तार आंसू का भी लगा देखा ।।
ग़ैर देखे है जैसे इस तन को ।
इस तरह उस से हो जुदा देखा ।।
अक्स[22] इक छोड़ असल को आये ।
सब वजूदों[23] में फिर समा देखा ।।
गोलियां पीली काली सुर्ख़ और सब्ज़ ।
मुंह से अपने निकाल बाज़ीगर ।।
आप ही देखता है अपने रंग ।
आप ही हो रहा है मुतहइय्यर[24] ।
बैठ हर तरह शीश मन्दिर में ।
ठाठी पट्ठे ने बन बना देखा ।।

---

१५ कभी, १६ वीर पुरुष के रूप में, १७ तलवार, १८ खिला हुआ पुष्प, १९ दृष्टि, २० दिल भर कर, २१ वर्षा ऋतु का बादल, २२ प्रतिबिम्ब, २३ वस्तुओं (शरीर) में, २४ आश्चर्य, हैरान।

(सुषुप्ति) मस्त कारण शरीर बन लेटा । **समष्टि**
चार कूटों में लेटता देखा ।। **व्यष्टि**
(स्वप्न) खुद जो जिस्मे - ख्याल को धारा ।
जुमला आलम[२५] ख्याल का देखा ।।
(जाग्रत) जागी सूरत क़बूल की जब खुद ।
सब को फिर जागता हुआ देखा ।।
तुझ से बढ़कर हूं, तेरा अपना आप ।
मुझ को अपने से क्यों जुदा देखा ।।
एक ही एक ज़ाते - वाहिद[२६] राम[२७] ।
जुमला सूरत में जा बजा देखा ।।
गद्दी, तकिये से मैं नहीं हिलता ।
हिलता किसनें सुना है या देखा ।।
क्यों खुशामद की बात करते हो ।
शीशे मसनद[२८] मकान ही कब था ।।
यह तो सब इक ख्याली लीला थी ।
मौज में अपनी आप ज़ाहिर था ।।
मौज भी आप, लीला वीला[२९] आप ।
लाल नुत्क़ों[३०]–ज़ुबान यां पर था ।।
नुत्क़ में और शब्द में मौजूद ।
एक वाहिद स्फोट रौशन था ।।

---

२५ समस्त संसार, २६ अद्वैत तत्त्व, २७ ईश्वर से भी मुराद है, २८ गद्दी, तख्त, २९ खेल इत्यादि, ३० बोलने की शक्ति, जिह्वा ।

कोहेनूर का खोना

(६२)

ज़ेरे-नादिर[1] हुआ मुहम्मद शाह।
देहली उजड़ी ज़लील अबतर आह[2]।।
गरचे नादिर ने ख़ूब ही ढूंढा।
न मिला कोहे-नूर का हीरा।।
कह दिया इक हरीस[3] लौंडी ने।
है छिपाया कहां मुहम्मद ने।।
"उस को पगड़ी में सी के रखता था।
जुदा उसको कभी न करता था।।
फिर तो बेहद तापक से आकर।
बोला नरमी से, प्यार से नादरि।।
ऐ शाहे-मेहरवां मुहम्मद शाह!
यार भाई है तेरा नादिर शाह।।
पगड़ियां आज तो बदल लेंगे।
दिल मुहब्बत से ख़ूब भर लेंगे।।
रस्मे-उल्फत अदा करो[4] हमसे।
यह मुहब्बत वफ़ा करो हमसे।।
छुट गयीं गो हवाइयां मुंह पर।
ज़ाहिर खँदां[5] से बोला हाँ हाँ कर।।
शौक़ से पगड़ी बदलियेगा शाह! ।।
मरा बेबस रंगीला[6] देहली-शाह।।

---

१ नादिरशाह के अधीन, २ बहुत बुरा, ३ लालची, ४ प्रेम की रीति रस्म, पूरी करो, ५ ऊपर से हँसकर, ६ शौकीन।

थी मुहब्बत को ज़ाहिरी इज्ज़त ।
यह तबद्दुल[७] या असल में ज़िल्लत[८] ।।
क़ीमते-ममलुकत[९] से बढ़कर था ।
हीरा पगड़ी में उसको खो बैठा ।।
ऐ अजीज़ों ! यह इज्ज़तो-दौलत ।
नफ़्स नादिर है, बर सरे - उल्फ़त ।।
दाम-तज़वीर[१०] में न आजाना ।
जां न भरें में फंस फंसा जाना ।।
खिलअते फ़ाखरा[११] से हो ख़ुर्सन्द[१२] ।
खो के हीरा बने हो दौलतमंद ।।
चैन पड़ने का है नहीं हरगिज़ ।
अमन हीरे बिना नहीं हरगिज़ ।।
ज़ाती[१३] जौहर से ज़ाती इज्ज़त है ।
बाक़ी मा-ओ[१४]-मनी की इल्लत[१५] है ।।
जब तू फ़ख़रे खिताब लेता है ।
आत्मा को अताब[१६] देता है ।।
तू करीमे जहां[१७] हैं, दाता है ।
छोटा अपने को क्यों बनाता है ।।
सब को रौनक़ है तेरे जल्वे[१८] से ।
तुझ को इज्ज़त भला मिले किस से ।।

---

७ बदलना, ८ बेइज्ज़ती, ९ सारे राज्य की क़ीमत, १० दग़ा, फ़रेब का जाल, ११ गर्व वा मान का हेतु रूप वस्त्र वा पारितोषिक, १२ प्रसन्न, १३ असली, रत्न, १४ अहंकार और धन इत्यादि, १५ बीज, कारण, १६ ख़फ़गी, ग़ुस्सा, क्रोध १७ संसार का सख़ी (दाता), १८ प्रकाश ।

सनद सर्टीफ़िकेट डिगरी की ।
आर्ज़ू में है क़ैदे-ग़म तन की ।।
तू तो माबूद[१९] है ज़माने का ।
क़ैद मत हो किसी बहाने का ।।

नेपोलियन के प्रति

(६३)

वाह रे नेपोलियन ! निडर शहे मर्द ।
टिड्डी दल फ़ौज तेरे आगे गर्द ।
"हाल्ट[१] !" कहकर सिपाहे दुश्मन को ।।
लर्ज़ा[२] कर दे अकेला लश्कर को ।
जान - बाज़ी में, शेरेमर्दी में ।
खुश खुशां दश्ते-ग़म-नवरदी[३] में ।।
रोब[४] से और गज़ब की सौलत[५] से ।
तू बराबर था हिन्दू औरत[६] के ।।
राजपूतों की औरतों का दिल ।
न हिले गरचे कोह[७] जाये हिल ।।
उनकी जानिब से शेर को चैलन्ज[८] ।
लेक शोहरत के नाम से है रंज ।।
पुश्ते-कुश्तों[९] के कर दिये हर सू[१०] ।
खूंन के जुए[११] भर दिये हर सू ।।

---

१९ पूजने योग्य, पूजनीय ।

१ खड़े हो जाओ, २ कंपा देना, ३ ग़म के जंगल में मारा-मारा फिरना, ४ प्रभाव, ५ दबदबा, डर, ६ स्त्री, ७ पर्वत, ८ ललकार, ९ मरे हुओं के ढेर, १० हर तरफ़, ११ नहरें ।

मुल्क पर मुल्क तू ने मार लिया ।
पर कहो, इससे क्या सँवार लिया ?
देना चाहता था राज को वसग्रत[१२] ।
पर मिली हिर्सो-ग्राज़[१३] को वसग्रत ।।
दिल तो वैसा ही रह गया प्यासा ।
जैसा जंगो-जदल[१४] से पहिले था ।।

सीज़र के प्रति

(६४)

ऐ शहनशाहे - जूलियस सीज़र ! ।
सारी दुनिया का तू बना ग्रफ़सर ।।
इतना क़िस्से को तूल क्यों खींचा ? ।
दिल ज़मीं में फ़िज़ूल क्यों ऐंठा ?
सहम दिल में रहा तग्रज्जुब[१] खेज़ ।
खदशा[२] पहलू में, मौजे-दर्द-ग्रंगेज़[३] ।।
ग्रा तेरी मंज़िलत[४] को बढ़ायें ।
हिन्दू कैवां[५] से भी परे जायें ।।
क्यों न इतना भी तुमको सूझ पड़ा ।
जिसमें शै[६] ग्राये वह है शै से बड़ा ।।
जुज़्व[७] कुल[८] से हमेशा छोटा है ।
छोटा कमरे से बक्स व लोटा है ।।

---

१२ विस्तार, विशालता, १३ लालच, लोभ, ग्राशा, १४ लड़ाई ।

१ ग्राश्चर्य बढ़ाने वाला, २ डर, ३ दर्द देने वाली लहर, ४ पद, ५ शनि तारे के सिरे से भी दूर, ६ वस्तु, ७ टुकड़ा, ग्रंश, ८ ग्रंशी, सालम ।

जब कि तुझ में जहान आता है।
आँख में बहरो-बर[९] समाता है।
कोहो, दरिया-ओ शहरो सहरा[१०] बाग़।
बादशाहो-गदा-ओ-बुलबुलो ज़ाग़[११] ॥
इल्म में और शऊर[१२] में तेरे।
ज़र्रे से चमकते हैं बहुतेरे ॥
ख़ुद को महदूद[१३] क्यों बनाते हो।
मंज़िल - अपनी पड़े घटाते हो ?
तुझ में छोटे बड़े समाये हैं।
तू बड़ा है, यह जिसमें आये हैं ॥
मुल्के-सरसब्ज़ और ज़मीं शादाब[१४]।
हैं शुआ[१५] में तेरी सुराबो-आब[१६] ॥
शम्श[१७] मर्कज़[१८] निज़ामे-शमशी[१९] का।
है नहीं, तू है आसरा सब का ॥
नूर तेरे ही से ज़िया[२०] लेकर।
मेहर[२१] आता है, रोज़ चढ़ बढ़कर ॥
अपनी किरणों के आब में खुद ही।
डूब मत मर सुराब में खुद ही ॥

---

९ पृथ्वी और समुद्र, १० जंगल, ११ कौवा, काक, १२ समझ, ज्ञान, १३ परिच्छिन्न, सीमित, १४ खुश, आनन्ददायक पृथ्वी, १५ किरण, १६ जल, १७ सूर्य, १८ केन्द्र १९ आकाश के तारे आदि का इन्तज़ाम-सौर्यमण्डल, २० प्रकाश, २१ सूर्य।

जान अपने को गर लिया होता ।
क़ब्ज़ा आलम पे झट किया होता ॥
सल्तनत में मुती[२२] चरिन्द व परिन्द ।
राजे महराजे होते ज़ाहिद-व-रिंद[२३] ॥
ज़ात में हल्ले[२४] दिल किया होता ।
हल उक़दा[२५] को यूं किया होता ॥
हाथ में खड्ग हो कि खांडा हो ।
क़लम हो या बुलन्द झण्डा हो ॥
जुदा अपने को इनसे जानते हैं ।
इनके टूटे न रञ्ज मानते हैं ॥
आपको शूर वीर इस तन से ।
जुदा माने हैं जैसे आहन[२६] से ॥
गर बला से यह जिस्म छूट गया ।
क्या हुआ गर क़लम यह टूट गया ॥
तू है आज़ाद, है सदा आज़ाद ।
रंजो-ग़म कैसा ? असल को कर याद ॥
ऐ ज़मां[२७] ? क्या यह तुझ में ताक़त है ?
ऐ मकां[२८] ! तुझ में यह लियाक़त है ?
कर सको क़ैद मुझको, मुझको क़ैद ।
पलक में तुम हो कलअदम[२९] नापैद[३०] ॥

---

२२ अधीन, सेवक, २३ परहेज़गार और मस्त अथवा कर्मकाण्डी और विरक्त, २४ एकाग्र, लीन, २५ गुप्त भेद, गुप्त रहस्य, २६ लोहा, २७ काल, २८ देश, २९ नाश, ३० झूठा ।

फ़िक्र के पाप के, उड़ें धुएँ ।
गर कभी हम से आन कर उलझें ।।
पुर्ज़े पुर्ज़े अलग हुए डर के ।
धज्जियां जेहल[31] की उड़ीं डर से ।।

शाहे-ज़मां[1] को वरदान

(६५)

क़ैसरे - हिन्द ! बादशाह दावर[2] ।
जागता है सदा शाहे - ख़ावर[3] ।।
राज पर तेरे मग़रिबो-मशरिक़ ।
चमकता है सदा शाहे मशरिक़[4] ।।
शाहे-मशरिक़ की ब्रह्म विद्या है ।
रानी विद्याओं की यह विद्या है ।।
जाह - ज़ाती[5] रहे क़रीब तुम्हें ।
शाह इल्मों का हो नसीब तुम्हें ।।
नूर[6] का कोह[7] दिमाग़ में दमके ।
हिंद का नूर ताज पर चमके ।।
तेरे फ़िक्रो - ख़याल के पीछे ।
शीरीं चश्मा[8] अजीब बहता है ।।
यह ही चश्मा था व्यास के अन्दर ।
ईसा अहमद इसी में रहता है ।।

---

३१ अज्ञान ।

१ ज़माने अर्थात् वर्तमान समय के बादशाहों को वरदान, २ मुन्सिफ़ न्यायकारी, ३ सूर्य का बादशाह अर्थात् सूर्य, ४ सूर्य, ५ स्वरूप की विभूति वा पदवी, ६ प्रकाश, ७ पर्वत, यहाँ कोहनूर (ज्ञान के हीरे) से अभिप्राय है, ८ मीठा सरोवर ।

इस ही चश्मे से वेद निकले हैं ।
इस ही चश्मे से कृष्ण कहता है ।।
चलिये आबे - हयात[9] वां पीजे ।
दुःख काहे को यार सहता है ?
पिछले ऋषियों ने इस ही चश्मे से ।
घड़े भर भर के आब[10] के रक्खे ।।
दुनिया पलटे, ज़माना बदलेगा ।
पर यह चश्मा सदा हरा होगा ।।
मेहर[11] डूबेगा, क़ुतुब[12] टूटेगा ।
पर यह चश्मा सदा हरा होगा ।।
रस्मो[13] मिल्लत तो होंगे मटिया मेट ।
पर यह चश्मा सदा हरा होगा ।।
ऐसे चश्मे से भागते फिरना ।
बासी पानी को ताकते फिरना ।।
तिशना[14] रक्खेगा बहरे-खातिरे-आब[15] ।
जा बजा आग तापते फिरना ।।
राम को मानना नहीं काफ़ी ।
जानना उसका है फ़क़त शाफ़ी[16] ।।
बर्कले, कैंट, मिल ओ, हेमिलटान्[17] ।

---

९ अमृत, १० जल, यहाँ अमृतरूपी ज्ञान से अभिप्राय है, ११ सूर्य, १२ ध्रुव तारा, १३ रस्मो रिवाज, १४ प्यासा, १५ जल अर्थात् अमृत के लिए, १६ आराम देनेवाला, पाप से मुक्त करनेवाला, १७ यह सब यूरुप के फ़िलास्फ़रों (तत्ववेत्ताओं) के नाम हैं ।

जुस्तजू[१८] मे तेरी हैं सरगर्दां[१९] ।।
बाइबल, वेद, शास्त्र और क़ुरआन ।
भाट तेर हैं, ऐ शाहे - रहमान[२०] ! ।।
अपनी अपनी लियाक़तें लेकर ।
तर-ज़ुबां[२१] गा रहे हैं तेरी शान ।।
मदह-ख्वां[२२] शायरों को दो इनाम ।
वक्ते - दरबारे - ख़ासो - जल्स-ए-आम ।।

आनन्द अन्दर है

(६६)

सग[१] ने हड्डी कहीं से इक पाई ।
शेरे-नर देख फ़िक्र यह आई ।।
कि कहीं मुझ से शेर छीन न ले ।
हड्डी इक उससे शेर छीन न ले ।।
लेके मुंह में उसे छुपा कर वह ।
भागा खाई[२] को दुम दबाकर वह ।।
अज़्म[३] चुभती थी मुंह में जब रग को ।
ख़ून लगता लज़ीज़ था सग को ।।
मज़ा अपने लहू का आता था ।
पर वह समझा मज़ा है हड्डी का ।।
शेरे नर, बादशाहे तनहा-रौ[४] ।
हड्डी मुर्दे हों हर तरफ़ सौ-सौ ।।

---

१८ तलाश, १९ भटकते फिरते, २० कृपालु महाराजा, २१ मीठी वाणी से, २२ स्तुति करनेवाले ।

१ कुत्ता, २ खंदक, ३ हड्डी, ४ अकेला चलने वाला राजा ।

वह तो न आंख भरके तकता है ।
सगे-नादां[5] का दिल धड़कता है ।।
स्वर्ग की नियामतें हों दुनिया की ।
हैं तो यह हड्डियां ही मुर्दे की ।।
इनमें लज़्ज़त जो तुम को आती है ।
दर असल एक आत्मा की है ।।
ऐ शहनशाहे-मुल्क, ! ऐ इन्द्र ! ।
छीनता वह नहीं यह जरो-गौहर[6] ।।
राज दुनिया का और स्वर्गो-बहिश्त ।
बागो-गुलज़ारो-संगमरमरो खिश्त[7] ।।
नियामतें ये तुम्हें मुबारक हों ।
बारे-ग़म[8], ये तुम्हें मुबारक हों ।।
देखना यह तुम्हारे मक़बूज़ात ।
क़ब्ज़ करते हैं क्या तुम्हारी ज़ात ।।
जाने-मन ! नूरे-जात ही का नाथ[9] ।
फ़ौज रखता नहीं है सूरज साथ ।।
जो ग़नी[10] ज़ात में हैं हीरो-वीर[11] ।
जल्वागर दर वजूदे बर ना पीर[12] ।।
सब दहानों[13] से वह ही खाता है ।
स्वाद खाने भी बन के आता है ।

---

५ मूर्ख कुत्ता, ६ स्वर्ण (धन) और मोती, ७ ईंटें, ८ ग़म का भार, ९ मालिक, १० अमीर, ११ बहादुर योधा, १२ युवक और वृद्ध के शरीर में प्रकाशित हैं, १३ मुंहों ।

"यह हूं मैं", "यहहो तुम", यह असनीयत ।
मोजिज़ा[१४] है तेरा न असलीयत ।।
सुवरो-अशकाल[१५] सब करामत[१६] है ।
मेरी क़ुदरत की यह अलामत[१७] है ।।

सिकन्दर को अवधूत के दर्शन

(६७)

क्या सिकन्दर ने भी कमाल किया ।
ग़ुलग़ुला[१] शोरोशर का डाल दिया ।।
बर लबे-आब[२] सिन्ध जब आया ।
डट गया फ़ौज लेके, झल्लाया ।।
उन दिनों एक सालिको मालिक[३] ।
से मुलाक़ी[४] हुआ, रहा हक़ दक़ ।।
क्या अजब था फ़क़ीर आलमगीर ।
क़ल्ब साफ़ी[५] मिसाले-गङ्गानीर[६] ।।
उसकी सूरत जमाले - सुरयानी[७] ।
गुफ्तगू में जलाले - उरयानी[८] ।।
उस स्वामी ने कुछ न गरदाना[९] ।
ज़ोरो-ज़ारी[१०] ओ ज़र से फ़ुसलाना ।।

---

१४ चमत्कार, १५ शक्लें, सूरतें, नाम, रूप १६ महिमा, विभूति, १७ चिह्न, पता निशान ।

१ बलबला, शोर इत्यादि, २ दरिया सिंध के किनारे, ३ ईश्वर भक्त, विरक्तआत्मा वा मस्त पुरुष, ४ मिला, दर्शन किये, ५ शुद्ध अन्तःकरण, ६ गंगा जल के समान, ७ अत्यन्त सुन्दर, ८ वैभव स्पष्ट हो रहा था, महिमा फूट रही थी, ९ समझा, १० कड़ाई, नर्मी और धन के लालच से ।

शीशा आईनागर[११] को दिखलाया ।।
दंग जूं आईना वह हो आया ।।
रह के शशदर वह बादशाहे-जहां ।
बोला साधू से सूरते-हैरां ।।
हिंद में क़द्र न परखते हैं ।
हीरे को चीथड़ों में रखते हैं ।।
चलियेगा साथ मेरे यूनां[१२] को ।
क़दम रंजा[१३] करो मेरे हां को ।।

अवधूत का उत्तर

(३४२)

क्या ही मीठी ज़ुबान से बोला ।
रास्ती[१] पर कलाम को तोला ।।
"कोई मुझसे नहीं है खाली जा[२] ।
परि-पूरण, ज़रा नहीं हिलता ।।
जाऊं आऊं कहां किधर को मैं ?
हर मकां[३] मुझ में, हर मकाँ में मैं" ।।
यह जो लाहूत[४] से निदा[५] आई ।
यवन[६] बेचारे को नहीं भाई ।।
फिर लगा सिर झुका के यूं करने ।
इसके समझा नहीं हूं मैं माने[७] ।।

---

११ सिकन्दर की उपाधि है, १२ देश का नाम, १३ चलियेगा ।

१ सच्चाई, २ जगह स्थान, ३ देश, ४ ब्रह्म धाम, मस्त स्वरूप, ५ आवाज ६ सिकन्दर से अभिप्राय है, ७ अर्थ, तात्पर्य ।

मुश्को काफ़ूर, इत्रो अम्बर बू ।
अस्पो गुलज़ारों[8] नाज़नीं खुशरू[9] ।।
सीमोज़र[10], ख़िलअतो[11]-समा-ओ-सरोद[12]।
मेवे हर नौ[13] के, आबशारो रोद[14] ।।
यह में सब दूंगा आपको दौलत ।
हर तरह होगी आपकी ख़िदमत ।।
चलियेगा साथ मेरे यूनां को ।
चल मुबारक करो मेरे हां को ।।
मस्त मौला[15] से तब यह नूर झड़ा ।
आस्मां से सितारा टूट पड़ा ।।
"झूठ, झूठों ही को मुबारक हो ।
जेहल[16] नीचे दबे जो तारक[17] हो ।।
में तो गुलशन हूँ, आप ख़ुद गुलरेज़[18] ।।
ख़ुद ही काफ़ूर, ख़ुद ही अम्बर[19] रेज़ ।।
सोने चाँदी की आबो-ताब[20] हूं मैं ।
गुल की बू, मस्ती-ए-शराब हूँ मैं ।।
राग की मीठी-मीठी सुर मैं हूं ।
दमक हीरे को, आबे दुर मैं हूं ।।

---

८ घोड़े और बाग़, ९ सुन्दर स्त्री, प्रिया, १० चाँदी सोना, ११ उत्तम वस्त्र, १२ राग रंग, १३ हर प्रकार, १४ बहते हुए झरने, १५ मस्त फ़क़ीर फिर यूं बोला, १६ अज्ञान, अविद्या, १७ अन्धकार अथवा अन्धा, १८ फूल झड़ी, पुष्पों को बरसानेवाला, १९ अंबर झाड़नेवाला अर्थात् खुशबू बरसाने वाला । २० चमक-दमक ।

खुश मज़ा सब तुआम[२१] हैं मुझसे ।
अस्प भी ख़ुश ख़राम[२२] है मुझसे
रक्स[२३] है आबशार[२४] का मेरा ।
नाज़ो-इश्वा[२५] है यार का मेरा ।।
ज़र्क़ बरक़ी सुनहरा ताज तेरा ।
मेरा मोहताज है, मोहताज मेरा ।।
चांदनी मुस्तआर[२६] है मुझसे ।
सोना सूरज उधार ले मुझसे ।।
कोई भी शैं[२७] जो तेरे मन भाई ।
मैंने लज्ज़त अता[२८] है फ़रमाई ।।
दे दिया जब फिर उसका लेना क्या ।
शाहे-शाहां को यह नहीं ज़ेबा[२९] ।।
करके बख़शिश मैं बाज़[३०] क्यों लूंगा ? ।
फेंक कर थूक चाट क्यों लूंगा ।।
प्रकृतो को तो ईद[३१] मुझेसे है ।
माँगूं अब मैं वईद[३२] मुझेसे है ।।
ख़ुद ख़ुदा हूँ, सरूरे[३३]-पाक हूँ मैं ।
खुद खुदा हूं, ग़रूरे-पाक[३४] हूँ मैं ।।
ऐसा वैसा जवाब यह सुन कर ।
भड़क उट्ठा ग़ज़ब से इस्कन्दर ।।

---

२१ खुराक, भोजन, २२ उत्तम चाल, २३ नृत्य, २४ पानी का झरना, २५ नाज़-नख़रे, २६ माँगी हुई आरोपित, २७ वस्तु, २८ बख्शी, २९ ठीक, उचित, ३० फिर वापस, ३१ आनन्द-मङ्गल व बड़ाई, ३२ दूर, अनुचित, ३३ शुद्ध आनन्द, ३४ शुद्ध आत्मा, शुद्ध अहंकार ।

चेहरा ग़ुस्से से तमतमा आया।
ख़ूनेरग जोश मारता आया ॥
खींच तलवार तान ली झट पट।
"जानता है मुझे तू ऐ नट खट!
शाहेज़ीं जाहे मुल्के दारा जम[35]।
मैं हूं शाहे सिकन्दरे-आज़म[36] ॥
मुझसे गुस्ताख़ गुफ्तगू करना।
भूल बैठा है क्यों अभी मरना?
काट डालूंगा सिर तेरा तन से।
ज़रबे[37] शमशेर से अभी दन से ॥
देख कर हाल यह सिकन्दर का।
साधु आज़ाद खिल-खिला के हँसा ॥
किज़्ब[38] ऐसा तू ऐ शाहनशाह!
उम्र भर में कभी न बोला था ॥
मुझको काटे! कहां है वह तलवार?
दाग़ दे मुझको! है कहां वह नार[39]?
हां, गलाये मुझे! कहां पानी?
बाद[40] सुखा ही ले! मरें नानी ॥
मौत को मौत आ न जायेगी।
क़स्द[41] मेरा जो करके आयेगी ॥

---

३५ जमशेद और दारा बादशाह के मुल्कों का बड़े भारी मानवाला बादशाह, ३६ सब से बड़ा सिकन्दर, ३७ तुरन्त, ३८ झूठ, ३९ अग्नि, ४० वायु, ४१ इरादा।

बैठ बालू में बच्चे गंगा तीर।
घर बनाते हैं शाद या दिलगीर[४२] ।।
फ़र्ज करते हैं रेत में खुद घर।
यह रहा गुम्बदो इधर है दर[४३] ।।
खुद तसव्वुर[४४] को फिर मिटाते हैं।
ख़ाना[४५] अपना वह आप ढाते हैं ।।
वह्म का घर बना था वह्म मिटा।
बालू था बाद में जो पहले था ।।
रेग सुधरा था, नैं[४६] ख़राब हुआ।
फ़र्ज़ पैदा हुआ था खुद बिगड़ा ।।
रास्त तू उस ज़ुबां से सुनता है।
पर पड़ा आप जाल बुनता है ।।
तू जो समझा यह जिस्म मेरा है।
फ़र्ज तेरा है फ़र्ज़ तेरा है ।।
सिर यह तन से अगर उड़ा देगा।
फ़र्ज अपने ही को गिरा देगा ।।
रेत का तो न कुछ बुरा होगा।
खांना तेरा खराब ही होगा ।।
मेरी वुसअत[४७] को कौन पाता है।
मुझ में अर्ज़ी-समा[४८] समाता है ।।
ताज जूते के दरमियाँ वाक़ै।
मैं नहीं हूं, न तू है जां! वाक़ै ।।

---

४२ उदास. ४३ द्वार, ४४ कल्पना वा कल्पित, ४५ घर ४६ नहीं,
४७ विस्तार, ४८ पृथ्वी-आकाश ।

इतना थोड़ा नही हुदूद-अर्बा[49] ।
पगड़ी जोड़ा नहीं हुदूद-अर्बा ।।
अपनी हतक यह क्यों करी तुमने ।
बात मानी मेरी बुरी तुमने ?
क्यों तुनक[50] कर दिया है आतम को ।
एक जूहड़[51] बनाया क़ुलज़म[52] को ।।
ख़ुद तो मग़लूब[53] तुम ग़ज़ब[54] के हो ।
शाहे-जज़बात[55] से भी अड़ते हो ।।
ग़ुस्सा मेरा ग़ुलाम तुम उसके ।
बन्दए[56] - बन्दगां, रहो बच के ।।
गिर पड़ी शाह के हाथ से शमशेर ।
निगाहे-आरिफ़[57] से हो गया वह ज़ेर[58] ।।
क्या अजब ! यह तो ज़ेरे-आखता[59] तेग़ ।
गरजता था मिसाले बारां मेघ[60] ।।
शाह के ग़ैज़ो-ग़ज़ब[61] को जूं मादर[62] ।।
नाज़ तिफ़लक[63] का जानता था गर ।
और वह शाह सिकन्दरे रूमी ।
बात छोटी से ही गया जख्मी ।।

---

४९ सीमा, चौहद्दी, ५० तुच्छ, छोटा, नाचीज़, ५१ तालाब, ५२ समुद्र, ५३ आधीन, वश में आये हुए, ५४ गुस्सा, ५५ काम क्रोधादि को वश में रखने वाला बादशाह, ५६ ग़ुलामों के ग़ुलाम, ५७ ज्ञानवान् की दृष्टि से, ५८ आधीन, नीचे शर्मिन्दा, ५९ खैंची हुई तलवार के तले, ६० वर्षा वाले बादल के समान, ६१ ग़ुस्से, क्रोध को, ६२ माता के समान, ६३ बच्चे का खेल, नख़रा ।

पास[६४] उस वक्त अपनी इज़्ज़त का ।
हर दो जानिब को एक जैसा था ।।
लेक[६५] शाह को थी जिस्म में आनर[६६] ।
शाहे-शाह[६७] का था आत्मा में घर ।।
क़िला मज़बूत उसका ऐसा था ।
ऊंचे सूरज से भी परे ही था ।।
कर सके कुछ न तीर की बौछार ।
खाली जाये बंदूक की भरमार ।।
इस जगह ग़ैर[६८] आ नहीं सकता ।
याँ से कोई भी जा नहीं सकता ।।
इस बुलन्दी से, सरफ़राज़ी से ।
क़िलाए - मज़बूत शेरे - ग़ाज़ी से ।।
यह ज़मीं और इसके सब शाहां ।
तारा सां, जर्रा[६९] साँ, कि नुक़ता सां ।।
नुक़ता मौहूम[७०] बन, हुए नाबूद[७१] ।
एक वाहिद[७२] हूं, हस्ती-बाशदो[७३]-बूद ।।
उड़ गये जूं सिपाहे - तारीकी[७४] ।
ताब किसको है एक झांकी की ?
रुए-आलम[७५] पै जम गया सिक्का ।
शाहे-शाहां हूं, शाहे-शाहां शाह ।।

---

६४ ख़याल, ६५ परन्तु, लेकिन, ६६ (Honour) इज्जत, ६७ यहाँ मुराद है फ़क़ीर से, ६८ अन्य, दूसरा, ६९ परमाणु, ७० कल्पित, ७१ मिथ्या, असत्, ७२ अद्वैत, ७३ है, होगा, था, वर्तमान, भविष्य, भूत, ७४ अन्धकार की सेना, (अर्थात् तारों) के समान, ७५ समस्त संसार ।

अहले हैय्यत[७६] ने भी पढ़ा होगा ।
नुक़्ता क्या खूब यह रियाज़ी का ।।
जबकि लाजुंब[७७] एक सितारे का ।
बहस में ही हिसाब या लेखा ।।
सिफ़र साँ यह ज़मीन पेचां पेच[७८] ।
हेच[७९] गिनते हैं, हेच मुतलक़[८०] हेच ।।
अब कहो ज़ाते - वाहिद[८१] के होते ।
क्यों न अजसाम[८२] जान को रोते ?

जिस्म से बेताल्लुक़ी

(देहाध्यास रहित अवस्था)

(६९)

बादशाह इक कहीं को जाता था ।
उस तरफ़ से फ़क़ीर एक आता था ।।
बादशाह को घमंड ताज का था ।
मस्त को ज़ात[१] ही के राज का था ।।
मस्त चलता था चाल मस्ती की ।
राह न छोड़ी सलाम तक भी न की ।।
बादशाह तुर्श[२] हो के यूं बोला ।
"सख़्त मग़रूर शोख गुस्ताख़ा !

---

७६ नजूमी, ज्योतिष के जानने वाले, ७७ अचल, ७८ पेचदार, पृथ्वी, ७९ ८० नितान्त, ८१ शुद्ध स्वरूप, ८२ शरीर, नाम रूप ।

१ निजात्मा, २ कड़वा होकर ।

बादशाह हूं, तुझे सज़ा दूंगा ।
जिस्म तेरा अभी जला दूंगा ।।
तिस पै मौला कबीरे[३] आलीजाह[४] ।
शाहे-शाहां फ़क़ीर लापरवाह ।।
जिसका मुबदा-ओ-क़ुतुब[५] आतम था ।
महवरे-गुफ़्तगू[६] भी आतम था ।।
जिस्म प्वाइन्ट[७] से न कुछ करता था ।
आत्मा ही था, नूर झड़ता था ।।
पास धक धक जले थी इक भट्टी ।
टाँग उसमें फ़क़ीर ने धर दी ।।
तब मुख़ातिब[८] हो शाह से बोला ।
नक़्शे-तस्वीर ! शेरे-क़िर्तासा[९] ! ।।
मैं हूँ क़िर्तास[१०], उस पै तू तसवीर ।
ज़ात-असली हूँ, फ़र्ज़ है तसवीर ।।
नक्शा दावा करे, तकब्बुर[११] है ।
किब्रयाई[१२] मेरी तो अज़हर[१३] है ।।
जिस्म के एतबार ही से सही
मैं हूं आज़ाद उस तरह से भी ।।
क़त्ल करने का क़द्र है तेरा ।
झिड़कना इख़तियार[१४] है मेरा ।।

---

३ महान् ४ बड़े पद व रुतबे वाला, परम-पूज्य, ५ शुरू और आश्रय, ६ धुरा अर्थात् वाणी का आधार, ७ शरीर के लिहाज या दृष्टि से, ८ सम्मुख हो करके, ९ ऐ काग़ज़ के शेर ! १० काग़ज़, ११ अहङ्कार, १२ बड़ाई, महत्त्व, १३ स्पष्ट, जाहिर, विद्यमान, प्रकट, १४ अधिकार ।

क़त्लो-धमकी का गर्म है बाज़ार।
सौदा मेरा है, मैं हूं ख़ुद मुख़्तार।।
जान लेना नहीं तेरे बस में।
तेरी तम्बीर[15] है मेरे बस में।।
तू जलायेगा, दर्द क्या होगा।
देख ले, पैर जल गया सारा।।
इससे बढ़ कर सज़ा तू क्या देगा।
मेरा इक बाल भी न हो बांका।।
आग में डाल दे, तू इस[16] तन को।
ख्वाह शोलों[17] में डाल उस तन[18] को।।
दोनों हालत में मुझको यकसां है।
कुछ न बिगड़ा न बिगड़ सकता है।।
तुम से बढ़ कर तुम्हारा अपना आप।
मैं ही तुम हूं, न तुम हो अपना आप।।
आग मेरा ही इक तजल्ली[19] है।
रोब[20] तेरा भी ज़ोर मेरा है।।
मुझ में सब जिस्म बुलबुले से हैं।
एक टूटेगा और क़ायम[21] हैं।।
साधू जब कर रहा था यह तक़रीर[22]।
शाह का दिल होगया वहीं नख़चीर[23]।।

---

१५ जतलाना, सज़ा देना, १६ फ़क़ीर के शरीर से अभिप्राय है, १७ अग्नि की ज्वाला, १८ बादशाह के शरीर से अभिप्राय है, १९ तेज, प्रकाश, २० भय, डर, २१ स्थिर, २२ बात-चीत, २३ शिकार-गाह, घायल।

दस्त वस्ता [२४] खड़ा हुआ आगे ।
साईं ! आरिफ़ [२५] हैं आप अल्ला के ।।
तर्क दुनिया की, आखिरत [२६] की तर्क ।
तर्क मौला की, तर्क की भी तर्क ।।
दर्जे अव्वल के आप त्यागी हैं ।
बारे [२७] दर्शन के हम भी भागी हैं ।।

फ़क़ीर का कलाम

(७०)

क़दम-बोसी [१] को शाह झुका ही था ।
कलमा बेसाख़ता [२] यह तब निकला ।।
ऐ शहनशाह ! तुम मुबारक हो ।
तुम ही सबसे बड़े तो तारक [३] हो ।।
अपनी कीजेगा क़दम-बोसी ख़ुद ।
तुम ही त्यागी हो, तुम ही जोगी ख़ुद ।।
कुछ नहीं इस फ़क़ीर ने त्यागा ।
ज़ात के राज पाट से जागा ।
ख़ाक [४] ऊपर से जब हटा बैठा ।
मादने-बेबहा [५] को पा बैठा ।।
कूड़ा करकट उठा दिया इसने ।
महल सुथरा बना लिया इसने ।।
जेहल [६] को त्याग आप हो बैठा ।
ज़ात तेरी तरह न खो बैठा ।।

---

२४ हाथ जोड़ कर, २५ आत्मवित् जानने वाले, २६ परलोक, २७ एक बार ।

१ चरण बन्दना को, २ तत्काल, बिना सोचे-समझे, लाधड़क, ३ त्यागी, ४ यहाँ शरीर के देहाध्यास से अभिप्राय है, ५ अनन्त दाम की, अर्थात् अमूल्य खान (ख़ज़ाना) वा आत्म-तत्त्व, ६ अज्ञान, अविद्या ।

लेक[७] तुम ने स्वराज्य छोड़ा है।
कूड़ा रक्खा है, महल छोड़ा है ।।
राख को तुम अज़ीज़[८] रखते हो।
असल मादन[९] को तुम न तकते हो।
खाक सारी लपेट ली तुमने।
क्या रमाई भभूत है तुमने ।।
जुड़ गये हो अविद्या से आप।
जोगी कैसे जुड़े बला के आप ।।
तुम ही जोगी हो, मैं न जोगी हूं।
ज़ाते-तनहा[१०] हूं, मैं वियोगी[११] हूं ।।
सुन के शाह, यह फ़क़ीर की तक़रीर।
सकता[१२] ग़श कर गया, बना तसवीर ।।

गार्गी

(७१)

जनक राजा की हुक्मरानी में।
उन विदेहों[१] की राजधानी में ।।
नंगी फिरती थी गार्गी लड़की।
नूर चितवन में था, जलाल भरी ।।
चेहरे से रोब दाब बरसे था।
हुस्न को माहेताब[२] तरसे था ।।

---

७ लेकिन, किन्तु, ८ प्रिय, ९ खान, चश्मा वा तत्त्व, १० अद्वैत तत्त्व, ११ अलग, पृथक वा असङ्गात्मा, १२ बेहोश, आश्चर्यमय।

१ विदेह, मुक्त, २ चाँद।

ज्ञान की, असल ज़ात की खूबी ।
उस के हर रोम से चमकती थी ।।
तक सके आँख भर के उस रू[3] को ।
मारे दहशत[4] से ताब[5] थी किस को ?
पाकबाज़ी[6] का वह मुजस्सिम[7] नूर ।
शप्परे[8] चश्म को भगाता दूर ।।
इक दफ़ा मारफ़त[9] की पुतली पर ।
करती शक थी निगाहे-ऐब[10] निगर ।।
दफ़ातन गार्गी यह भांप[11] गयी ।
जान क़ालिब[12] में सब की काँप गयी ।।
ऐब-बीनों[13] का कुफ़्र तोड़ दिया ।
रूए अजसाम-बीं[14] को मोड़ दिया ।।
ज्ञान से पुर, दहान[15] यूं खोला ।
नाफ़ै-तातार था, कि अग्नी था ।।
मैं वह खंजर हूं, तेज़ दम ज़ालिम !
लोहा माने हैं मेहरो[16] माह अंजुम[17] ।।
तीन जामों[18] में, या मियानों[19] में ।
छिप के बैठी हूं तीन खानों में ।।

---

३ मुख, ४ मारे भय के, ५ शक्ति, ६ पवित्रता, ७ प्रकाश का शरीर अर्थात् प्रकाश-स्वरूप, ८ चमगादड़, प्रकाश में न देखनेवाला, ९ आत्मज्ञान वा ज्ञान-स्वरूप, १० बुराई देखनेवाली की दृष्टि, ११ ताड़ गयी, समझ गयी, १२ तन, १३ दोष दृष्टि, १४ पृथ्वी के पदार्थ (रूप) देखनेवाले अर्थात् बाह्य दृष्टिवाले के मुख को, १५ मुंह, १६ सूर्य-चंद्रमा १७ सितारे, १८ पर्दों कपड़ों अर्थात् शरीरों, १९ कोशों, ढकनों में ।

दूर गर परदा - ए - हया[20] कर दूं ।
फ़ितना[21] महशर अभी बपा[22] कर दूं ।।
शम्स[23] कब ताब[24] झलक की लाये ।
चकाचौंधी सी आंख में आये ।।
देख मुझको फ़लक[25] के सब अजराम[26] ।
मिस्ले शबनम[27] उड़ें, करें आराम ।।
कोहर[28] ऐसे यह दुनिया उड़ जाये ।
देखने की मुझे सजा पाये ।।
काश[29] ! देखो मुझे, मुझे देखो ।
हर सरे-मू[30] से चश्मे - हैरत[31] हो ।।
मैं बिरहना[32] थी तुमने समझा क्यों, ?
ख़ाक इस समझ पर, यह समझा क्यों ।
जिस्म मैं हूं, यह कैसे मान लिया ?
हाय ? कपड़ों को जान ठान लिया ।।
खुब गया जिसके दिल में हुस्न[33] मेरा ।
दंग सकते[34] का एक आलम[35] था ।।
जान जब हो चुकी हो न्योछावर ।
बोलो, वह फिर कहां रहा नाज़र[36] ?
नाज़िरो नज़र[37] आप खुद मंज़ूर[38] ।
वस्ल कैसे कहां हुआ महजूर[39] ।।

---

२० लज्जा का पर्दा, २१ क़यामत (प्रलय) का दुःखमय दृश्य, २२ अभी पैदा कर दं, २३ सूर्य, २४ शक्ति, तेज, २५ आकाश, २६ तारे इत्यादि, २७ ओस के समान, २८ धुंवाँ या कोहरे के समान, २९ ईश्वर करे, ३० बाल के सिरे से, अर्थात् बाल-बाल, ३१ आश्चर्यमय दृष्टि, ३२ नङ्गी, ३३ सौंदर्य, ३४ आश्चर्य, ३५ हालत, अवस्था, ३६ दृष्टा, ३७ दृष्टि, ३८ दृश्य, ३९ जुदा पृथक ।

टूटे पड़ता है, हाय हुस्न मेरा ।
पर न गाहक कोई मिला उसका ।।
खुद ही माशूक़ आप आशिक़ हूं ।
नै[४०] गलत; मैं तो इश्के-सादिक[४१] हूं ।।
तारे कब रौशनी से न्यारे[४२] हैं ।
तुम हमारे हो, हम तुम्हारे हैं ।
ऐ अदू[४३] ! ऐंठ ले, बिगड़ तन ले ।
सख्त कह दे, कि सुस्त ही कह ले ।।
जोशे - ग़ुस्सा निकाल ले दिल से ।
ताक़ते - तैश[४४] आज़मा तू ले ।।
मुझे भी इन तेरी बातों से रोक थाम नहीं ।
जिगर में धाम न करलूं, तो राम नाम नहीं ।।

गार्गी से दो बातें

(७२)

राम भी एक बात जड़ता है ।
खंजरे - तेज़ दम से लड़ता है ।।
हुस्न की बेहर[१], ग़ैरते - ख़ूबी[२] ! ।
इक नज़र हो ज़री इधर तो भी ।।
माना दीदों[३] में है तेरे लाली ।
जोत आंखों में है कपिल[४] वाली ।।

---

४० नहीं,-नहीं, यह ग़लत है, ४१ सच्चा, असली इश्क़, अथवा प्रेम मैं हूं, ४२ पृथक, जुदा, ४३ शत्रु, दुश्मन, ४४ गुस्से का बल ।

१ समुद्र, २ दूसरे को सज्जा देनेवाली सुन्दरता, ३ नेत्रों, ४ कपिलमुनि का नाम है जिसने राजा सागर के सहस्त्र पुत्र अपनी दृष्टि से भस्म कर दिये थे ।

भस्म करती है तू हज़ारों को ।
कौन रोके भला अंगारों को ।।
लेक[5] मैं एक हूं, हज़ार नहीं ।
राम पर तेरा इख्तयार नहीं ।।
झाँक आयीने[6] में दिल के देखले ।
तू ज़रा गर्दन झुका कर पेख ले ।।
क़ल्ब[7] किससे तेरा मुनव्वर[8] है ।
जल्वागर[9] कौन उसके अन्दर है ।।
चीं जबीं[10] हो के कुटिल कर भृकुटी ।
तिर्छी चितवन नज़र किये टेढ़ी ।।
क्यों गज़ब तीर पास रखता है ।
राम भृकुटी मे बास रखता है ।।
छोड़ दो घूर कर दिखानी आंख ।
राम बैठा है तेरी दाहिनी आँख ।।
तल्खकामी[11] से किसको दी दुश्नाम[12] ?
शाहे - रग[13] और कण्ठ में है राम ।।
चल करो गर दिमाग़ में तकरार ।
राम बैठा है तेरे दसवें द्वार ।।
हर तरह राम से गुरेज़[14] नहीं ।
जुदा आहन[15] से तेग़[16] तेज़ नहीं ।।

---

५ किन्तु, ६ शीशा, ७ अन्तःकरण, ८ प्रकाशित, ९ प्रकाशमान व प्रकाश देनेवाला, १० क्रोधित होकर, माथे पर बल डालकर, ११ गुस्सा हो ख़राब बोली बोलना, १२ गाली, अपशब्द, १३ गले के भीतर बड़ी रग (नाड़ी), १४ भागना, १५ लोहा, १६ तलवार ।

ऐ मुहीते - किनार[१७] - ना - पैदा !
हुस्नो - खूबी ये तेरी खुदा शैदा[१८] ।।
बहरे - मव्वाज[१९] है तलातम[२०] में ।
हुस्न तूफ़ां है तेरा आलम में ।
"मैं बिरहना[२१] नहीं" यह क्यों बोला ।
सामने मेरे कुफ़्र क्यों तोला ?
पहिन कर आज मौज की चादर ।
नखरे टखरे हमीं से यह नादर[२२] ।
"मैं बिरहना नहीं" यह क्या मानीं ?
बुर्क़ा[२३] ओढ़ा हुबाब[२४] लामानी[२५] ! ।।
तिनका भर, किश्ती भर, जहाज़ सही ।
कोह[२६] भर, बेहर भर, यह नाज़ सही ।।
हाय तुमने तो क्या सितम[२७] ढाया ।
जुमला[२८] आलम दरोग़[२९] वह आया ।।
नोन आँखों में कर दिया तुमने ।
झूठ सच कर दिखा दिया तुमने ।।
सितर[३०] परदे सभी उठा दूंगा ।
झूठ बोले कि मैं सज़ा दूंगा ।।
नाम रूपों की बू उठा दूंगा ।
हूं ही[३१] हूं हूबहू दिखा दूंगा ।।

---

१७ ऐ समुद्र जिसका पारावार नहीं अर्थात् ऐ अनन्त सीमा, १८ आसक्त, क़ुरबान, १९ लहरोंवाला समुद्र, २० तूफ़ान (लहराना) २१ नङ्गा, २२ नादिर, अद्भुत, २३ पर्दा, २४ बुलबुला, २५ बग़ैर मतलब के, व्यर्थ, २६ पर्वत सम, २७ अन्याय, २८ समस्त, २९ झूठा (असत्य), ३० चावरण, ३१ ईश्वर-ही-ईश्वर यह सब है (सर्वं (खल्विदं ब्रह्म) ।

हाय ! इज़हार[३३] आज लूं किससे ?
रूबरू हो खड़ा, बने किससे ?
आप ही गार्गी हूं, आप हूं राम ।
कुछ नहीं काम, रात दिन आराम ॥

चाँद की करतूत

(७३)

अजब घूमते घूमते राम को ।
मिला एक तालाब सरे-शाम[१] को ॥
जुलाहे की थी पास इक झोंपड़ी ।
थी लड़की वहां खेलती इक पड़ी ॥
हवा चुपके से सरसराने लगी ।
उधर चांदनी दमदमाने लगी ॥
मैं क्या देखता हूं कि लड़की वहीं ।
है बुत बन रही और हिलती नहीं ॥
खुला मुंह है भोले से मुसका[२] रही ।
है आंखों से क्या चांद को खा रही ।
उतर आंख से दिल में दाखिल हुआ ।
दिले-साफ़ में चांद सब घुल गया ।
कहो तो अरे चांद ! क्या बात है ?
यह क्या कर रहे हो, यह क्या घात है ?
पड़ा अक्स[३] ही तेरा तालाब पर ।
पै लड़की के दिल में किया तू ने घर ॥

---

३३ बयान वर्णन ।

१ सायंकाल के समय, २ मुस्कराना, धीमे-धीमे हँसना, ३ प्रतिबिम्ब ।

दिया आलिमों[४] को न जिस राज़[५] को,
दिखाया न जो दूरबीन-बाज़[६] को ।
रियाज़ी का माहिर[७] न जो पा सका ।
न हैयत[८] से जो भेद कुछ आ सका ।।
जुलाहे के घर में दिया सब बता ।
अरे चांद! क्यों जी! हुआ तुझको क्या ?
वह नन्हें[९] से दिल में यह आराम क्या ?
गरीबों के घर में तेरा काम क्या ?

आरसी

(७४)

दुलहन को जां से बढ़कर भाती है आरसी[१] ।
मुख साफ़ चांद का सा दिखाती है आरसी ।।
हस्ती, इल्म, सरूर[२] का मज़हर[३] तो खूब है ।
हां, इससे आबरू[४] को सजाती है आरसी ।।
हमको बुरी बला से यह लगती है इसलिए ।
वाहिद[५] को क़ैदे-दुई[६] में लाती है आरसी ।।
अज़ बस ग़नी[७] है हुस्न में वह अपने माहरू[८] ।
हैरत है उसके सामने आती है आरसी ।।

४ बुद्धिमानों, ज्ञानियों को, ५ भेद, गुह्य, रहस्य, ६ दूर-दृष्टा, ७ गणित-शास्त्र में निपुण, ८ नाम एक विद्या का है जिसमें आकाश के नक्षत्रों और भूगोल का हाल मालूम होता है—ज्योतिष शास्त्र, ९ छोटे से ।

१ अँगूठे में डालने का ज़ेवर जिसमें मुंह देखने का शीशा लगा होता है, २ सच्चिदानन्द, ३ ज़ाहिर होने का स्थान, ४ शान, इज्जत, महिमा, ५ एकता, ६ द्वैत के बन्धन में, ७ सौंदर्य में अत्यन्त धनी अर्थात् अत्यन्त सुन्दर, ८ चाँद के मुखड़ेवाला प्यारा ।

खूबी है रूये[९] खूब में, शीशे में कुछ नहीं ।
हाथों में रूनुमाई[१०] को जाती है आरसी ।।
ज़ाहिर में भोली भाली सी हैरां शक्ल वले[११] ।
क्या झूठ को यह रास्त[१२] बताती है आरसी ।।
गहनों में टुकड़ा आयीना का है हक़ीरतर[१३] ।
रुतबा[१४] वले सफ़ाई में पाती है आरसी ।।
देखूं मैं या न देखूं, हूं आफ़ताब रू[१५] ।
ताहम हमारे दिल को लुभाती[१६] है आरसी ।।
गंगा सुमेरू[१७] अब्र[१८] सही, मोहरो-मह[१९] सही ।
मुखड़े का अपने दर्श[२०] कराती है आरसी ।।
है शौक़े-दीद[२१] चेहरा-ए-ताबां[२२] का राम को ।
यकसू-दिली[२३] हर आन[२४] बनाती है आरसी ।।

सदाये-आस्मानी (आकाशवाणी)

(७५)

हाय चेचक[१] ने, वाय चेचक ने ।
इस अविद्या के हाय चेचक ने ।।

---

९ सुन्दर रूप वा मुख, १० रूप को दिखाने को, ११ लेकिन, १२ सच, १३ तुच्छ, १४ दर्जा, पद, १५ सूर्य मुख (प्रकाश रूप वाला), १६ मोह लेती है, १७ सोने का पर्वत, जिसमें मुंह दिखाई दे । गंगा, सुमेरु बादल सूरज चाँद सब का आरसी के समान मुख दिखाते हैं । १८ बादल, १९ सूर्य और चाँद, २० दर्शन, २१ देखन का शौक़, २२ प्रकाशस्वरूप, २३ चित्त की एकाग्रता, २४ प्रत्येक क्षण ।

१ शीतला नाम की बीमारी (Small Pox), को कहते हैं यहाँ अविद्या रूपी बीमारी से अभिप्राय है ।

कर दिया आत्मा क़रीबुल-मर्ग[२] ।
क़ैदे-कसरत[३] में हो गया संसर्ग[४] ।।
चेहरा रौशन था साफ शीशा सा ।
हो गया दाग दाग़ यह कैसा ?
मेहरे तलअत[५] पै दाग़ आन पड़े ।
तारे सूरज पर कैसे आन चढ़े ?
एक रस साफ़ रूये-ज़ेबा[६] था ।
दाग़े कसरत का लग गया धब्बा ।।
हो गया पुरुष माल माता[७] का ।
यानी वाहन[८] यह शीतला का हुआ ।।
मरज़ ऐसा बढ़ा यह मुत्अद्दी[९] ।
हिन्द सारे की खबर इसने ली ।।
वह दवा जिससे मर्ज जायेगा ।
गऊ-माता[१०] के थन से आयेगा ।।
पर ज़रूरी है वैक्सीनेशन[११] ।
वरना मरती है यह अभी नेशन[१२] ।।
छोड़ दो तुम ज़री तअस्सुब[१३] को ।
टीका लगवाइयेगा अब सबको ।।

---

२ मृत्यु के समीपतम, ३ नानत्व के बन्धन में, ४ आवेश, सम्बन्ध, प्रवेश, ५ सूर्य जैसे सुन्दर मुख पर, ६ सुन्दर रूप, ७ शीतला देवी जिनकी सवारी गदहा है, ८ सवारी अर्थात् गधा, सुस्त मूढ़, ९ बढ़ जाने व फैल जानेवाला, १० यहाँ उपनिषद से अभिप्राय है, ११ (vaccination) (अद्वैत का) टीका लगाना, १२ (nation) जाति, राष्ट्र, नस्ल क़ौम, १३ तरफदारी, पक्ष, संकुचित ख्याल ।

गाय के थन से अलिफ़[14] का नश्तर ।
ला रही है इलाज, लीजे कर ।।
शहर हर इक में हर गली घर-घर ।
टीका अद्वैत का लगा देना ।।
बच्चे लड़के बड़े हों या छोटे ।
यह सरायत[15] भरी दवा देना ।।
गर न मानें तो पकड़ कर बाज़ू ।
टीका यह तीन[16] जा लगा देना ।।
दर्द भी होगा पीड़ भी होगी ।
डर का नोटिस[17] न तुम ज़रा लेना ।।
"शुद्ध तू है" "निरञ्जनाऽसि[18] त्वम्" ।
लोरी रोते सयय यह गा देना ।।
फिर जो चेचक के ज़ख्म भर आयें ।
शीतला भी ख़ुदा मना देना ।।
ग़ैर[19]-बीनी ओ ग़ैर-दानी[20] को ।
मार कर फूंक इक उड़ा देना ।।
कूक कैलाश से उठा है ओम् ।
ओम् तत् सत् है, ओम् तत् सत् ओम् ।।
प्यारे हिन्दोस्तां ! फलो फूलो ।
पौधे[21] पौधे को ब्रह्म विद्या दो ।।

---

१४ अलिफ़ से अभिप्राय यहाँ वह मासिक-पत्र है, जिसके सम्पादक वास्तव में स्वामी रामजी महाराज थे, और जिस पत्र के अन्त में यह कविता दर्ज है, १५ जल्दी अन्दर घुस जानेवाला वा शीघ्र प्रभाव डालने वाला, १६ तीन जगह (यहाँ तीन शरीरों से मुराद है, कारण, सूक्ष्म, स्थूल), १७ ख्याल, ध्यान, १८ तू कल्याण रूप है, १९ द्वैत-दृष्टि, २० भेद बुद्धि, २१ बूटे-बूटे को, प्रत्येक बूटे को।

यह है वह आबे-गंग[२२] मर्दुमे[२३]-खेज़ ।
बूटे बूटे को कर जो दे ज़र-रेज़[२४] ॥
वन है या बाग़ ख़ूबसूरत है ।
सब को इस आब[२५] की ज़रूरत है ॥
रौशनी यह सदा मुबारक है ।
जान सब की है, यह मुबारक है ॥
सरी[२६] हो गुल, गयाह,[२७] गन्दुम[२८] हो ।
रौशनी बिन तो नाक में दम हो ॥
सिफ़लापन[२९], दासपन, कमीनापन ॥
छोड़ दे हिन्द और चलता वन ।
काशी, मक्का, युरुशलम[३०], पैरिस ॥
रूस, अफ़रीका, अमरीका, फ़ारस ।
बहरो-बर[३१], तूले-बल्दोअर्जे-बल्द[३२] ॥
और मिर्रीख़े-सुर्ख़[३३] माहे-ज़र्द[३४] ।
क़ुतबेतारा[३५], फ़लक[३६] के कुल अंजुम[३७] ॥
काले अजराम[३८] जो न जानें हम ।
यह जगह वह जगह कहीं हर जा[३९] ॥
वह जो था, और है, कभी होगा ।

२२ गङ्गाजल, २३ पुरुषों को उठाने या जगानेवाला, २४ मालदार, हरा-भरा, २५ पानी, २६ सरुवृक्ष का नाम है, २७ घास, २८ गेहूँ, अनाज, २९ कमीनापन, कंजूसी, ३० ईसाइयों का तीर्थ स्थान, ३१ जल थल (समुद्र और पृथ्वी), ३२ समस्त लम्बाई, और समस्त चौड़ाई (Longitude and latitude), ३३ मङ्गल ३४ वसन्त ऋतु का मास, ३५ ध्रुव, ३६ आकाश, ३७ सारे तारे, ३८ आकाश के पदार्थ, ३९ स्थान ।

मुझमें सब कुछ है, सब मुझी में है ।
मैं ही सब कुछ हूँ, ग़ैरे-मन ला शै[४०] ।।
ऐ शिखर सीम - तन[४१] हिमालय की !
ब्रह्म विद्या की तू ही माता थी !
गोद तेरी हरी रहे हर दम ।
गिरजा[४२] पहलू में खेलती हरदम ।।
मानसूनों[४३] को यह बता देना ।
इन्द्र और वरुण को सुझा देना ।।
वर्षा जब देश में करेंगे जा ।
नाज में यह असर खपा देना ।।
चाख भी ले जो नाज मेवों को ।
नशए वहदत[४४] में मस्त फ़ौरन हो ।।
ख़ुद बख़ुद उससे यह कहा देना ।
शक सुबहे एक दम मिटा देना ।।
कूक कैलाश से उठा है ओम् ।
ओम् तत् सत् है, ओम् तत् सत् ओम ।।
ऐ सबा[४५] ! जा गुलों की महफ़िल में ।
शेर मर्दों के दल में बादल में ।।
चौंक उट्ठें जो तेरी आहट[४६] से ।
कान में उनके सरसराहट से ।।

---

४० मेरे बिना सब तुच्छ है अर्थात् मेरे बिना कुछ नहीं, ४१ चाँदी के तन-वाली अर्थात् बर्फ़ से ढकी हुई हिमालय की चोटी, ४२ पार्वती, ब्रह्मविद्या से अभिप्राय है, ४३ मेघकाल की वायु (monsoons), ४४ अद्वैत, ४५ पूर्वा वायु (प्रातः काल की वायु), ४६ आवाज़ ।

चुपके से राज़[47] यह सुना देना ।
शक शुबहे एक दम मिटा देना ।।
कूक कैलाश से उठा है ओम् ।
ओम् तत् सत् है, ओम् तत् सत् ओम् ।।
बिजली ! जाकर जहान पर कौंदो ।
तीराख़ानों[48] को जगमगा तुम दो ।
दमक कर फिर यह तुम दिखा देना ।
शक शुबहे एकदम मिटा देना ।।
कूक कैलाश से उठा है ओम् ।
ओम् तत् सत् है ओम् तत् सत् ओम्
द्वैत के, पक्षपात के, भ्रम के ।
कड़क कर राद[49] ! दो छुड़ा छक्के ।।
गरज कर फिर यह तुम सुना देना ।
शक शुबहे एकदम मिटा देना ।।
कूक कैलाश से उठा है ओम् ।
ओम् तत् सत् है ओम् तत् सत् ओम् ।।
जाओ जुग[50] जुग जियोगी गँगाजी ।
ले अगर घूंट कोई जल का पी ।।
उसके हर रोम में धँसा देना ।
शक शुबहे एकदम मिटा देना ।।
कूक कैलाश से उठा है ओम् ।
ओम् तत् सत् है, ओम् तत् ओम् ।।

---

४७ गुह्य भेद, ४८ अँधेरे कोठों को, ४९ बादल की गरज, ५० युग से अभिप्राय है ।

गाओ वेदो ! सना[५१] मेरी गाओ ।
जाओ जीते रहो, सदा जाओ ।।
अहले-टिटबिट[५२] हो कोई पंडित हो ।
भक्ति तुमरी सदा अखंडित हो ।।
खेंच कर कान यह पढ़ा देना ।
शक शुबहे एकदम मिटा देना ।।
कूक कैलाश से उठा है ओम् ।
ओम् तत् सत् है, ओम तत् सत् ओम ।।
अहले अख़बार ! अपने पेपर्स[५३] पर ।
कूक कैलाश की छपा देना ।।
अहले-तालीम ! मदरसों में तुम ।
बच्चों कच्चों को यह पिला देना ।।
नाज़िरीं[५४] ! हिन्दुओं के जल्सों पर ।
कूक के सब के सब जगा देना ।।
चौक मन्दिर में, रेल में जाकर ।
ऊँचे पंचम की सुर से गा देना ।।
कूक कैलाश से उठा है ओम् ।
ओम् तत् सत् है, ओम् तत् सत् ओम ।।
रिश्ता, नाता, क़रीबी, समधी सब ।
शादी, जलसे पै हों इकट्ठे जब ।।
शादी जोयां[५५] हों, हेच दुनिया में ।
भूल बैठे हों यह कि "हूँ क्या मैं" ।।

---

५१ महिमा, तारीफ़, ५२ वर्तमान-काल का पढ़ा हुआ प्यारा, ५३ अख़बारों में, ५४ दर्शक, ऐ देखने वालो, ५५ आनन्द ढूंढ़ने वाले ।

चोट नक्क़ारे पर लगा देना ।
शक शुबहे एकदम मिटा देना ।।
कूक कैलाश से उठा है ओम् ।
ओम् तत् सत् है, ओम् तत् सत् ओम् ।।
जाने-मन ! वक्ते-नज़ा[५६], वालिद[५७] को ।
पाठ गीता का यह सुना देना ।।
"तत्त्वमसि[५८]" फूंक कान में देना ।
"तो ख़ुदाई[५९]" का दम लगा देना ।।
बैठ पहलू में बाअदब[६०] यह कूक ।
आह में ख़ूब पिसपिसा देना ।।
हल्ल आँसू में करके फिर इसको ।
सीने पर बाप के गिरा देना ।।
कूक कैलाश से उठा है ओम् ।
ओम् तत् सत् है, ओम् तत् सत् ओम् ।।
मौत पर यह सबक़ सुना देना ।
मातमी मुर्दा दिल जिला देना ।।
लाधड़क शंख यह बजा देना ।
शक सुबहे एकदम मिटा देना ।।
कूक कैलाश से उठा है ओम् ।
ओम् तत् सत् है, ओम् तत् सत् ओम् ।।
मरने लड़ने को फ़ौज जाती हो ।
सामने मौत नज़र आती हो ।।

---

५६ मृत्यु-काल, ५७ पिता, ५८ तूही वह ब्रह्म है, ५९ तू ख़ुदा है, ६० इज्जत के साथ, सत्कार-पूर्वक ।

मिस्ल अर्जुन के दिल बढ़ा देना।
मारू बाजे में गीत गा देना॥
कूक कैलाश से उठा है ओम्।
ओम् तत् सत् है, ओम् तत् सत् ओम्॥
घुड़की तुम को जो दे कभी नाफ़ह्म[६१]।
तुमने हरगिज़ भी छोड़ना मत रहम॥
धमकी गाली गलौज और अनबन।
प्यारे! ख़ुद तू है; तू ही है दुश्मन॥
रम्ज़ आँखों से यह बता देना।
हाथ में हाथ फिर मिला देना॥
कूक कैलाश से उठा है ओम्।
ओम तत् सत् है, ओम् तत् सत् ओम्॥
गर अदालत में तुमको ले जायें।
ईसा सुक़रात तुम को ठहरायें॥
तुम तो ख़ुद मस्तीये-मुजस्सिम[६२] हो।
दावा, अर्ज़ी, क़ुसूर, कैसे हो?
चीफ़ जस्टिस का दिल हिला देना।
हाँ! गला फाड़ कर यह गा देना॥
कूक कैलाश से उठा है ओम्।
ओम् तत् सत् है, ओम् तत् सत् ओम्॥
नीज़ मक़तल[६३] में ख़ुश खड़े होकर।
हाज़री[६४] के दिलों में घर कर कर॥

---

६१ नासमझ, कमअक़ल, मूर्ख, ६२ आनन्द स्वरूप, ६३ क़त्ल (फाँसी) की जगह, ६४ उपस्थित लोग।

उँगलियाँ उठ रही हों चारों तरफ।
हर कोई रख रहा हो तुम पर हरफ़[६५] ॥
क़ातिलों का भरम मिटा देना।
"ग़ैर फ़ानी[६६] हूँ मैं" दिखा देना॥
काटा जाने को सिर झुका देना।
नारे[६७] से गूंज इक उठा देना॥
शक सुबह एकदम मिटा देना।
कूक कैलाश से उठा है ओम्॥
ओम् तत् सत् है, ओम् तत् सत् ओम्।

---

६५ नुक़्स, इल्ज़ाम, दोष, ६६ न मरनेवाला, अमर, ६७ गरज।

माया

(७६)

माया और उसकी हक़ीकत

शाम

(यह सारी कविता कलकत्ते नगर के वृत्तान्त की है और उसे माया के नाम से राम दर्शाते हैं)

गंगा की ठंडी छाती से आती है ख़ुश हवा ।
है भींने भीने बाग़ का साँस इसमें मिल रहा ।।
गंगा के रोम रोम में रचने लगा वह बहर[1] ।
आया जुवार[2] ज़ोर का लैहरों पे लेके लहर ।।
देखो तो कैसे शोक़ से आते जहाज़ हैं ।
मारे ख़ुशी के सीटी बजाते जहाज़ हैं ।।
शादी ज़मीं की ऐ लो ! फ़लक[3] से हुई हुई ।
वह सायबां क़नात है जब ही तनी हुई ।।
दुल्हा के सिर पै तारों का सिहरा खिला खिला ।
दुल्हन के बर्क़-दिल[4] ने चिराग़ां[5] खिला दिया ।।

---

१ समुद्र, २ समुद्र में तूफ़ान, ज्वार भाटा अर्थात् समुद्र में लहरों का चढ़ाव उतार, ३ आकाश, ४ दिल में रहने वाली बिजली, इस जगह अभिप्राय पृथ्वी से है, ५ बिजली की रौशनी फैल गयी ।

मुक़ाम (कलकत्ते का ईडन बाग़)

(७७)

है क्या सुहाना[1] बाग़ में मैदाने - दिलकुशा[2] ।
और हाशिया[3] है बैन्चों का सब्ज़ा पे वाह वा ।।
मजमा[4] हजूम लोगों का भर कर लगा है यह ।
मैदान आदमी से लबालब भरा है यह ।।
बैन्चों पै बाज़ बैठे हैं, अक्सर हैं खुश खड़े ।
बाँके जवान बाग़ मे हैं टैहलते पड़े ।।
मैदान पार सड़क पै है बग्गियों की भीड़ ।
घोड़ों की सरकशी[5] है, लगामों की दे नपीड़ ।।
शौक़ीन कलकत्ता के हैं, मौजूद सब यहाँ ।
हर रंग ढंग वज़ा के मिलते हैं अब यहाँ ।।

काम

(अर्थात् कलकत्ते के बाग़ में लोगों का क्या काम है ?)

(७८)

हम सब को देखते हैं, पर देखते कहाँ ? ।
आँखें तनी हुई हैं यह, क्या पीर क्या जवाँ ।।
मर्क़ज़[1] है सब निगाहों का उजला[2] चबूतरा ।
खुश बैंड[3] बाजा गोरों का है जिस में बज रहा ।।
गाते फुला फुला के हैं वह गाले गोरियाँ ।
क्या रौशनी में सुर्ख़ दमकती हैं कुर्तियाँ ! ।।

---

१ दिलको अच्छा लगनेवाला, २ खुले दिल वाला अर्थात् विशाल मैदान, ३ किनारा, ४ गिरोह, भीड़, ५ सिर हिलाना, सिर हिलाकर लगाम तुड़वाना ।
१ केन्द्र, २ रौशन, चमकीला, ३ अँग्रेज़ी बाजे का नाम है ।

ऐ लोगो ! तुम को क्या है ? जो हिलते ज़रा नहीं ।
क्या तुम ने लाल कुरती को देखा कभी नहीं ?,।

परदा

(७९)

इसरार[1] इस में क्या है, करो ग़ौर तो सहीं ।
इस टिकटिकी में क्या है, करो ग़ौर तो सही ।।
गोरों की कुर्तियों को हैं गो तक रहे ज़रूर।
लेकिन नज़र से कुर्तियाँ गोरे तो सब हैं दूर ।।
लैहरा रहा है परदा सा सब की निगाह पर ।
इस परदे से पिरोई है हर एक की नज़र ।।
यह परदा तन रहा है, अजब ठाठ बाठ का ।
जिस में ज़मीं - ज़मां व मकां[2] है समा रहा ।।
परदा बला है, छेद की सीवन[3] कहीं नहीं ।
लेकिन मोटाई पूछो तो असला[4] नहीं नहीं ।।
परदा सितम[5] है, सैहर[6] के नक़शो निगार हैं ।
हर आँख के लिए यां अलैहदा ही कार[7] हैं ।।
सब सामयीन्[8] के सामने परदा है यह पड़ा ।
हर एक की निगाह में नक़शा बना दिया ।।
परदों से राग के है वह परदा अजब पड़ा ।
गंधर्व शहर का है कि मिराज[9] का मज़ा ।।

---

१ भेद, गुह्य भेद, २ देश, काल वस्तु, ३ सिया हुआ, ४ बिलकुल, नितान्त, ५ जुल्म, आश्चर्य, ६ जादू, ७ काम, ८ सुनने वाले, श्रोतागण, ९ चढ़ाई, तरक्की, वलंदी (यहाँ अभिप्राय स्वर्ग लोक से भी हो सकता है)।

जादू है, पियानोटिजम[१०] हैं, परदा सुराब[११] है।
क्या सच है रंग-ढंग यह सब नक़शे[१२]-आब है ॥
रमिये तो यार परदे में देखे तो कैफियत[१३]।
आँखें सिली हैं परदा से क्यों? क्या है माहियत[१४] ॥
दीदों[१५] में और रंगों में क्या है मुनास्बत?।

विवाह

(८०)

वह नौजवां के रूबरू नूरी लिबास[१] में।
दुल्हन खिली है फूल सी फूलों की बास में ॥
शादी के राग रंग में बाजा बदल गया।
ऐ लो! बारात बैठी है, जलसा बदल गया ॥
दुल्हन का रंग हू बहू गोया गुलाब है।
और चश्मे[२]नीममस्त[३] से झड़ता शराब है ॥
क्यों दायें से और बायें से मुड़ जायें न आँखें।
जब रंग ही ऐसा हो, तो जुड़ जायें न आँखें ॥

यूनीवर्स्टी कौन्वोकेशन।

(८१)

ऐनक लगाये लड़के को वह इस ही परदे पर।
हरकारा दौड़ता हुआ लाया है क्या ख़बर ॥

---

१० पियानों बाजे बजाने का नाम है, ११ रेत का मैदान जो धूप में पानी की तरह नज़र आये (मृगतृष्णा का जल), १२ पानी के नक़श, १३ हाल, दशा, १४ असलीयत, १५ चक्षु, नेत्रों।

१ प्रकाश की पोशाक या वस्त्र, २ आँख, ३ आधी मस्त।

लेते ही तार हाथ में लड़का उछल पड़ा ।
"मैं पास हो गया हूँ, लो पास हो गया" ।।
बी० ए० के इम्तहान में बड़ कर रहा हूँ मैं ।
इंगलिश में और हिसाब में अव्वल रहा हूँ मैं" ।।
है चांस्लर[४] से जलसा में इनाम पा रहा ।
थौर फैलो-साहबान्[५] से है इकराम[६] पा रहा ।।
क्यों दायें से और बाये से मुड़ जायें न आँखें ।
जब रंग ही ऐसा हो तो जुड़ जायें न आँखें ।।

बच्चा पैदा हुआ ।

(८२)

वह देखना किसी के लिये इस ही परदे पर ।
पूरी हुई है आरज़ू, पैदा हुआ पिसर[१] ।।
मंगल है, शादियाना[२] है, ख़ुशियाँ मना रहा ।
दरवाज़े पर है भाट खड़ा गीत गा रहा ।।
नन्हा[३] है गोल-मोल, कि इक कमल फूल है ।
नाज़ुक है लाल लाल, अचंभा अमूल[४] है ।।
अब तो बहू की चाँदी है घर भर में बन गयी ।
सास भी जो रूठी थी, लो आज मन गयी ।।
क्यों दायें से और बायें से मुड़ जायें न आँखें ।
जब रंग ही ऐसा हो तो जुड़ जायें न आँखें ।।

---

४ विश्वविद्या का कुलपति (सभापति), ५ यूनीवर्स्टी के सभासद व मददगार, ६ उपाधि इत्यादि ।

१ पुत्र, २ खुशी के बाजे बज रहे हैं, ३ छोटा सा बच्चा, ४ अनंत मोल वाला अर्थात् अमूल्य ।

नेशनल काँग्रेस[1]

(८३)

वह देखना किसी के लिये इसी परदे पर ।
मण्डप है काँग्रेस का, ग़ज़ब धूम कर्रोफ़र[2] ।।
लेकचर वह दे रहा, धुंआधार सिहरकार[3] ।
जो चीर शक्को-शुभे को है जाता जिगर के पार ।।
हक[4]-ओ-दक सुकूत[5] में हैं पड़े हाज़रीन्[6] तमाम ।
हरदीदा शोलावार[7] है ! बिजली है ख़ासो-आम ।।
वह तालियों की गूंज में इक दिल हुये तमाम ।
वह मोतियों से आँख का छलके पड़ा है जाम[8] ।।
"गो आन, आन[9]" ! कहते हैं सब अहले-ज़िंदगी[10] ।
हड्डी से खून से लिखेंगे तारीख़ हिन्द की ।।
क्यों दायें से और बायें से मुड़ जायें न आँखें ।
जब रंग ही ऐसा हो तो जुड़ जायें न आँखें ।।
इस परदे पर है, ठेके में, इक लाख की बचत ।
इस परदे पर है, सेठ को, दो लाख की बचत ।।
इस परदे पर है सिंह जवां[10] खूब लड़ रहा ।
तन्हा है एक फ़ौज से क्या डट के अड़ रहा ।।
इस परदे पर जहाज़ हैं आते ख़ुशी ख़ुशी ।
मक़सद[11] मुराद दिल की हैं लाते ख़ुशी ख़ुशी ।।

---

१ राष्ट्रीय महासभा, २ शान शौकत, ३ जादू की तरह असर करने वाला, ४ हकदक, आश्चर्य, हैरान्, ५ चुपचाप, ६ श्रोतागण, ७ सब की आँखें लाल हैं, ८ प्याला, ९ आगे बढ़ो, आगे बढ़ो, १० जानदार, ११ मन्तव्य,

इस परदे पर तरक़्क़ी है रुतबा बढ़ा बढ़ा।
इक दम है मेरे यार का दर्जा बढ़ा चढ़ा ॥
इस परदे पर हैं सैरो-तमाशे[12] जहान के।
इस परदे पर हैं नक़्शे बहिश्तो-जुनान[13] के ॥
बिछड़े हुए मिले हैं, मुर्दे भी उठ खड़े हैं ॥
क्यों दायें से और बायें से मुड़ जायें न आँखें।
जब रंग हों दिलख्वाह[14] तो जुड़ जायें न आँखें ॥

सल्तनत हक़ीक़ी—अवधूत

(८४)

वाह ! क्या ही प्यारा नक़्शा है, आँखों का फल मिला !
उस सोहने नौजवान् का जीना सफल हुआ ॥
महल उसका, जिस की छत पे हैं हीरे जड़े हुए !
कौसे-क़ज़ह[1]-व अब्र[2] के परदे तने हुए ॥
मसनद[3] बलन्द तख्त है, पर्वत हरा भरा।
और शजरे-देवदार[4] का है चँवर झल रहा।
नग़मे[5]-सुरीले "ओम्" के हैं उससे आ रहे।
नदियाँ परिन्दे[6], बाद[7] हैं, वह सुर मिला रहे ॥
बेहोशो-हिस है गर्चे पड़ा खोल की तरह।
दुनिया है उसके पैर को फुट-बाल[8] की तरह ॥
कैसी यह सल्तनत[9] है, अदू[10] का निशान् नहीं।
जिस जा[11] न राज मेरा हो ऐसा मकान् नहीं ॥

---

१२ सैर और तमाशा, १३ स्वर्ग नरक, १४ दिलपसंद, मनोरंजक।

१ इन्द्र धनुष, २ बादल, ३ बैठने की जगह, ऊँची, ४ देवदार के वृक्ष, ५ आवाज़, शब्द, ६ पक्षी, ७ वायु, ८ पावों से खेलने की गेंद, ९ बादशाहत राज्य, १० दुश्मन, ११ जगह,।

क्यों दायें से और बायें से मुड़ जायें न आँखें ।
जब रंग हो दिलख्वाह तो जुड़ जायें न आंखें ॥

माया, सर्वरूप

(८५)

माया का परदा फैला है क्या रंग रंग में ।
और क्या ही फड़ फड़ाता है हर आबो-संग में[1] ।
इस परदे पर हैं झील[2], जज़ीरे[3] ख़लीजो-बहर[4] ॥
इस परदे पर हैं कोह[5]-ओ-बियाबां[6] दियारो-शहर[7] ॥
सब पीर[8] सब जवान इसी परदे पर तो हैं ।
बाशिन्दे और मकान इसी परदे पर तो हैं ॥
पैग़म्बर और किताब इसी परदे पर तो हैं ।
सब ख़ाको-आसमान इसी परदे पर तो हैं ॥
पील[9] अस्प[10] और ग़ुलाम इसी परदे पर तो हैं ।
शाहंशहों के शाह इसी परदे पर तो हैं ॥
क्या झिलमिलाता परदा है यह अनकबूत[11] का ।
दे है ख़याल (उगला हुआ) काम सूत का ॥

नक़्शो-निगार और परदा एक हैं

(८६)

यह दो नहीं हैं, एक ह, परदा कहो कि नक्श ।
नक़शो-निगार[1] परदा हैं, परदा ही तो है नक्श ॥

---

१ पानी में, पत्थर में, २ सरोवर ३ द्वीप, ४ खाड़ी और समुद्र, ५ पर्वत, ६ जंगल, ७ मुल्क और शहर, ८ वृद्ध, बुड्ढे, ९ हाथी, १० घोड़े, ११ मकड़ी जो अपने मुँह से तन्तु निकाल कर जाला तनती है ।

१ नाना प्रकार के रंग रूप,

यह इस्तआरा[२] था, कि वह माया के रूप हैं।
माया कहो कि यूं कहो यह नाम रूप हैं ।।
"इस्मो-शक्ल[३]" ही माया हैं, यह माया है इस्मो-शक्ल।
हममानी[४] हैं, माया के सब रंग रूप-शक्ल ।।

फ़ल्सफ़ा[१]

(८७)

परदा खड़ा है माया का यह किस मुकाम पर ?
है यह सरोद पर कि हवासे-अवाम[२] पर ?
है भी कहीं कि मबनी[३] है, यह वैह्म-खाम[४] पर।
क्या सच है, ईस्तादा[५] है, यह मेरे राम पर ।।

महले-परदा (दृष्टान्त)

(८८)

है इस तरफ तो शोर सरोदो[१] समाअ[२] का।
और उस तरफ है ज़ोर शुनीदन[३] की चाह का ।।
इन दोनो ताक़तों का वह टकराना देखिये ।
पुर ज़ोर शोर लैहरों का चकराना देखिये ।।
लैहरें मिलीं मिटीं, ऐ लो ! पैदा हुये हुबाब[४]।
यह बुलबुले ही बुर्क़ा[५] हैं, परदा बरुए[६]-आब ।।
मौज़ों ही का मुक़ाबला परदे का है महल[७]।
मौजे है आव, कहते नहीं क्यों महल है जल ?

---

२ अभिप्राय, लक्ष्य, दृष्टान्त, तमसील, ३ नाम रूप, ४ एक समान अर्थ।

१ दर्शन शास्त्र, तत्वज्ञान, २ सब इन्द्रियमय, ३ सहारा लिएहुए, आश्रित, ४ कच्चा वैह्म अर्थात कल्पित भ्रम, ५ सीधा खड़ा हुआ, अर्थात आश्रित।

१ राग रंग २ आवाज, ३ सुनना, ४ बुलबुला वा बुदबुदे, ५ परदा, ६ पानी के सतह पर पर अर्थात पानी की तह पर, ७ अधिष्ठाता, घर, आधार,

हां यह तो रास्त[८] है कि सरोद[९] और सामनी[१०]
दोनों मिले मिटे हैं, वह जल रूपे-राम[११] में ।।
और राम ही में परदा है नक़शो-निगार हैं ।।
यह सब उसी की लैहरों के मौजों[१२] के कार[१३] हैं ।

एहसासे-आम (दृष्टान्त)

(८९)

महसूस[१] करने वाली इधर से आई लैहर ।
महसूस होने वाली उधर से आई लैहर ।।
दोनों के अक़्दे[२]-शादी से पैदा हुये हुबाब[३] ।
यानी नमूद[४] "शै" हुई पानी में झट शिताब ।।
लैहरें भी और बुलबुले सब एक आब[५] हैं ।
इन सब में राम आप ही रमते जनाब हैं ।।
माया तमाम इस की है हर फ़ेल-ओ-[७]कौल में ।
मफ़उल, फ़ेलो-फ़ाइल[८] हैं हर डील-डौल में ।।
आबशारों और फ़व्वारों की फुहारों की बहार ।
चश्मासारों, सब्ज़ाज़ारों[९], गुलइज़ारों[१०] की बहार ।।

---

८ सच, ९ राग, १० सुनने वाले, ११ जल रूपी राम में व राम जो जल रूपी है उस में, १२ लहरें १३ काम ।

१ इंद्रियगोचर पदार्थों को भान करने वाली वृत्ति वा भोक्ता पुरुष, २ विवाह वा मेल, ३ बुलबुला, ४ प्रकट, व्यक्त, ५ वस्तु, रूप, ६ जल, ७ काम और बचन, ८ कर्म और कर्त्ता, बाग़ इत्यादि, १० पुष्प के समान कपोल वाले प्यारे, ।

दैहरो-दरया[11] के झकोले और सबा[12] का खुश खराम[13] ।
मुझ में मुत्सव्वर[14] हैं यह सब "ओम्" में जैसे कलाम[15] ।
पसर[16] कर लेटाहूं जग में सुबह में और शाम में ।
चाँदनी में रौशनी में, कृष्ण में और राम में ।।

राम मुबर्रा[1] ।

(६०)

यह तो सब रास्त[2] हैं, बले[3] अज़ रूये[4]-ज़ात भी ।
देखो तो परदा नक्श वग़ैरह न थे कभी ।।
है मौज[5] ही में रद्दोबदल[6] जिस के बावजूद ।
क़ायम है ज्यूं का त्यूं सदा इक आब[7] का वजूद ।।
अज़ एतबारे ज़ात[8] यह कहना पड़ा है आब ।
पैदा ही कब हुये थे यह अमवाज[9] और हुबाब[10] ।।
अज़ रुये-राम पुछो तो फिर वह निगारों नक्श ।
माया वग़ैरा का कहीं नामों-निशानों-नक्श ।।
हर्कत सकून[11] और तग़य्युर[12] का काम क्या ?
नुतकों[13]-ज़ुवां को दख्ल, सिफ़ातों[14] का नाम क्या ।।
इक़बाल[15] कहाँ, इदबार[16] कहाँ, यां बेशी कमी को बार कहाँ ।
यां पुण्य कहाँ, अरु पार कहां, अरु मुझ में जीतो-हार कहाँ ।।

---

११ समुद्र और नदी, १२ प्रातःकाल की वायु, १३ मटक कर चलना, १४ कल्पित, आरोपित हैं १५ शब्द, वाक्य, १६ फैलकर ।

१ शुद्ध स्वरूप राम, २ सच, ३ किन्तु, ४ वस्तुतः ५ लैहर, ६ बदलना इत्यादि, ७ जल, ८ वस्तु के लिहाज़ से कहना पड़ा, ९ लैहरें, १० बुलबुला ११ स्थिरता १२ तबदीली, अस्थिरता, व विकार, १३ वाणी व वाक् इंद्रय, १४ १४ गुण, १५ विभूति, भाग्य १६ अभाग्य,

इकरार कहां, इन्कार कहां, तकरार कहां, इसरार[१७] कहां।
महसूस-हवास[१८] अहसास कहां, ख़ाक[१९] आब[२०] अरु वादो[२१]-नार कहां॥
सब मर्कज़[२२], मर्कज़, मर्कज़ है, इकतार[२३] कहां परकार[२४] कहां।

नतीजा

(९१)

ग़लतां[१] है मुहीते बेपायां[२], यां बार कहां, और पार कहाँ ?
गंगा है कहां, अरु बाग़ कहां, है सुलह कहां, पैकार[३] कहाँ ?
यां नाम कहाँ, अरु रूप कहाँ, इख़फ़ाय[४] कहां, इज़हार[५] कहाँ ?
नही एक जहां दो चार कहां, अरु मुझ मे सोच बिचार कहां ?
मां बाप कहां, उस्ताद कहां ? गुरु चेले का यां कार कहां ?
एहसान कहां, आज़ार[६] कहां ? यां ख़ादिम[७] और सरदार कहां॥
न ज़मां[८] न ज़मीं[९] का कभी था निशां, इल्लत[१०] मालूल[११] इज़्कार[१२] कहां।
नहीं ज़ेर[१३], ज़बर[१४] पसों[१५] पेश कहां? तक़तीअ[१६] और शेर अशआर[१७] कहां॥
इक नूर[१८] ही नूर हूं शोलाफ़िशां[१९], गुलज़ार[२०] कहां और ख़ार[२१] कहां।

---

१७ हठ, विद, १८ स्पर्श-इंद्रिय, पदार्थ, १९ पृथ्वी, २० जल, २१ वायु और अग्नि, २२ केन्द्र, २३ पंक्तियें, २४ पंक्तियें डालने वाला औजार।

१ पेच खाता हुआ, (गर्क़ या मग्न हुआ), २ बेहद (अनन्त) समुद्र ३ लड़ाई, जंग, ४ पोशीदगी (अव्यक्त), ५ व्यक्त, ६ दुःख, ७ नौकर, ८ काल, ९ देश, १० कारण, ११ कार्य, १२ ज़िक्र, चर्चा, १३ नीचे, १४ ऊँचे, १५ पीछे आगे, १६ टुकड़े करना, कविता का वजत बनाना, १७ कविता, नज़्म, १८ प्रकाश, १९ दमकने वाला, यहाँ दमक मार रहा है, २० बार, २१ काँटा,

लैकचर तक़रीर उपदेश कहां ? तहरीर[२२] कहां, प्रचार कहां ?
तपदान और ज्ञान और ध्यान कहां ? दिल बेबस सीनाफ़िगार[२३] कहां ।।
नहीं शेख़ी शोख़ी आर[२४] कहां ? सिर टोपी या दस्तार[२५] कहां ?
नहीं बोली ताना धमकी यहां, सूफ़ार[२६] कहां और दार कहां[२७] ।।
इक मैं ही मैं ही मैं हूँ, शै[२८] ग़ैर का दारो - मदार कहाँ ।
आलायशे-क़ैदो-नजात[२९] कहाँ ? अहवामे[३०]-रसन[३१] और मार[३२] कहां ।
घर बार कहां, कोहसार[३३] कहाँ, मैदान कहां, और ग़ार[३४] कहां ।।
मह[३५], अञ्जुम[३६], फ़र्श[३७], और अर्श[३८] कहां ? यां ख्वाब[३९] कहां
बेदार[४०] कहां ।

जब ग़ैर[४१] नहीं, डर खौफ़ कहां, उम्मेद से हालते-ज़ार[४२] कहां ?
मैं इक तूफ़ाने - वहदत[४३] हूँ, कहो मुझ में इस्तफ़सार[४४] कहां ।
इक मैं ही, मैं ही, मैं ही हूँ, यां बन्दे[४५] और सरकार[४६] कहां ।।

दुनिया की हक़ीक़त

(६२)

क्या हैं यह ? किस तरह हुए मौजूद ?
इक निगाह पर है सब की हस्ती-ओ'-बूद ।।
हां जगत है, सबूत दीजियेगा ।
इन्द्रियों पर यक़ीन न कीजियेगा ।।

---

२२ लेख, २३ सीना फाड़ने वाला वा ज़खमी दिल (आशिक़ वा प्रेमासक्त), २४ लज्जा, हया, २५ पगड़ी, २६ तीर की नोक, २७ सूली। २८ दूसरी वस्तु भिन्न वस्तु, २९ मुक्ति और बद्ध का लेश, ३० रस्सी की भ्रान्ति, ३१ रस्सी, ३२ साँप, ३३ पर्वत, ३४ कन्दरा, गुफा, ३५ चाँद, ३६ तारे, ३७ पृथिवी, ३८ आकाश, ३९ स्वप्न, ४० जाग्रत, ४१ अन्य ४२ डर, ४३ एकता का तूफान, ४४ प्रश्न करना वा पूछना, ४५ प्रजा, सेवक, ४६ राजा, मालिक।

१ स्थित होना,

(१) बेशक आती नज़र है दुन्या पर ।
है कहाँ, आप ही न देखें गर ।।
माहो - माही[२]- व शाहो - ज़र्रा ताज ।
अपनी हस्ती को हैं तेरे मोहताज ।।
बर्क़[३] मौजूद है सभी शै में ।
गो हवासों के हो न हलक़े[४] में ।।
वक्ते - इज़हार[५], बर्क़ - शोख़ी बाज़ ।
ख़ुद ही मुसबत[६] है, ख़ुद ही मनफ़ी[७] नाज़ ।।
तेरी माया है बर्क़ - वश[८] चञ्चल ।
यारों आगे कहां चलें छल बल ।।
तू इधर देखता है आँख उठा ।
तू उधर बन गया कोहो - सहरा[९] ।।
(२) ख़्वाब में हैं ख़्याल की दो शान् ।
जुज़्वी[१०], कुल्ली[११] "यह एक मैं" "यह जहान्"
"मैं हूँ इक मर्द" शाने जुज़्वी है ।।
"जुमला आलम[१२]," यह शाने-कुल्ली है ।
ख़्वाबे - पुख़्ता[१३]-शुद: है बेदारी ।।
जाग ! सारी तेरी है गुलकारी[१४] ।
तू ही शाहिद[१५] बना है, तू मशहूद[१६] ।।

---

२ चाँद सूर्य (अथवा चाँद से मछली पर्यंत सब जीव जन्तु), ३ बिजली, ४ घेरा, हद ५ दृश्य, ज़ाहिर होने के समय, ६ हाँ, होने, व्यक्त, ७ नहीं, न होना, अव्यक्त, ८ विजली की तरह, ९ पर्वत और जंगल, १० व्यष्टि, ११ समष्टि, १२ संसार, १३ दृढ़ स्वप्न, १४ बाग़, बूटा, १५ गवाह, साक्षी, १६ दृष्ट वा दृष्य,

शान तेरी है आस्माने-कबूद[17] ॥
ख्वाब तेरा ख़याल तेरा है ।
जो ज़मीनो-ज़मां[18] ने घेरा है ॥
जल्वा[19] तेरा यह इम्बसाती[20] है ।
बीज माया ही फैल जाती है ॥
क्या यह दुन्या ख़याल मात्र है ।
क्या यह सच्च मुच ख़यालें-ख़ातिर[21] है ॥
गर तुझे इसमें शक नज़र आवे ।
कुछ भी विन ख़याल के दिखा तो दे ॥
(चित्त वृत्ति के फुरने बग़ैर कोई भी शैं महसूस[22] नहीं हो सकती)
हां यह ख्वाबो-ख़याले-माया है ।
'एक' कसरत[23] में आ समाया है ॥
(३) मरना जीना यह आना जाना सब ।
ठेहरना चलना फिरना गाना सब ॥
सब यह करतूत जान माया की ।
मेहरे-ताबां[24] की एक छाया की ॥
पुर[25] ज़िया आफ़ताबे-रौशन राये ।
गंग लैंहरों पै नाचता है आये ॥
साक्षी सूरज कहीं न हिलता है ।
आब[26] बहेता है, यूं वह फिरता है ॥

---

१७ नीला आकाश, १८ देश काल, १९ दर्शन, २० अज्ञान अथवा माया की विशेष शक्ति, २१ दिल (मन) का ख्याल, २२ भान, प्रतीत, २३ नानत्व, २४ सूर्य, २५ प्रकाश से भरपूर, २६ जल,

छोटी बूंदों पै नूर सूरज का ।
क्या धनुष बन गया है अचरज सा ।।
शीश मंदिर में शमा[२७] जो रक्खा ।
क्या समय हो गया चिराग़ां का ।।
फ़ितनागर[२८] आयीना में चश्मे-निगार।
झूठ है, गो है यार से दो चार ।।
यह अविद्या में जो पड़ा आभास ।
ब्रह्म कहलाया इससे जीव और दास ।।
यूं जो सँसर्ग[२९] से हुआ अध्यास ।
सानी[३०] यकता का ला बिठाया पास ।।
माया आयीना कैसी खुर्सन्द[३१] है ।
मज़हरे-राम[३२] सच्चिदानन्द है ।।
कुछ नहीं काम रात दिन आराम ।
काम करता है फिर भी सब में राम ।।
क्योंजी जब आप ही की माया है ।
दिल पै अन्दोह[३३] क्यों यह छाया है ।।
हेच[३४] दुन्या के वास्ते फिर क्यों ।
भाई भाई से तीरह-ख़ातिर[३५] हों ?
खटका कैसा ? झिजक ख़तर क्या है ?
बीमो[३६] उम्मेद कैसी ? डर क्या है ?
बादशाह का बुरा जो चहता है ।

---

२७ दीपक, २८ झगड़ा डालनें वाला, २९ सम्बन्ध, ३० दूसरा ३१ खुश, अच्छी, ३२ राम को दिखाने वाली, जाहिर होने का स्थान, ३३ दुःख, फ़िकर, ३४ नाचीज़, तुच्छ ३५ ख़राब दिल, द्वेष भरा चित्त, ३६ आशा व निराशा

सख़्त जुरमे-कबीरह[३७] करता है ।
देखियेगा हक़ीक़ी शाहंशाह ।
राज जिस का है काह से ताह माह[३८] ।।
तेरे नसों में रगों में नाड़ों में ।
ऐहले-सौदागरी[३९] है राहों में ।
जिसका ऐहदे-हकूमते-बर्कत[४०] ।
ऐन दे सिर में अक़ल को हर्कत ।।
ऐसा सुल्तान् अज़ीमे-आली[४१] जाह ।
तेरा ही आत्मा है जाये-पनाह[४२] ।।
ऐसे सुलतां से जो हुआ ग़ाफ़िल ।
हाये ख़ुदकुश[४३] है, शाहकुश क़ातिल[४४] ।।
क्यों जी कुछ शर्मो-आर[४५] भी तुमको ।
क्यों यह कंगलों से दाँत निकले हैं ?
रेंगना क्यों ? कमर यह टूटी क्यों !
वाये क़िस्मत तुम्हारी फूटी क्यों ।।
रास्ती के गले छुरी क्यों है ?
हक़[४६] ही जीतेगा, सत्त की है जै ।।
क्यों ग़ुलामी क़बूल की तुम ने ।
दर-बदर ख्वार भीख ली तुमने ।।
थी यह लीला रची अनोखे ढब ।
खेल में भूल क्यों गये मनसब[४७] ?

---

३७ बड़ा भारी पाप, ३८ तृण से चंद्रमा तक, ३९ अभिप्राय खून प्रण इत्यादि ४० राज्याधिकार, प्रभाव, व प्रताप, ४१ महान, भारी पदवी वाला, ४२ सब का आश्रय व आधार, ४३ आत्मघाती, आत्म स्वरूप रूपी बादशाह को मारने वाला, ४५ लज्जा, हया, ४६ सत्य, ४७ पद, दर्जा,

ताजे-नूरी को सिर से फैंक दिया ।
टोकरा रंजो-ग़म का सिर पै लिया ।।
अब जलालो-जमाले-ज़ात[४८] सम्भाल ।
उठो, शव सा हों सव विषय पामाल ।।
नैय्यरे-आज़म[४९] हो, तुम तो नूर अफ़गन[५०] ।
ख़िदमते-मा या में न ढूंढों धन।।
बैह्म का मार[५१] आस्तीत् से खोल ।
मत फिरो मारे मारे डाँवां डोल ।।

(६३)

ज़ाते वारी[१]

लेक माया यह आ गयी क्योंकर ?
रूये-आलम[२] पै छा गयी क्योकर ?
जाते-वाहिद[३] को क्यों शरीक लगी ?
बे बदल हुस्न[४] को यह लीक लगी !
वदर[५] को गहन[६] यह लगा कैसे ?
ऐसा जिल्ले-ज़मीन्[७] पड़ा कैसे ?

---

४८ स्वरूप का तेज और वैभव, ४६ सूर्य, ५० प्रकाश डालने वाले, ५१ साँप ।

१ ईश्वर, असली स्वरूप, २ जगत, दुनिया, ३ एक अद्वतीय, ४ निर्विकार सौन्दर्य, ५ पूर्णिमा, ६ ग्रहण, ७ ज़मीन का साया यानी राहु,

(६४)

जवाब

(१) ऐ ज़मीनदोज़[1] चश्मे-दुन्या बीं[2] !
तू ही ख़ुद है बनी ख़ुसूफ़[3] यहीं ।।
चाँद राहू ने जा न पकड़ा है।
वैह्म तेरे ने तुझको जकड़ा है ।।
ज़ाते-वाहिद[4] सदा है जूं की तूं।
उसमें रद्दो-बदल[5] है या न यूं ।
दायें बायें इधर उधर हर सू[6] ।
आप ही आप एक रस है हू[7] ।।
ईन[8] आन्[9], चूं[10], चुगूं[11], चुनी[12]-ओ चुनां[13]
लौट आते हैं वां से हो हैरान् ।।
बरतर अज़ फ़ह्मो-अक़लो-होशो-गुमां[14] ।
लामकां[15], लाज़मां[16]-निशां-इकमान्[17] ।।
(२) रूये-ख़ुर्शीद[18] पर नक़ाब[19] नहीं ।
दोपैहर को कोई हिजाब[20] नहीं ।।
आब[21] हायल नहीं, सहाब[22] नहीं ।
देखने की किसी को ताब नहीं ।।

---

१ पृथिवी से तद्रूप, २ ऐ संसार को संसार की दृष्टि से देखने वाली चक्षु वा दृष्टि, ३ चन्द्रग्रहण वा ग्रहण की छाया, जगत में आसक्त, ४ अद्वैत स्वरूप, ५ विकार, ६ तरफ़, ७ ईश्वर, ब्रह्म, ८ यह ९ वह, १० क्यों, ११ किस तरह, १२ ऐसा, १३ और वैसा, १४ समझ होश और अक़ल से भी दूर, १५ देश रहित, १६ काल रहित, १७ चिन्ह रहित, निराकार या सम्भावना रहित, १८ सूर्य के मुख पर, १९ परदा, २० परदा, २१ पानी वर्षा २२ बादल, परदा,

मौजज़न[23] हो रही है उर्यानी[24]।
तिस पै परदा है तुर्रह हैरानी ।।
(३) जूं रसन[25] में पदीदे-सूरते-मार[26]।
मुझ में माया-नमूद है तूमार[27] ।।
यह स्वरूपाध्यास[28] है इज़हार।
जान मुझको, रहे न यह पिंदार[29] ।।
और संसर्ग[30] को जो माना था।
तब तलक ही था, जब न जाना था ।।
मारे-माहूम[31] में मोटाई तूल[32]।
तो वही है जो थी रसन में मूल ।।
यह हक़ीक़ी रसन का तूलो-अर्ज़[33]।
मारे-मौहूम में हो आया फ़र्ज़ ।।
इस तरह गर्चे माया मिथ्या है।
उस में संसर्ग सत्त ही का है ।।
दूर रहते हैं मारे-दैहशत[34] के।
नागनी काली से सभी हट के ।।
पर जो आकर क़रीबतर[35] देखा।
बेख़तर[36] हो गये, मिटा खटका ।।
माहीयत[37] पर निगाह गर डालो।
असले-हस्ती को ख़ूब सम्भालो ।।

---

२३ लहरें लहरा रही है, २४ नंगापन २५ रस्सी में, २६ साँप की सूरत नज़र आती है, २७ लम्बी गाथा, भ्रम, २८ अपने स्वरूप का भ्रम, २९ भ्रम, ३० आवेश, प्रवेश, ३१ कल्पित साँप, ३२ लम्बाई, ३३ लम्बाई, चौड़ाई, ३४ डर, भय, ३५ बहुत समीप, ३६ निडर, निर्भय, ३७ असल वस्तु, हक़ीक़त।

कैसी माया ? कहां हुआ संसर्ग ?
कब थी पैदायश - व - कहां है मर्ग[38] ।।
काल, वस्तु का, देश का मुझ में ।
नाम होगा न है हुआ मुझ में ।।
कौन तालिब[39] हुआ था, मुर्शिद[40] कौन ।
किस ने उपदेश करा, पढ़ाया कौन ?
किस को संशय शकूक[41] उठ्ठे थे ?
कब दलायल से हल फिर तै हुये ?
हस्ती - ओ - नेस्ती नहीं दोनों ।
रुस्तगारी[42] - ओ - क़ैद क्योंकर हों ?
क्या ग़ुलामी, कहां की शाही है ?
आली जाही[43] कहाँ ? तबाही है ।।
मैं कहां ? तू कहां ? सग़ीर-ओ-कबीर[44] ?
किस का सय्यादो - दाम[45] दाना असीर[46] ?
किस की वहदत[47] और उसमें कसरत क्या ?
क्या ख़ुदाई वहां ? इबादत[48] क्या ?
किस की तरबीर[49] और मुशब्बर[50] क्या ?
जैहल[51] क्या और इल्म हो कैसा ?
कैसी गंगा यहाँ पै राम कहां ?
जाते - मुतलक़[52] में मेरी नाम कहाँ ?

---

३८ मृत्यु, ३९ जिज्ञासु, ४०, गुरु, ४१ साफ हल हुये, ४२ आजादी, मुक्ति ४३ उच्च पद बा पदवी, ४४ छोटा, बड़ा, ४५ शिकारी जाल, ४६ क़ैद, ४७ एकता ४८ बन्दगी, ४९ हमशकल, दृष्टाँत, ५० जिस पर दृष्टाँत दिया जाय, बराबरी वाला, ५१ अज्ञान ५२ मेरे वास्तव स्वरूप ।

कब खिली चाँदनी ? हैं ख्वाब कहाँ ?
रात कैसी ? हो आफ़ताब कहाँ ?
कब रसन था ? यहाँ पै मार नहीं ।
कोई दुश्मन हुआ न यार नहीं ।।
अक्स इस जा नहीं है ऐन नहीं ।
नुक़्ता पैदा नहीं है ग़ैन नहीं ।।
कब जुदा थे, ? न पाई बीनाई[53] ।
खुद खुदाई है, बल बे रानाई[54] ।
कुछ बयां कीजियेगा हाले-ज़ात[55]।
हाय कहने में आये क्योंकर बात ?
कब कुंवारी के फ़ह्म[56] में आवे ।
लज्ज़ते - वस्ल[57] कौन बतलावे ?
दस्पना[58] पकड़ता है अशया[59] को ।
कैसै पकड़े ऊँगली क़ाबिज़[60] हो ?
अक्ल, बुद्धि, हवास, मन सारे ।
मिस्ले चिमटा हैं, दुन्या अँगारे ।।
आत्मा अक्ल बुद्धि मन सबको ।
काबू रखता है, हाथ चिमटे को ।।
दुन्यवी शै पे अक्ल का बस है ।
आगे मुझ आत्मा के खुद खस[61] है ।।

---

५३ दृष्टि, ५४ बिना चाहरी सज धज, ५५ आत्मा का वर्णन, समझ में आवे, ५७ विषमयानन्द, ५८ चिमटा, ५९ वस्तु, ६० जो ऊँगली चिमटे को खुद पकड़े हुये हो, ६१ तुच्छ।

अक्ल से वह्म चाहो पहेचाना ।
हाथ चिमटे के बीच में लाना ।।
गैर मुम्किन, मुहाल ही तो है ।
दम जो मारे मजाल किसको है ?।।
नुत्क़[६२]! मशहूर है तू कार-आरा[६३] ।
राम तक पहुँचने का है यारा[६४] ?।।
नुत्क़ ने ज़ोर जानतक मारा ।
ग़िर पड़ा आख़िरश थका हारा ।।
आँख ख़ाने[६५] से अपने बाहर आ।
ढूंढ बैठी है बाग बन सेहरा[६६] ।।
छान मारा जहान् को सारा ।
कैसे देखियेग, आँख का तारा ? ।।
ऐ जुवान् ! मोम तुझ से है ख़ारा[६७] ।
कुछ पता दे कहाँ पे है दारा[६८] ? ।।
अपना सब कुछ ज़ुबान ने वारा ।
चढ़ गया उड़ गया बले पारा ।।
ख़ूं रोता क़लम है बेचारा ।
लिखते लिखते ग़रीब मैं मारा ।।
क़लम, नुत्क़ ! ऐ जुबान्, दीदा ! ।
जुस्तजू[६९] में मरो, है निस्तारा[७०] ।।

---

६२ वाणी, बोलने की शक्ति, ६३ काम पूरा करने वाली, ६४ बल, ६५ घर, ६६ जंगल, ६७ पत्थर, ६८ दारा बादशाह से भी अभिप्राय है और अपने घर से वा स्वरूप से भी अभिप्राय है, ६९ ढूंढ़, ७० छुटकारा।

आँख की आँख, जान् की जान् ।
नुत्क़ का नुत्क़, प्राण का है प्राण ।।
क़ौन देखे यहां दिखाये कौन ?
कौन समझे यहां सुनाये कौन ?
लद गया अक़लो - होश बनजारा ।
ओस[७१] सां कर सका न नज़्ज़ारा[७२] ।।
राम मीठा नहीं, नहीं खारा ।
राम ख़ुद प्यार है, नहीं प्यारा ।।
राम हलका नहीं, नहीं भारा ।
राम मिलता नहीं, नहीं न्यारा ।।
खँड टुकड़ा नहीं, नहीं क्यारा ।
ख्याले-तक़सीम[७३] पर चला आरा ।
राम है तेग़े-तेज़ की धारा ।
खेल ले,जान् पर तू आ यारा[७४] ।।
उस को आदिल[७५] रहीम ठहराना ।
उससे दुन्या में बेहतरी चहना ।।
ख्वाहिशों का दिलों में भर लाना ।
उनके बर आने की दुआ गाना ।।
मतलबी यार उसका बन जाना ।
चल परे हट ! नहीं वह अंजाना ।।

---

७१ शबनव, ओस, ७२ किसी वस्तु का देखना, ७३ नाँटने के स्थान पर, भिन्नता के बिचार पर, ७४ ऐ प्यारे, ७५ मुन्सिफ, न्यायकारी ।

राम जारोब-कश[76] नहीं तेरा ।
सिर से गुजरो, बिसाल[77] हो मेरा ।।
ख्वाहिशों को जिगर से धो डालो ।
हविसे-दुनिय[78] को दिल से रो डालो ।।
आरज़ू को जला के खाक करो ।
लज़्ज़तो को मिटा के पाक करों ।।
बह केफिरना भटक भटक बातिल[79] ।
छोड़ कर हूजिये अभी कामिल ।।
तू तो माबूद[80] है ज़माने का ।
देवताओं का देव तू ही था ।।
अहले-इस्लाम[81], हिन्दू ईसाई !
गिर्जा, मन्दिर, मसीत दोहाई !
दे के दोहाई राम कहता है ।
तू ही तो राम, गाड,[82] मौला है ।।
सब मज़ाहिब में सब के मोबद[83] में ।
पूजा तेरी है, नेक में, बद में ।।
ऐ सदा मस्तराज मतबाला !
रुतवा औसाफ़[84] से तेरा बाला[85] ।।
ऐ सदा मस्तराज मतबाला ! ।
अपनी महिमा में मौज का बाला ।।

---

७६ झाड़ देने वाला (भंगी), ७७ मेल, दर्शन, साक्षात्कार ७८ दुनिया के पदार्थों का लालच, ७९ झूठमूट, ८० पैदा करने वाला, ८१ ऐ-मुसलमानो ! ८२ ईश्वर, ८३ मंदिर, ८४ सिफ़तों, गुणों, ८५ परे, ऊपर ।

एकमेवाद्वितीयं तेरी ज़ात ।
वहदु[86]-लाशरीक[87] मेरी ज़ात ।।
पास तेरे फ़ड़क ले ग़ैरियत ।
ग़ैरमुम्किन है वलवे महबियत[88] ।।
एक ही एक, आप ही हूँ आप ।
राम ही राम, किसकी माला जाप ।।

आदमी क्या है ?

(१) दाना ख़शख़श का एक बोया था ।
बाबा आदम[1] ने इब्तदा[2] में ला ।।
एक दाना में ज़ोर यह देखा ।
बढ़ गया इस क़दर, नहीं लेखा ।।
इस क़दर बढ़ गया, फला फैला ।
जमा करने को न मिला थैला ।।
कुठले कुठली भरे हुए भर पूर ।
बनिये, सौदागरों के कोठे पूर ।।
एक दाना हक़ीर[3] छोटा सा ।
अपनी ताक़त में क्या बला निकला ।।

---

८६ सिर्फ एक ही है, दो नहीं, एक के सिवाय और नहीं, ८७ एक, बिना दूसरे साथी के, ८८ बल्कि लीन वा अभेद होगा ।

१ हजरत आदम जिसको ईसाई और मुसलमान अपना पहिला पैगम्बर सृष्टि रचने वाला माला मानते हैं, २ आरम्भ में, ३ तुच्छ ।

आज बोने को दाना लाते हैं ।
उस की ताक़त भी आज़माते हैं ।।
यह भी ख़शख़ाश ही का दाना है ।
यह भी ताक़त में क्या यगाना[४] है ।।
हूबहू है वुही तो इस में भी ।
शक्ति आदम के बीज में जो थी ।।
सच बतायें, है यह वही दाना ।
न यह फैला हुआ न दोगाना[५] ।।
ख़ूब देखो बिचार करके आप ।
माहीयत[६] बीज को क़लील[७] सा नाप ।।
ग़ौर से देखिये हक़ीक़त को ।
नज़र आता है बीज क्या तुम को ।।
असल दाना नज़र न आता है ।
न वह घटता है, बढ़ न जाता है ।।
मेरे प्यारे ! तू ज़ाते-वाहिद[८] है ।
तेरी कुदरत अर्गचि बेअद[९] है ।।
(२) जान नन्हीं[१०] को जब कि सायन्सदां[११] ।
इम्तिहान् को है काटता यक्सान् ।।
जिस्म गो होगया हो दो टुकड़े ।
लैक मरते नहीं वह यूं कीड़े ।।

---

४ अकेला, अद्वितीय, ५ दूसरे क़िस्म का, ६ असली, ७ थोड़ा सा, ८ अद्वैतस्वरूप, ९ अगणित, बिना गिनती के, १० छोटी सी (कीड़ा जो कि दो बराबर हिस्सों में काटे जाने से मरता नहीं बल्कि एक के बजाय दो कीड़े हो जाते हैं) ११ सायंस या पदार्थ विद्या का जानने वाला ।

पेशतर काटने के एक ही था।
जब दिया काट दो हुए पैदा ।।
दोनों वैसा ही ज़ोर रखते हैं।
जैसे वह कीड़ा जिससे काटे हैं ।।
दो को काटें तो चार बनते हैं।
चार से आठ बन निकलते हैं ।।
क्या दिखाती है, खोल कर यह बात।
काटने में नहीं है आती ज़ात[१२] ।।
गो मनु का शरीर छूट गया।
पर करोड़ों हनूद हैं पैदा ।।
हर ऋषि की नसल[१३] में है वह ही।
शक्ति आदि मनु में जो तब थी ।।
हां अगर कुछ कसर है ज़ाहिर में।
दुर्रे यक्ता[१४] पड़ा है कीचड़ में ।।
झट निकालो यह हीरा साफ़ करो।
ज़िद न कीजियेगा, बल मुआफ़ करो ।।
एक शीशे में एक ही रू[१५] था।
(३) शीशा टूटा, अदद[१६] बड़ा रू का ।।
मुख़तलिफ हो गये बहुत अबदां[१७]।
इन में ज़ाहिर है एक ही इन्सां ।।
ज़ैद हो बक्र हो उमर ही हो।
मज़हरे[१८]-आदमी है, कोई हो ।।

---

१२ सत्य वस्तु, १३ औलाद, कुल १४ अद्वितीय मोती, १५ चेहरा, मुख १६ गिनती, नम्बर, १७ देह, शरीर, १८ मनुष्य के ज़ाहिर होने का स्थान, जतानेवाला,

गो है नकरे[19] का मारफ़ों[20] में ज़हूर ।
नाम रूपों में है, यही मामूर[21] ॥
पर यह नकरा बज़ाते-ख़ुद क्या है ?
इस में हिस्सों का दख़ल बेजा[22] है ॥
इस्म फ़रज़ी, शकल बदलती है ।
पर जो तू है, सो एक रस ही है ॥
तू ही ग्रादम बना था, तू हव्वा[23] ।
तू ही है लाट साहब, तू हौवा ॥
तू ही है राम, तू ही था रावण ।
तू ही था वह गड़रिया वृन्दावन[24] ॥
झूठ तुम को सनम[25]! न ज़ेबा[26] है ।
तू ही मौला है, छोड़ दे है-है ॥
सीमवर[27] का वह चाँद सा मुखड़ा ।
तेरा मज़हर है नूर का टुकड़ा ॥
दिल जिगर सब का हाथ में है तेरे ।
नूरे-मौफ़ूर[28] साथ में है तेरे ॥
माहो-खुर्शीद[29], बर्को-ग्रंजमो-नार ।
जान करते हैं राम पर ही निसार[30] ॥

१९ साधारण शब्द जो बोलने व लिखने में ग्राये, २० गुणवाचक ग्रथवा नामवाचक शब्द, २१ भरपूर, २२ ग्रनुचित, २३ ग्रादम हव्वा मुसलमानों के दो पैगम्बर है जिनसे उत्पत्ति मानते हैं, २४ कृष्ण से ग्रभिप्राय है, २५ ऐ प्यारे २६ उचित, ठीक, २७ चाँदी वाला, २८ बहुत ज्यादा किया हुग्रा प्रकाश ग्रर्थात प्रकाश स्वरूप, २९ चाँद सूर्य, बिजली तारे ग्रौर ग्रग्नि, ३० न्यौछावर, ग्रर्पण ।

नोट—नं० १, २, ३ से ग्रभिप्राय तीन प्रकार (बीज, कीड़ा, शीशा) की युक्तियों से है जिनसे स्वामीजी ने सिद्धांत (ग्रात्मा सदा निर्विकार, ग्रपरिवर्तनशील है, परिवर्तन, विकार केवल वाह्य नाम रूपों में है) को दर्शाया है—

वर्णानुक्रमणिका

(अ)

अपने मज़े की ख़ातिर गुल छोड़ ही दिये जब ६
अजब घूमते घूमते राम को १४५

(आ)

आ देख ले बहार कि कैसी बहार है ४५
आप में यार देखकर आइना पुर सफ़ा कि यूं ७१

(इ)

इश्क़ का तूफाँ बपा है हाजते मयखाना नेस्त ३७
इस क़दर महवे तजल्ली हो गया ९४
इसरार इसमें क्या है करो ग़ौर तो सही । १५६

(उ)

उड़ा रहा हूँ मैं रंग भर कर तरह तरह की यह सारी दुनियां ६

(ऐ)

ऐ शहनशाहे जूलियस सीज़र १२०
ऐनक लगाये लड़के को वह इसही परदे पर १६०

(क)

क्या पेशवाई बाजा है अनहद सदा है आज ४६
कहाँ जाऊँ किसे छोड़ूं किसे लेलूं करूं क्या मैं ६५
कैसे रंग लागे खूब भाग जागे हरी गई सब भूख और नंग मेरी ८१
कहूँ क्या रंग उस गुल का अहाहाहा, अहाहाहा ९१
कोई हाल मस्त कोई माल मस्त कोई तूती मैना सूए में ९२
क़ैसरे हिन्द बादशाह दावर १२३
क्या सिकन्दर ने भी कमाल किया ११७

(च)

क्या ही मीठी ज़बान से बोला ११८
कदम बोसी को शाह झुका ही था १३८
क्या है यह ? किस तरह मौजूद १६९

(ख)

खाली बिल्कुल है बांस की यह नै ११२

(ग)

गुल को शमीम-श्राब गोहर और ज़र को मैं ४०
गंजे निहां के क़ुफ्ल पर सिर ही तो मोहरे शाह हैं
गर कमिश्नर हो लाट साहब हो ९७
गाड मालिक मकान का आया ११४
गंगा की ठंडी छाती से आती है खुश हवा १५७
ग़लतां है मुहीत बेपायां यहाँ वार कहां ओ पार कहां १६८

(च)

चार तरफ़ से अब्र की वाह उठी थी क्या घटा ५२
चलना सबा का ठूम ठुमक ५२

(ज)

जब उमड़ा दरिया उल्फ़त का हर चार तरफ़ आबादी है ३१
जिधर देखता हूँ ख़ुदा ही ख़ुदा है ८२
ज़ेरे नादिर हुआ मोहम्मद शाह ११७
जनक राजा की हुक्मरानी में १३९

(ठ)

ठण्डक भरी है दिल में आनन्द बह रहा है ३६

(त)

तमाम दुनिया है खेल मेरा मैं खेल सब को खिला रहा हूँ १

(द)

दरिया से हुबाब की है यह सदा ३५
देखा न शब जो यार को नूरेज़िया से कार क्या ६३
दान होता है तीन क़िस्मों का ११०

(छ)

दुलहन को जां से बढ़कर भाती है आरसी १४६

(न)

नजर आया है हरसू मह जमाल अपना मुबारक हो १४

नाचूं मैं नटराज रे नाचूं मैं महाराज ४८

(प)

पीता हूँ नूर हरदम जामे सरूर पै-हम ६

पा लिया जो था कि पाना काम क्या बाक़ी रहा ८३

पिदरे मजनूं ने पिदरे लैला से १०४

पाप क्या है गुनाह कितने हैं १०८

परदा खड़ा है माया का यह किस मुक़ाम पर १६५

(फ)

फेंके फ़लक को तारे सब बख्श दूंगा मैं ५

(ब)

बादशाह दुनिया के हैं मोहरे मेरी शतरंज के ३

बिठाकर आप पहलू में हमें आंखें दिखाता है १२

बदले हैं कोई आन में अब रंगे ज़माना ४०

बिछुड़ती दुलहिन वतन से है जब खड़े हैं रोम और गला रुके हैं ६५

बन के गेसू रूखे हस्ती में निखर जाता हूँ ७५

बेहोश हैं तो हम हैं हुशियार हैं तो हम हैं ८७

बने ध्यान में जिसके ध्यानी हैं मजनूं ८९

बल बे आज़ादी खुशी की रूह उम्मीदों की जां ९६

बादशाह इक कहीं को जाता था १३५

(भ)

भला हुआ हरि बीसरो सिरसे टली बलाय ८०

(म)

मुझ बहरे खुशी की लहरों पर दुनिया की किश्ती रहती है १५

मैं पड़ा था पहलू में राम के २०
मैं सैर करने निकला ओढ़े अवर की चादर ५९
मरज़ी चेतन की जव झक मारन की होय ८१
मुझी से हुई इब्तिदाये दो आलम ८६
मुझे बेख़ुदी यह तूने भली चाशनी चखाई ९३
माया का परदा फैला है क्या रंग रंग में १६४
महसूस करने वालो इधर से आई लहर १६६

(य)

यह सैर क्या है अजब अनोखा कि राम मुझ में मैं राम में हूँ ७
यह डर से मेहर आ चमका अहाहाहा ११
यह दो नहीं है एक है, परदा कहो कि नक़्श १६४
यह तो सव रास्त है बले अज़ रूये ज़ात भी १६७

(र)

रे कृष्ण कैसी होली तैंने मचाई ७९
राम भी एक वात जड़ता है १४२

(ल)

लैक माया है आ गयी क्योंकर १७४
वाह वा ऐ तप ओ रेज़िश वाहवा ७४

(व)

वाह रे नैपोलियन निडर शहे मर्द ११९
वह नौजवाँ के रूवरू नूरी लिवास में १६०
वह देखना किसी के लिये (वच्चा पैदा हुआ) १६१
वह देखना किसी के लिये (नेशनल कांग्रेस) १६२
वह क्या ही प्यारा नक़्शा है आंखों का फल मिला १६३

(श)

शहंशाहेजहां है सायल हुआ है तू २
शुद्ध सच्चिदानन्द ब्रह्म हूँ अजर अमर अज अविनाशी ७८
शीश मन्दिर में इक दफ़ा बुलडाग ११३

(स)

सब शाहों का शाह मैं मेरा शाह न कोय ८०
सच्चे दिल से विचार कर देखो १०६
सग ने हड्डी कहीं से इक पाई १२५

(ह)

हुबाबे जिस्म लाखों मर मिटे पैदा हुए १८
हर हर ओ३म् हर हर ओ३म् ४२
हिप हिप हुर्रे हिप हिप हुर्रे ४३
हस्ती ओ इल्म हूँ, मस्ती हूँ, नहीं नाम मेरा ७३
हमें इक पागलपन दरकार ८१
हाय चेचक ने वाय चेचक ने १४७
है क्या सुहाना बाग़ में मैदाने दिलकुशा १५८
हम सब को देखते हैं पर देखते कहां १५८
है इस तरफ़ तो शोर सरोदो समाअ़का १६५

मुद्रक : लखनऊ पब्लिशिंग हाउस लखनऊ